श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ परिकरमा ❖

श्री किताब इलाही-दुलहिन[1]
अर्स अजीम की
इस्क का प्रकरण

अब कहूं रे इस्क की बात, इस्क सब्दातीत साख्यात ।
जो कदी आवे मिने सब्द, तो चौदे तबक करे रद ।।१।।
ब्रह्म इस्क एक संग, सो तो बसत वतन अभंग[2] ।
ब्रह्मसृष्टी ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनंद अतिरंग ।।२।।
एते दिन गए कई बक, सो तो अपनी बुध माफक ।
अब कथनी कथूं इस्क, जाथें छूट जाए सब सक ।।३।।
वोए वोए[3] इस्क न था एते दिन, कैयों ढूंढ्या गुन निरगुन ।
धिक धिक पड़ो सो तन, जो तन इस्क बिन ।।४।।
इस्क नाहीं मिने सृष्ट सुपन, जो ढूंढ्या चौदे भवन ।
इस्क धनिएँ बताया, इस्क बिना पिउ न पाया ।।५।।
इस्क है तित सदा अखंड, नाहीं दुनियां बीच ब्रह्मांड ।
और इस्क का नहीं निमूना, दूजा उपजे न होवे जूना[4] ।।६।।
इस्क है हमारी निसानी, बिना इस्क दुलहा मैं रानी[5] ।
इस्क बिना मैं भई वीरानी[6], बिना इस्क न सकी पेहेचानी ।।७।।

१. आनंद अंग स्यामाजी । २. अखंड । ३. अफसोस । ४. पुराना । ५. रद । ६. उजड़ी हुई ।

वृथा गए एते दिन, जो गए इस्क बिन ।
मैं हुती पिया के चरन, मैं रेहे ना सकी सरन ।।८।।

क्यों रह्या जीव बिना जीवन, क्यों न आया हो मरन ।
अंग क्यों न लागी अगिन, याद आया न मूल वतन ।।९।।

इस्क जाने सृष्ट ब्रह्म, जाके नजीक न काहूं भरम ।
जब इस्क रह्या भराए, तब धाम हिरदे चढ़ आए ॥१०॥

इस्क तो कह्या सब्दातीत, जो पिउजी की इस्क सों प्रीत ।
देखी इस्क की ऐसी रीत, बिना इस्क नाहीं प्रतीत[1] ॥११॥

इस्क नेहेचे मिलावे पिउ, बिना इस्क न रहे याको जिउ ।
ब्रह्मसृष्टी की एही पेहेचान, आतम इस्कै की गलतान ॥१२॥

इस्क याही धनिएँ बताया, इस्क याही सृष्टें गाया ।
इस्क याही में समाया, इस्क याही सृष्टें चित ल्याया ॥१३॥

इस्क पिया को बतावे विलास, इस्क ले चले पिउ के पास ।
इस्क मिने दरसन, इस्क होए न बिना सोहागिन ॥१४॥

इस्क ब्रह्मसृष्टी जाने, ब्रह्मसृष्ट एही बात माने ।
खास रूहों का एही खान, इन अरवाहों का एही पान ॥१५॥

पिया इस्क रस, ब्रह्मसृष्ट को अरस परस ।
काहूं और न इस्क खोज, औरों जाए न उठाया बोझ ॥१६॥

बात इस्क की है अति घन, पर पावे सोई सोहागिन ।
ब्रह्मसृष्ट बिना न पावे, सनमंध बिना इस्क न आवे ॥१७॥

धनीजी को इस्क भावे, बिना इस्क न कछू सोहावे ।
यों न कहियो कोई जन, धनी पाया इस्क बिन ॥१८॥

इस्क बसे पिया के अंग, इस्क रहे पिउ के संग ।
प्रेम बसत पिया के चित, इस्क अखंड हमेसा नित ॥१९॥

१. विश्वास ।

इस्क बतावे पार के पार, इस्क नेहेचल घर दातार ।
इस्क होए न नया पुराना, नई ठौर न आवत आना[1] ॥२०॥

इस्क साहेब सों नहीं अंतर, जो अरस-परस भीतर ।
ए सुगम है सोहागिन, जाको अंकूर याही वतन ॥२१॥

ए औरों नाहीं दृष्ट, औरों छूटे न मोह अहं भ्रष्ट[2] ।
याको जाने ब्रह्मसृष्ट, जाको एही है इष्ट ॥२२॥

इस्क की बात बड़ी रोसन, जासों सुख लेसी चौदे भवन ।
सो भी सुख नेहेचल, इस्क दृष्टें न रहे जरा मैल ॥२३॥

इस्क राखे नहीं संसार, इस्क अखंड घर दातार ।
इस्क खोल देवे सब द्वार, पार के पार जो पार ॥२४॥

इस्क घाए करे टूक टूक, अंग होए जाए सब भूक ।
लोहू मांस गया सब सूक, चित चल न सके कहूं चूक ॥२५॥

इस्क आगूं न आवे माया, इस्कें पिंड ब्रह्मांड उड़ाया ।
इस्कें अर्स वतन बताया, इस्कें सुख पेड़ का पाया ॥२६॥

कोई नहीं इस्क की जोड़, ना कोई बांधे इस्क सों होड़[3] ।
इस्क सुध कोई न जाने, दुनी ख्वाब की कहा बखाने ॥२७॥

इस्क आवे धनी का चाह्या, इस्क पिया जी ने सिखाया ।
पिया इस्क सरूप बताया, इस्कें पिंड ही को पलटाया ॥२८॥

इस्क सोभा बड़ी है अत, इस्क दृष्टें न पाइए असत ।
जो कदी पेड़ होवे असत, इस्क ताको भी करे सत ॥२९॥

इस्क की सोभा कहूं मैं केती, ए भी याही जुबां कहे एती ।
याको जाने सृष्ट ब्रह्म, जाको इस्कै करम धरम ॥३०॥

इस्क है याको आहार, और इस्कै याको वेहेवार ।
इस्क है याकी दृष्ट, ए इस्कै की है सृष्ट ॥३१॥

१. आता है । २. पतित, दूषित (अहंकार) । ३. सरत ।

ए तो प्रेमैं के हैं पात्र, याके प्रेमैं है दिन रात्र ।
याके प्रेमैं के अंकूर, याके प्रेम अंग निज नूर ॥३२॥

याके प्रेमैं के भूखन, याके प्रेमैं के हैं तन ।
याके प्रेमैं के वस्तर, ए बसत प्रेम के घर ॥३३॥

याके प्रेम श्रवन मुख बान, याको प्रेम सेवा प्रेम गान ।
याको ग्यान भी प्रेम को मूल, याको चलन न होए प्रेम भूल ॥३४॥

याको प्रेमैं सेहेज सुभाव, ए प्रेमैं देखे दाव ।
बिना प्रेम न कछुए पाइए, याके सब अंग प्रेम सोहाइए ॥३५॥

याकी गत भांत सब प्रेम, याके प्रेमैं कुसलखेम ।
याके प्रेम इंद्री अंग गुन, बुध प्रकृती नहीं प्रेम बिन ॥३६॥

याको प्रेमैं को विस्तार, याको प्रेमैं को आचार ।
याके प्रेमैं के तेज जोत, याके प्रेमैं अंग उद्दोत ॥३७॥

याको प्रेमैं है रस रंग, याको प्रेम सबों में अभंग ।
याको प्रेम सनेह सुख साज, याको प्रेम खेलन संग राज ॥३८॥

याके प्रेम सेज्या सिनगार, वाको वार न पाइए पार ।
प्रेम अरस परस स्यामा स्याम, सैयां वतन धनी धाम ॥३९॥

प्रेम पिया जी के आउध, प्रेम स्यामा जी के अंग सुध ।
ब्रह्मसृष्टी की एही विध, ए दूजे काहू ना दिध ॥४०॥

प्रेम सेन्या है अति बड़ी, जब मूल आउध ले चढ़ी ।
सो रहे न काहू की पकड़ी, यासों सके न कोई लड़ी ॥४१॥

प्रेम आप पर कोई ना लेखे, बिना धनी काहूं न देखे ।
प्रेम राखे धनी को संग, अपनो भी न देखे अंग ॥४२॥

और सबन सों चित भंग, एक पिया जी सों रस रंग ।
प्रेम पिया जी के अंग भावे, पिया बिना आपको भी उड़ावे ॥४३॥

जो कोई पिउ के अंग प्यारा, ताको निमख न करे प्रेम न्यारा ।
प्रेम पिया को भावे सो करे, पिया के दिल की दिल धरे ॥४४॥

प्रेम आतम दृष्ट न छोड़े, प्रेम बाहेर दृष्ट न जोड़े ।
प्रेम पिया के चितसों चित न मोड़े , प्रेम और सबन सों तोड़े ॥४५॥

पिया के दिल की दिल लेवे, रैन दिन पिया दिल सेवे ।
पिया के दिल बिना सब जेहेर, औरों सों होए गयो सब वैर ॥४६॥

पिया के दिल की सब जाने, पिया जी को दिल पेहेचाने ।
अंग पिउजी के दिल आने, पिउ बिना आग जैसी कर माने ॥४७॥

प्रेम अंदर ऐसी भई, नींद माहें की उड़ कहूं गई ।
गुन अंग इंद्री पख, पिया प्रेमें हुए सब लख ॥४८॥

सब देखे पिया दिल सामी, दिल देखे अंतरजामी ।
पिउ के दिल की पेहेले आवे, पिया मुख थें केहेने न पावें ॥४९॥

आतम एक हुई निसंक, ना रही जुदागी रंचक ।
प्रेम दिल भर हुई दिल, पिया प्रेमे रहे हिल मिल ॥५०॥

प्रेम आप न देखे कित, दृष्ट पियाई देखे जित ।
निज नजर प्रेम खोलत, जाग धाम देखावे सर्वत्र ॥५१॥

पिया प्रेमैं सों पेहेचान, प्रेम धाम के देवे निसान ।
प्रेम ऐसी भांत सुधारे, ठौर बैठे पार उतारे ॥५२॥

पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक ।
जब आतम प्रेमसों लागी, दृष्ट अंतर तबहीं जागी ॥५३॥

जब आया प्रेम सोहागी, तब मोह जल लेहेरां भागी ।
जब उठे प्रेम के तरंग, ले करी स्याम के संग ॥५४॥

पेहेचान हुती न एते दिन, प्रेम नाहीं पिया सों भिंन ।
पिया प्रेम पेहेचान जो एक, भेली होसी सबों में विवेक ॥५५॥

जब चढ़े प्रेम के रस, तब हुए धाम धनी बस ।
जब उपजे प्रेम के तरंग, तब हुआ धाम धनी सों संग ॥५६॥

प्रेम नजरों जो कछू आया, ताको इतहीं अखंड पोहोंचाया ।
प्रेम है बड़ो विस्तार, भवजल हुतो जो खार ॥५७॥

सो मेट किया सुधा रस, सुख अखंड धनी को परस ।
प्रेमें गम अगम की करी, सो सुध वैराट में विस्तरी ॥५८॥

प्रेमें करी अलख की लख, त्रैलोकी की खोली चख[१] ।
तब छूट्या सबों से अभख[२], सब हुए स्याम सनमुख ॥५९॥

जब प्रेम सबों अंग पिआ, अपना अनुभव कर लिया ।
तब वार फेर जीव दिया, अब न्यारे न जीवन जिया ॥६०॥

मूल अंग आया इस्क, दूजा देखे न बिना हक ।
जब छूटे प्रेम के पूर, प्रगट्या निज वतनी सूर ॥६१॥

जब प्रेम हुआ झकझोल[३], तब अंतर पट दिए खोल ।
जब चढ़े प्रेम के पुन्ज, निज नजरों आया निकुंज ॥६२॥

जब प्रेम हुआ प्रघल[४], अंग आया धाम का बल ।
तुम यों जिन जानो कोए, बिन सोहागिन प्रेम न होए ॥६३॥

प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारै के पार जो पार ।
प्रेम धाम धनी को विचार, प्रेम सब अंगों सिरदार ॥६४॥

इस्कै में पोहोंचाया, इस्कें धाम में ले बैठाया ।
इस्कें अंतर आंखें खुलाई, धनी साथ मिलावा देखाई ॥६५॥

कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान ।
ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए ॥६६॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥६६॥

१. आंख । २. न खाने योग्य । ३. झंझोरना । ४. पूरे बहाव में ।

श्री धाम को बरनन मंगला चरन-राग श्रीधनाश्री

ब्रह्मसृष्टी लीजियो, हांरे सैयां ए है अपना जीवन ।
सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्मसृष्टी लीजियो ।।टेक ।।१।।

सास्त्र सब्द मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सब्दातीत ।
ताको भी कलस हुओ अखंड को, तापर धजा[१] धरूं तिनथें रहित ।।२।।

मगज वेद कतेब के, बंधे हुते जो वचन ।
आदि करके अबलों, सखी कबहूं न खोले किन ।।३।।

सुपन बुध बैकुंठ लो, या निरंजन निराकार ।
सो क्यों सुन्य को उलंघ के, सखी मेरी क्यों कर लेवे पार ।।४।।

सुपन बुध अटकल सों, वेद कतेब खोजे जिन ।
मगज न पाया माहें का, बांधे माएने बारे तिन ।।५।।

साधू बोले इन जुबां, गावें सब्दातीत बेहद ।
पर कहा करे बुध मोह की, आगे ना चले सब्द ।।६।।

पांच तत्व मोह अहंकार, चौदे लोक त्रैगुन ।
ए सुन्य द्वैत जो ले खड़ी, निराकार निरंजन ।।७।।

प्रकृती महाप्रले होवहीं, सब तत्व गुन निरगुन ।
द्वैत उड़े कछू ना रहे, निराकार निरंजन सुंन ।।८।।

बानी जो अद्वैत की, सो कहावे सब्दातीत ।
सो जाग्रत बुध अद्वैत बिना, क्यों सुध पावे द्वैत ।।९।।

पैगंमर या तीर्थंकर, कई हुए अवतार ।
किन ब्रोध[२] न मेट्यो विस्व को, किए नहीं निरविकार ॥१०॥

एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन ।
सो बुध जी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन ॥११॥

१. ध्वजा, पताका । २. मन मुटाव ।

अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल ।
मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल ॥१२॥

सो मगज माएने हुकमें, खोले हम सैयन ।
सो कलाम जो हक के, सुख होसी उमत सबन ॥१३॥

रोसन किल्ली दई हमको, यों कर किया हुकम ।
खोल दरवाजे पार के, इत बुलाए लीजो सृष्टब्रह्म ॥१४॥

ब्रह्मसृष्ट जाहेर करूं, करसी लीला रोसन ।
अखंड धनी इत आए के, किया जाहेर मूल वतन ॥१५॥

तीन ब्रह्मांड जो अब रचे, ब्रह्मसृष्ट कारन ।
आप आए तिन वास्ते, सखी पूरे मनोरथ तिन ॥१६॥

अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक ।
सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावें दीदार सब हक ॥१७॥

ख्वाब की अकल छोड़ के, कहूं अर्स के कलाम ।
हक बका जाहेर करूं, अखंड सुख जे ठाम ॥१८॥

दुनी द्वैत जुबां छोड़ के, कहूं जुबां अकल और ।
कलाम कहूं अर्स अजीम के, महामत बैठे इन ठौर ॥१९॥

ला मकान सुन्य निरगुन, छोड़ फना निरंजन ।
छर अछर को छोड़ के, ए ताको मंगला चरन ॥२०॥

मंगलाचरण तमाम ।।प्रकरण।।२।।चौपाई।।८६।।

और ढाल चली

अब आओ रे इस्क भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम ।
करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम ।।१।।

अब बानी अद्वैत मैं गाऊं, निज सरूप की नींद उड़ाऊं ।
सब सैयों को भेली जगाऊं, पीछे अछर को भी उठाऊं ।।२।।

जब प्रले प्रकृती होई, ना रहे अद्वैत बिना कोई ।
एक अद्वैत मंडल इत, धनी अंगना के अंग नित ।।३।।

अब याही रट लगाऊं, ए प्रेम सबों को पिलाऊं ।
अब ऐसी छाक[१] छकाऊं[२], अंग असलू इस्क बढ़ाऊं ।।४।।

धनी धाम देखन की खांत, सो तो चुभ रही मेरे चित ।
किन बिध बन मोहोल मंदिर, देखों धनी जी की लीला अंदर ।।५।।

विलास सरूप किन भांत, बिन देखे क्यों उपजे स्वांत ।
जल जिमी पसु पंखी थिर चर, सब ठौर और अछर ।।६।।

सब सोभा देखों निज नजर, अपना वतन निज घर ।
धनी केहे केहे चित चढ़ाई, पर नैनों अजूं न देखाई ।।७।।

तुम दई जो पिया मोहे निध, सो तो संगियों को कही सब विध ।
और हिरदे जो मोहे चढ़ाई, सो भी देऊं इनों को दृढ़ाई ।।८।।

अब सुनियो साथ सुनाऊं, पीछे निज नैनों देख देखाऊं ।
जोत जवेर चबूतरे दोए, ताकी उपमा मुख न होए ।।९।।

द्वार आगे चबूतरे तीन, दोए दोए तरफ एक भिंन ।
दोनों पर नंगो के फूल, चित्त निरखे होत सनकूल ॥१०॥

बेला कई रंगों कई नकस, देखो एक दूजी पे सरस ।
ता बीच चरनी[३] केती कई रंग, बेलां[४] कटाव जड़ित कई नंग ॥११॥

दोऊ तरफ किनारे कांगरी, कई भांत दोरी नंग जरी ।
दाहिने हाथ भिंन चबूतरा, ता बीच गली लगता तीसरा ॥१२॥

ऊपर दरखत छाया बराबर, सब रही चबूतरे भर ।
चारों तरफों तीन तीन चरनी, किनारे की सोभा जाए न बरनी ॥१३॥

उज्जल भोम को कहा कहूं तेज, जानो बीज[५] चमके रेजा रेज ।
ए जोत आसमान लों करत, जोत आसमान सामी लरत ॥१४॥

१. नशा, मस्ती । २. तृप्ति । ३. सीढ़ी । ४. बेलियां । ५. बिजली ।

सो परे बन पर झलकार, जोत बन की न देवे हार ।
इन मंदिरों को जो उजास, सो तो मावत नहीं आकास ॥१५॥

जोत तेज प्रकास जो नूर, सब ठौरों सीतल सत सूर ।
जोत रोसन भर्‌यो आसमान, किरना सके न कोई काहूं भान ॥१६॥

सोभा क्यों कहूं या मुख बन, सो तो होए नहीं बरनन ।
इत सब तत्वों की खुसबोए, सो इन जुबां बरनन क्यों होए ॥१७॥

इत जल वाए के चलत जो पूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर ।
जल के जो उठत तरंग, ताकी किरना देखावे कई रंग ॥१८॥

चांद सूरज धनी के हजूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर ।
इत जमुना जी के सातों घाट, मध्य का जल जो बीच पाट ॥१९॥

तापर द्योहरी एक, जल पर पाट कठेड़ा विसेक ।
चारो थंभों के जो नंग, झलके माहें जल के तरंग ॥२०॥

आड़े ऊंचे याके तले, चार चार थंभ तीन तीन घड़नाले[1] ।
याकी जोत आकास न मावे, किरना फेर फेर जिमी पर आवें ॥२१॥

तिनथें तीन घाट तरफ बाएं, ताकी जुदी तीनो बनराए ।
बन बड़ा इनथें भी बाएं, पिया सैयां खेलन कबूं कबूं जाएं ॥२२॥

लम्बी डारें ऊंचा बन, कई भांत हिंडोले झूलन ।
तीन घाट कहे सो देखाऊं, सुनो तीनों बनों के नाऊं ॥२३॥

केल लिबोई[2] और अनार, और तीन बन दाहिनी किनार ।
बट नारंगी जांबू बनराए, पाट के घाट अमृत[3] केहेलाए ॥२४॥

जल पर डारें लगियां आए, दूजियां भोम तरफ सोभाए ।
जमुना जी के दोऊ किनारे, बन जल पर लगी दोऊ हारें ॥२५॥

आधों आध हुइयां डारें, बन रंग सोभित दोऊ पारें ।
आगे बन के जो मन्दिर, ताको बरनन करूं क्यों कर ॥२६॥

१. पुल के स्थंभो के बीच बहने वाले जल की कमानी । २. नींबू । ३. आम ।

बेलां बन चढ़ियां इन सूल, हुई दिवालें पात फूल ।
गिरद चारों तरफों फूले फूल रंग, जुदी हारें सोभा जिन संग ॥२७॥

इत लता चढ़ियां अति घन, ऊपर फूलों के फूले हैं बन ।
जानों जवेर रंग अनेक, कुंदन में जड़े विवेक ॥२८॥

बीच जमुना जी के और मन्दिर, अतिबन सोभित बन के अंदर ।
कई सेज्या बनी फूल बन में, कई रंग हुए सघन में ॥२९॥

इत खेलत जुत्थ सैयन, सदा आनन्द इन वतन ।
मिनें राज स्यामाजी दोए, सुख याही आतम सब कोए ॥३०॥

पेड़ जुदे जुदे लम्बी डारी, छाया घाटी सोभे नीची सारी ।
निकसी एक थें दूजी गली, सो तो तीसरी में जाए मिली ॥३१॥

कई आवत बीच आड़ियां, कई सिधियां कई टेढ़ियां ।
बन गलियों में बराबर, न कहूं अधिक न छेदर ॥३२॥

ऊपर ढांपियां सारी सनन्ध, सोभा बनी जो दोरी बंध ।
तले भोम नजर आवे जेती, उज्जल कहा कहूं जोत सुपेती ॥३३॥

जिमी ऊपर तले जो रेती, जानों तितके बिछाए मोती ।
कहूं अति बारीक कहूं छोटे, कहूं बड़े बड़े रे मोटे ॥३४॥

कित जानों हीरा कनी, हर ठौर हर भांत घनी ।
कित दोखूनी तीन चौखूनी, कित फिरती कहूं गोल बनी ॥३५॥

ए विध कहूं मैं केती, सो होए न याकी गिनती ।
बन फूल फूले बहु रंग, झलूब[1] रहे बोए सुगंध ॥३६॥

एक खूबी और खुसबोए, याकी किन जुबां कहूं मैं दोए ।
एक सुगंध दूजा नूर, रह्या सब ठौरों भर पूर ॥३७॥

तलाव जमुना जी के मध, बन के मंदिर या विध ।
ए खेलन के सब ठौर, तलाव विध है और ॥३८॥

१. लटक रहे है ।

तलाव बनें लिया घेर, ऊपर द्योहरियां चौफेर ।
कई पावड़ियां जो किनारे, बड़ा चौक तले जाली बारे ॥३९॥

बन लेवत सोभा पाले, कई हिंडोले लम्बी डालें ।
घाट पाट द्योहरी कई रंग, जल सोभा लेत तरंग ॥४०॥

गेहेरा अति सुन्दर जल, बीच में बन्यो है मोहोल ।
जल ऊपर मोहोल जो छाजे, बीच बीच में बन विराजे ॥४१॥

जल मोहोल तले जो खलके, मंदिर कोट प्रकास मनी झलके ।
बन को झुन्ड पाल पर एक, तले सोभा अति विसेक ॥४२॥

झुन्ड तले सोभा कही न जाए, धनी इत बिराजत आए ।
धनी बैठत साथ मिलाए, सब सिनगार साज कराए ॥४३॥

इन ठौर सोभा जो अलेखे, चित सोई जाने जो देखे ।
मध्य बन धाम के गिरदवाए, सोभा एक दूजी पे सिवाए ॥४४॥

बट पीपल निकट बनराए, सो देखे न दृष्ट अघाए ।
ज्यों ज्यों देखिए त्यों त्यों सोभाए, पेहेले थें पीछे अधिकाए ॥४५॥

फिरते बन धाम विराजे, ऊपर आए रह्या लग छाजे ।
चारों तरफों फूले फूल बन, कई रंग सोभा अति घन ॥४६॥

बरन्यो न जाए या मुख, चित्त में लिए होत है सुख ।
बन में खेलें टोले टोले, मोर बांदर करत कलोले ॥४७॥

मिल मिल करें टहुंकार, मुख मीठी बानी पुकार ।
बांदर ठेकों पर ठेक देत, टेढ़ी उलटी गुलाटें[1] लेत ॥४८॥

तीतर लवा कोकिला चकोर, सब्द वाले सामी टकोर ।
सुआ मैना करें चोपदारी[2], चातुरी इन आगे सब हारी ॥४९॥

सखियों के नाम ले ले बुलावें, धनीजी के आगे मुजरा[3] करावें ।
पंखी पिउ पिउ तुहीं तुहीं करे, कई बिध धनी को हिरदे धरें ॥५०॥

१. उलट बाजीयां । २. देखरेख । ३. दर्शन ।

तिमरा भमरा स्वर साधें, गुंजे गान पिया सों चित बांधें ।
मृग कस्तूरियां घेरों घेर, करें सुगंध बन चौफेर ॥५१॥

हाथी बाघ चीते सियाहगोस[१], खेलें मिलें आतम नहीं रोस ।
हंस गरूड़ पंखी कई जात, नाम लेऊं केते कै भांत ॥५२॥

कई मुरग सुतर[२] कुलंग[३], खेल करें लड़ाई अभंग ।
सीनाकस[४] गुलाटें खावें, कबूतर अपनी गत देखावें ॥५३॥

हरन सांम्हर पस्वाड़े पाड़े, खेलें सब कोई अपने अखाड़े ।
मुजरे को दोऊ समें आवें, खेल सब कोई अपना देखावें ॥५४॥

पसु पंखी अनेक हैं नाम, सोभे केसों पर चित्राम ।
अति सुन्दर जोत अपार, याके खेल बोल मनुहार ॥५५॥

जमुनाजी के जो पार, बन पसु पंखी याही प्रकार ।
मोहोल सामे सोभे मोहोल, सो मैं क्यों कहूं या मुख कौल ॥५६॥

दरवाजे सामी दरवाजे, नूर सामी नूर बिराजे ।
नूर किरना उठें साम सामी, जोत रही सबों ठौर जामी ॥५७॥

लीला दोऊ दोनों ठौर, भांत दोऊ पर नाहीं और ।
फिरते अछर के जो बन, लीला एकै देखियत भिंन ॥५८॥

कई मिलावे सोहने, धनी सैयों के खेलौने ।
पसु पंखी जुत्थ मिलत, आगे बड़े दरवाजे खेलत ॥५९॥

दोऊ कमाड़ रंग दरपन, माहें झलकत सामी बन ।
नंग बेनी पर देत देखाई, ए सोभा कही न जाई ॥६०॥

कई कटाव नकस जवेर, सोभित नंग चौक चौफेर ।
फिरते द्वारने जो मनी, ताकी जोत प्रकास अति घनी ॥६१॥

याके तीन तरफ जो दिवाल, कई जवेर भोर रंग लाल ।
गोख[५] खिड़की जाली जवेर, कई जड़ाव दिवाल चौक चौफेर ॥६२॥

१. सियार । २. शुतुरमूर्ग । ३. कुरंग (एक प्रकार का पक्षी । ३. सीना कसकर । ४. छोटी जाली (आला)

गिरद झरोखे के थंभ फिरते, जुदी कई जिनसों जोत धरते ।
नव भोम रंग बरनन, तापर खुली चांदनी उठत किरन ॥६३॥

मंदिर याकी कांगरी करे जोत, जानो तहां की बीज उद्दोत ।
दरवाजे में ठौर रसोई, जित बड़ा मिलावा नित होई ॥६४॥

स्याम मंदिर रसोई होत जित, जोड़े सेत मंदिर है तित ।
बन थें फिरें संझा जब, इन मंदिरों अरोगें तब ॥६५॥

चरनी आगे मिलावा होत, जुत्थ लाड़बाई धरे जोत ।
साक बांदर जो ल्यावत, आगे सखियां सब समारत ॥६६॥

कई चौक चबूतरे अंदर, कई विध गलियां मंदिर ।
कई जड़ाव दिवाल द्वार जोत धरे, ए जुबां बरनन कैसे करे ॥६७॥

कई नकस पुतली चित्रामन, कई बेल पसु पंखी बन ।
कंचन कड़े जंजीरां जड़ियां, कई झलके थंभ सीढ़ियां ॥६८॥

माहें वस्तां संदूक जोगवाई, सो तो अगनित देत देखाई ।
ताके खिल्ली[१] किनारे भमरियां, ऊपर वस्तां अनेक बिध धरियां ॥६९॥

ए मैं क्यों कर करूं बरनन, तुम लीजो कर चितवन ।
नव भोम सबों के मंदिर, देखो वस्तां अपनी चित्त धर ॥७०॥

सेज्या सबन के सिनगार, हिरदे लीजो कर निरधार ।
सब जोगवाई है पूरन, कमी नाहीं काहू में किन ॥७१॥

हाँस विलास सनेह प्रेम प्रीत, सुख पिया जी को सब्दातीत ।
डब्बे तबके[२] सीसे सीकियां, कई देत देखाई लटकतियां ॥७२॥

चौकियां माचियां[३] सिंघासन, कई हिंडोले जंजीर कंचन ।
कई बासन धात अनेक, कई बाजंत्र विविध विसेक ॥७३॥

कई झीले चाकले[४] दुलीचे[५] बिछोनें, कई बिध तलाई सिरानें ।
कई रंग ओछाड़ गाल मसूरे, कई सिरख[६] सोड़[७] मन पूरे ॥७४॥

१. खुंटी । २. रकाबियां, छोटी चौड़ी थालियां । ३. पोढ़िया । ४. कालीन । ५. गलीचा । ६. रजाई । ७. रुई ।

सेज्या सिनगार के जो भवन, दोए दोए नव खण्ड सबन ।
दूजी भोम किनारे बाएं हाथ, कबूं कबूं सिनगार करें इत साथ ॥७५॥

इत खड़ोकली[१] जल हिलोले[२], धनी साथ झीलें-झकोलें[३] ।
इत सिनगार करके खेलें, ठौर जुदे जुदे जुत्थ मिलें ॥७६॥

साम सामें मन्दिरों के द्वार, नव भोम फिरती किनार ।
ता बीच थंभो की दोए हार, कई रंग नंग तेज अपार ॥७७॥

जेती मैं कही जोगवाई, सो देख देख आतम न अघाई ।
या बाहेर या अंदर, सब एक रस मोहोल मन्दिर ॥७८॥

केहेती हों करके हेत, सारे दिन की एह बिरत ।
तुम लीजो दृढ़ कर चित्त, अपना जीवन है नित ॥७९॥

श्री धाम की आठ पोहोर की बीतक

तीजी भोम की जो पड़साल[४], ठौर बड़े दरवाजे विसाल ।
धनी आवत हैं उठ प्रात, बन सींचत अमृत अघात ॥८०॥

पसु पंखी का मुजरा लेवें, सुख नजरों सबों को देवें ।
पीछे बैठ करें सिनगार, सखियां करावें मनुहार ॥८१॥

श्री स्यामाजी मन्दिर और, रंग आसमानी है वा ठौर ।
चार चार सखियां सिनगार करावें, स्यामाजी श्री धनी जी के पासे आवें ॥८२॥

सोभा क्यों कर कहूं या मुख, चित में लिए होत है सुख ।
चित्त दे दे समारत सेंथी, हेत कर कर बेनी गूंथी ॥८३॥

मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी को भूखन पेहेरावें ।
साथ सिनगार करके आवें, जैसा धनी जी के मन भावे ॥८४॥

सैयां लटकतियां करें चाल, ज्यों धनी मन होत रसाल ।
सैयां आवत बोलें बानी, संग एक दूजी पे स्यानी ॥८५॥

१. जलकुंड का नाम । २. लहराना, हिलोरें । ३. झकझोरना, जलक्रीड़ा । ४. देहलान ।

सैयां आवत करें झनकार, पाए भूखन भोम ठमकार ।
झलकतियां रे मलपतियां[1], रंग रस में चैन करतियां ॥८६॥

कंठ कंठ में बांहों धरतियां, चित्त एक दूजी को हरतियां ।
सुन्दरियां रे सोभतियां, एक दूजी को हाँस हँसतिया ॥८७॥

कई फलंग दे उछलतियां, कई फूल लता जो फेरतियां ।
कई हलके हलके हालतियां, कई मालतियां[2] मचकतियां[3] ॥८८॥

कई आवत हैं ठेलतियां, जुत्थ जल लेहेरां ज्यों लेवतियां ।
कई आवें भमरी[4] फिरतियां, एक दूजी पर गिरतियां ॥८९॥

कई सिधियां सलकतियां, कई विध आवें जो चलतियां ।
सखी एक दूजी के आगे, आए आए के चरनों लागे ॥९०॥

इत बड़ा मिलावा होई, जुदी रहे न या समें कोई ।
कोई छज्जों कोई जालिएं, कोई मोहोलों कोई मालिएं ॥९१॥

इत चार घड़ी लों बैठें, मेवा मिठाई आरोग के उठें ।
दाहिनी तरफ दूजा जो मंदिर, आए बैठे ताके अंदर ॥९२॥

नीला ने पीला रंग, ताकी उठत कई तरंग ।
दोऊ रंगों की उठत झांई, इन मंदिरों दिवालों के तांई ॥९३॥

पैठते दाहिने हाथ जांही, सेज्या है या मंदिर मांहीं ।
कई जिनस जड़ाव सिंघासन, राजस्यामाजी के दोऊ आसन ॥९४॥

झरोखे को पीठ देवें, बैठे द्वार सनमुख लेवें ।
संग सखियां केतिक विराजें, या समें श्री मंडल बाजे ॥९५॥

नवरंगबाई जो बजावें, मुख बानी रसीली गावें ।
इत बाजत बेन रसाल, बेनबाई गावें गुन लाल ॥९६॥

सखी एक निकसें एक पैठें, एक आवें उठें एक बैठें ।
इन समें भगवान जी इत, दरसन को आवें नित ॥९७॥

१. मस्ती से भरी हुई । २. मस्ती से । ३. लटकती चाल । ४. गोल चक्कर ।

झरोखे सामी नजर करें, परनाम करके पीछे फिरें ।
इत और न दूजा कोए, सरूप एक है लीला दोए ॥९८॥

भगवान जी खेलत बाल चरित्र, आप अपनी इच्छा सों प्रकृत ।
कोट ब्रह्मांड नजरों में आवें, खिन में देखके पलमें उड़ावें ॥९९॥

और एतो लीला किसोर, सैयां सुख लेवें अति जोर ।
ए लीला सुख केता कहूं, याको पार परमान न लहूं ॥१००॥

सखियां केतिक बन में जावें, साक पान मेवा सब ल्यावें ।
घड़ी चार खेल तित करें, दिन पोहोर चढ़ते आवें घरे ॥१०१॥

ए सब इच्छा सों मंगावें, पर सखियों को सेवा भावे ।
सैयां सेवा करन बेल[1] ल्यावें, लेवें एक दूजी पे छिनावें ॥१०२॥

निकसते दाहिनी तरफ जो ठौर, सैयां आए बैठें चढ़ते दिन पोहोर ।
मिलावा होत दिवालों के आगे, सैयां पान बीड़ी वालने लागे ॥१०३॥

मसाला समार समार के लेवें, सखी एक दूजी को देवें ।
डेढ़ पोहोर चढ़ते दिन, बीड़ी वाली सैयां सबन ॥१०४॥

बीड़ियों की छाब लेकर, धरी पलंग तले चौकी पर ।
श्री राज बैठे बातां करें, श्री स्यामाजी चित्त धरें ॥१०५॥

सैयां परसपर[2] करें हाँस, लेवें धनीजी को विविध विलास ।
घड़ी दो एक तापर भई, लाड़बाई आए यों कही ॥१०६॥

श्री धनीजी की अग्या पाऊं, तो या समें रसोई ले आऊं ।
श्री धनीजीने अग्या करी, सैयां चौकी आन आगे धरी ॥१०७॥

सैयां दोए चाकले ल्याई, सो तो दोनों दिए बिछाई ।
श्री राज उतारे वस्तर, पेहेनी पिछोरी कमर पर ॥१०८॥

श्री राज चाकले आए, श्री स्यामाजी संग सोहाए ।
श्री राज पखाले[3] हाथ, श्री स्यामाजी भी साथ ॥१०९॥

१. देरी । २. आपस में । ३. धोए ।

सैयां दौड़ दौड़ के जावें, आरोगने की वस्तां ल्यावें ।
मेवा अंन ने साक मिठाई, कई विध सामग्री ले आई ॥११०॥

एक ले चली साक कटोरी, तापे छीन ले चली दूसरी ।
तिनथे झोंट[१] ले चली तीसरी, चौथी वापे भी ले दौरी ॥१११॥

जो कदी छीन लेत हैं जिनपे, पर रोस न काहू किनपे ।
इतथें जो फिर कर गैयां, तिन और कटोरी जाए लैयां ॥११२॥

यों एक एक पे लेवें, हेत एक दूजी को देवें ।
सब मंदिर करें झनकार, स्वर उठत मधुर मनुहार ॥११३॥

सैयां दौड़त हैं साम सामी, सब्द रह्यो सबों ठौर जामी ।
कई स्वर उठत भूखन, पड़छंदे परें स्वर तिन ॥११४॥

कई बिध उठत मीठी बानी, मुख बरनी न जाए बखानी ।
इन समें की जो आवाज, सोभा धाममें रही बिराज ॥११५॥

दूध दधी ल्याई लाड़बाई, सोतो लिए मन के भाई ।
सब खेलें हाँसी करें, आए आए धनी जी के आगे धरें ॥११६॥

या समें दौड़त भूखन बाजे, पड़छंदे[२] भोम सब गाजे ।
झारी[३] लेके चल्लू कराई, मुख हाथ रूमाल पोंछाई ॥११७॥

श्री स्यामाजी चल्लू करी, दोए बीड़ी[४] दो मुख में धरी ।
श्री राज उठ बैठे सिंघासन, संग स्यामाजी उठे ततखिन ॥११८॥

दोऊ आसन जोड़े आए, सैयां चौकी चाकले उठाए ।
सैयां तले आरोगने गैयां, आरोग आए पान बीड़ी लैयां ॥११९॥

सेज्या आए श्री जुगल किसोर, तब दिन हुआ दो पोहोर ।
सैयां बैठी जुदे जुदे टोले, करें रेहेस बातें दिल खोलें ॥१२०॥

तित कई विध रस उपजावें, कई विलास मंगल मिल गावें ।
कई हँस हँस ताली देवें, यों कई बिध आनंद लेवें ॥१२१॥

१. छीनना । २. प्रतिध्वनी, गूंज का स्वर । ३. सुराही । ४. पान का बीड़ा ।

कई बैठत छज्जों जाए, बैठें अंगसों अंग मिलाए ।
मुख बानीसों हेत उपजावें, एक दूजी को प्रेम बढ़ावें ॥१२२॥
रस अनेक बातन लेवें सुख, सो मैं कह्यो न जाए या मुख ।
सरूप सोभा जो सुन्दरता, बस्तर भूखन तेज जोत धरता ॥१२३॥
कई बैठत मिलावे आए, बैठें अंगसों अंग लगाए ।
सुख एक दूजीको उपजावें, मुख बानी सों प्रीत बढ़ावें ॥१२४॥
हाँस विनोद ऐसा करें, सुख प्रेम अधिक अंग धरें ।
यों सुख मिनों मिने लेवें, सखी एक दूजीको देवें ॥१२५॥
कई बैठत जाए हिंडोले, अनेक करत कलोलें ।
कई बैठत जाए पलंगे, बातां करत मिनों मिने रंगें ॥१२६॥
यों अनेक विधें सुख नित, पियाजी को सदा उपजत ।
सब सैयां पोहोर पीछल, टोलें तीसरी भोम आवें चल ॥१२७॥
मंदिर आइयाँ सैयां जब, खुले द्वार दरसन पाए सब ।
तब आए सबे सुखपाल, स्यामाजी बैठे संग लाल ॥१२८॥
दोए दोए सैयां सब संग, मिल बैठ करें कई रंग ।
सुखपाल चलावें मन, ज्यों चाहिए जैसा जिन ॥१२९॥
या जमुनाजी या तलावे, आए खेलें जो मन भावें ।
श्री राज स्यामाजी के डेरे, सुखपाल उतारे सब नेरे[1] ॥१३०॥
जुत्थ जुदे जुदे बन खेलें, खेल नए नए रंग रेलें ।
तब लग खेलें साथ सब, दिन घड़ी दोए पीछला जब ॥१३१॥
सैयां मिलकर पिउ पासे आवें, झीलने की बात चलावें ।
श्री राज स्यामाजी उठकर, उतारे हैं वस्तर ॥१३२॥
पेहेने वस्तर जो झीलन, राज स्यामजी सैयां सबन ।
इत एक घड़ी लों झीलें, जल क्रीड़ा कई रंग खेलें ॥१३३॥

१. पास, नजदीक ।

बाकी दिन रह्यो घड़ी एक, तामें सिनगार किए विवेक ।
हुओ संझाको अवसर, राज स्यामाजी बैठे सिनगार कर ॥१३४॥

मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजीके आगे धावें ।
उछरंगतियां आवें आगे, राज स्यामाजी के पांउ लागे ॥१३५॥

पांउ लागके पीछियां फिरें, खेल चित चाह्या त्यों करें ।
कई रंग फूले फूल बास, लेत नए नए बनके विलास ॥१३६॥

ससि बन याही जोत तेज, सब तत्व तेज रेजा रेज ।
करें खेल अति उछरंग, तामें कबूं कबूं पियाजी के संग ॥१३७॥

इत कई विध मेवा आरोगें, बनहीं को लेवें विभोगें ।
इत नित विलास विसाल, पीछे आए बैठे सुखपाल ॥१३८॥

इत हुई पोहोर एक रात, सुखपाल चलावें चित चाहत ।
घरों आए सुखपाल सारे, राज स्यामाजी पांचमी भोम पधारे ॥१३९॥

पंद्रा दिन खेलें बन, पंद्रा दिन सुख भवन ।
अब कहूं भवन को सुख, जो श्री धनीजी कह्यो आप मुख ॥१४०॥

बनथें आए सिनगार कर, संझा तले भोम मन्दिर ।
आरोग चढ़े भोम चौथी, खेलें नवरंगबाई की जुत्थी ॥१४१॥

निरत करे नवरंगबाई, पासे कई विध बाजे बजाई ।
निरत करें और गावें, पासे सखियां स्वर पुरावें ॥१४२॥

कर भूखन बाजे चरन, ताकी पड़ताल परे सब धरन ।
पांऊं ऐसी कला कोई साजे, सब में एक घूंघरी बाजे ॥१४३॥

जब दोए रे दोए बोलावें, तब तैसे ही पांउं चलावें ।
तीन कहें तो बाजे तीन, चार बाजे कला सब लीन ॥१४४॥

जो बोलावें झांझरी एक, जानों एही खेल विसेक ।
जिनको रे बोलावत जैसे, सो तो बोलत भूखन तैसे ॥१४५॥

जब बोलावें सर्वा अंगे, भूखन बोले सबे एक संगे ।
जब जुदे जुदे स्वर बोलावें, छब जुदी सबोंकी सोहावे ॥१४६॥

भूखन करत जुदे जुदे गान, मुख बाजे करें एक तान ।
क्यों कर कहूं ए निरत, सोई जाने जो हिरदे धरत ॥१४७॥

अनेक स्वरों बाजे बाजें, पड़छंदे भोम सब गाजें ।
सुंदरियां सोभा साजें, सो तो धनीजी के आगे बिराजे ॥१४८॥

निरत भूखन बाजे गान, देखो ठौर सैयां सब समान ।
इन लीला में आयो चित्त, छोड़्यो जाए न काहूं कित ॥१४९॥

छुटकायो भी ना छूटे, तो आतम दृष्ट कैसे टूटे ।
इत बोहोत लीला कहूं केती, सोई जाने लगी जाए जेती ॥१५०॥

थंभों दिवालों नंगों तेज जोत, जानों निरत सबों ठौर होत ।
पिया पीछल मंदिर सेत दिवाल, तामें कई रंग नंग विसाल ॥१५१॥

दाहिने हाथ मंदिर रंग लाखी, कई कटाव दिवाल दिल साखी ।
बांई तरफ पीली जो दिवाल, माहें स्याम सेत रंग लाल ॥१५२॥

सामे नीला मंदिर झलकत, साम सामी किरना लरत ।
रह्या नूर नजरों बरस, जुबां क्या कहे धनीको रंग रस ॥१५३॥

पोहोर रैनी लगे जो खेलावें, पीछे मुख अग्या करके बोलावें ।
इतहीं थें अग्या करी, पांउं लाग सेज्या दिल धरी ॥१५४॥

दई अग्या सबों बड़ भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी ।
श्री राज स्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई वस्तर भूखन वधारे ॥१५५॥

ए मंदिर रंग-परवाली[1], सो मैं क्या कहूं ताकी लाली ।
माहें अनेक रंगों की जोत, सो मैं कही न जाए उद्योत ॥१५६॥

पीछल बीसक पिउ पासे रहियां, सो भी आइयां घरों सब सैयां ।
पिउजी सबों मन्दिरों पधारे, होत सेज्या नित विहारे ॥१५७॥

१. शयन करने का मंदिर ।

अब क्यों रे कहूं प्रेम इतको, सुख लेवें चाह्यो चितको ।
सुख लेवें सारी रात, तीसरी भोम आवें उठ प्रात ॥१५८॥

अब कहूं या समें की बात, सो तो अति बड़ी विख्यात ।
कोई होसी सनमन्धी इन घर, सो लेसी वचन चित धर ॥१५९॥

ए बानी तिछन अति सार, सो निकसेगी वार के पार ।
सनमन्धियों की एही पेहेचान, वाके सालसी[1] सकल संधान[2] ॥१६०॥

जाको लगी सोई जाने, मुख बरनी न जाए बखाने ।
खेल मांग के आइयां जित, धनी आए के बैठे तित ॥१६१॥

पासे बैठके खेल देखावें, हाँसी करने को आप भुलावें ।
भूलियां आप खसम वतन, खेल देखाया फिराए के मन ॥१६२॥

अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन ।
जित मिल कर बैठियां तुम, याद करो आप खसम ॥१६३॥

तले भोम थंभों की जुगत, कही जाए न बानी सों बिगत ।
इत बड़ा चौक जो मध, ताकी अति बड़ी सोभा सनन्ध ॥१६४॥

आगे पीछे थंभोंकी हार, दाएं बाएं दोऊ पार ।
जोत चारों तरफों जवेर, झलकार छाई चौफेर ॥१६५॥

मंदिर दिवालों थंभों के जो पार, सोभा करत अति झलकार ।
जोत ऊपर की जो आवे, तले की भी सामी ठेहेरावे ॥१६६॥

इत अनेक विधों के जो नंग, ताकी किरना देखावें कई रंग ।
आवत साम सामी अभंग, सो मैं क्यों कहूं नूर तरंग ॥१६७॥

इत याही चौक के बीच, बिछाया है दुलीच ।
दुलीचा भी वाही रसम, ताकी अति जोत नरम पसम ॥१६८॥

याकी हँसत बेल फूल रंग, सो भी करत जवेरों सों जंग ।
किरना होत न पीछी अभंग, ए भी सोभित जवेरों के संग ॥१६९॥

१. चुभ जायेगा । २. जोड़ ।

इत धरया जो सिंघासन, राज स्यामा जी के दोऊ आसन ।
ताको रंग सोभित कंचन, जड़े मानिक मोती रतन ॥१७०॥

पीछले तीन थंभ जो खड़े, ता बीच कई नकसों नंग जड़े ।
तकियों के बीच दोऊ सिरे, ताके फूलन पर नंग हरे ॥१७१॥

उतरती कांगरी जो हार, बने आसमानी नंग तरफ चार ।
कई बेल फूल जड़े माहीं, ताकी उठत अनेक रंग झांई ॥१७२॥

कई रंग नंग कहूं केते, हर एक तरंग कई देते ।
बांई बगलों तकिए दोए, बेलां बारीक बरनन कैसे होए ॥१७३॥

जो जनम सारे लो कहिए, तो एक नकस को पार न पैए ।
पचरंगी पाटी मिहीं भरी, कई विध खाजली[1] माहें करी ॥१७४॥

कई चाकले[2] चित्रकारी, ता पर बैठे श्री जुगल बिहारी ।
दोऊ सरूप चित में लीजे, फेर फेर आतम को दीजे ॥१७५॥

आतम सों न्यारे न कीजे, आतम बिन काहू न कहीजे ।
फेर फेर कीजे दरसन, आतम से न्यारे न कीजे अधखिन ॥१७६॥

पेहेले अंगुरी नख चरन, मस्तक लों कीजे बरनन ।
सब अंग वस्तर भूखन, सोभा जाने आतम की लगन ॥१७७॥

यों सरूप दोऊ चित में लीजे, अंग वार डार के दीजे ।
गलित गात सब भीजे, जीव भान भूंन टूक कीजे ॥१७८॥

रंग करो विनोद हाँस, सांचा सुख ल्यो प्रेम विलास ।
घरों सुख सदा खसम, लेत मेरी परआतम ॥१७९॥

पर इत सुख पायो जो मेरी आतम, सो तो कबहूं न काहू जनम ।
इत बैठे धनी साथ मिल, हाँसी करने को देखाया खेल ॥१८०॥

आगे बारे सहस्त्र बैठियां हिल मिल, जानों एकै अंग हुआ भिल ।
याको क्यों कहूं सरूप सिनगार, जाने आतम देखनहार ॥१८१॥

१. चित्रकारी । २. आसन ।

कई कोट कहूं जो अपार, जुबां क्या कहेगी झलकार ।
जैसे भूखन तैसे वस्तर, तैसी सोभा सरूप सुन्दर ॥१८२॥

इत बड़े चौक मिलावे, धनी साथको बैठे खेलावें ।
जो खेल मांग्या है सैयन, सो देखाया फिराए के मन ॥१८३॥

धनी धाम आप बिसर्जन[1], खेल देखाया जो सुपन ।
तामें बांधी ऐसी सुरत, सो अब पीछी क्यों ए ना फिरत ॥१८४॥

धनी दिए दरसन ता कारन, करने को सैयां चेतन ।
धनी आप सैयों को दई सुध, सो हम गावत अनेक विध ॥१८५॥

जागियां तो भी खेल न छोडें, फेर फेर दुख को दौड़ें ।
धनी याद देत घर को सुख, तो भी छूटे ना लग्यो जो विमुख ॥१८६॥

अब आप जगाए के धनी, हाँसी करसी मिनों मिने घनी ।
अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन ॥१८७॥

ए जो किया है तुम कारन, धनी धाम सैयां बरनन ।
जित मिलकर बैठियां तुम, याद करो आप खसम ॥१८८॥

करो अंतरगत गम, ए जो जाहेर देखाया हम ।
याद करो वतन सोई, और न जाने तुम बिना कोई ॥१८९॥

तुम मांगी धनी पे करके खांत, ए जो धनीएँ करी इनायत[2] ।
याद करो सोई साइत, ए जो बैठके मांग्या तित ॥१९०॥

स्याम स्यामाजी साथ सोभित, क्यों न देखो अंतरगत ।
पीछला चार घड़ी दिन जब, ए सोई घड़ी है अब ॥१९१॥

याद करो जो कह्या मैं सब, नींद छोड़ो जो मांगी है तब ।
याद करो धनीको सरूप, श्री स्यामाजी रूप अनूप ॥१९२॥

याद करो सोई सनेह, साथ करत मिनों मिने जेह ।
सुख सैयां लेवें नित, अंग आतम जे उपजत ॥१९३॥

१. रवाना करना, भेजना । २. कृपा ।

रस प्रेम सरूप है चित, कई विध रंग खेलत ।
बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती ॥१९४॥
प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयोंको भी पिलावती ।
पियाजी कहें इन्द्रावती, तेज तारतम जोत करावती ॥१९५॥
तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती ।
सैयां जानें धाम में पैठियां, ए तो घरही में जाग बैठियां ॥१९६॥

॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥२८२॥

सूरत इस्क पैदा होने की

तुमको इस्क उपजावने, करूं सो अब उपाए ।
पूर चलाऊं प्रेम को, ज्यों याही में छाक[1] छकाए ॥१॥
इस्क जिन विध उपजे, मैं सोई देऊं जिनस ।
तब इस्क आया जानियो, जब इन रंग लाग्यो रस ॥२॥
ए सुख बिसरे धनीय के, इन सुपन भोममें आए ।
सो फेर फेर याद देत हों, जो गया तुमें बिसराए ॥३॥
कीजे याद मिलाप धनी को, और सखियों के सनेह ।
रात दिन रंग प्रेम में, विलास किए हैं जेह ॥४॥
निस दिन रंग-मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम ।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम ॥५॥
चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन ।
निमख एक ना छोड़िए, कर मन वाचा करमन ॥६॥
एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख ।
इस्क याही सों आवहीं, याही सों होइए सनमुख ॥७॥
इस्क धनी को आवहीं, याही याद के माहें ।
इस्क जोस सुख धनी बिना, और पैदा कहूं नाहें ॥८॥

१. नशा ।

ताथें पल पल में ढिग होइए, सुख लीजे जोस इस्क ।
त्यों त्यों देह दुख उड़सी, संग तज मुनाफक[1] ।।९।।

जो लों इस्क न आइया, तोलों करो उपाए ।
योंही इस्क जोस आवसी, पल में देसी पट उड़ाए ॥१०॥

पल पल में पट उड़त है, बढ़त बढ़त अनूकरम ।
इस्क आए जोस धनी के, उड़ गयो अन्तर भरम ॥११॥

निमख निमख में निरखिए, पट न दीजे पल ल्याए ।
छेटी[2] खिन ना पर सके, तब इस्क जोस अंग आए ॥१२॥

इस्क पेहेले अनुभवी, निज सरूप निजधाम ।
तिन खिन बेर ना होवहीं, धनी लेत असल आराम ॥१३॥

बैठे मूल मेले मिने, धनी आगूं अंग लगाए ।
अंग इस्क जो अनुभवी, तुम क्यों न देखो चित ल्याए ॥१४॥

ए वचन विलास जो पेड़ के, आए हिरदे आतम के अंग ।
तब खिन बेर न लागहीं, असल चित्त एक रंग ॥१५॥

बैठते उठते चलते, सुपन सोवत जाग्रत ।
खाते पीते खेलते, सुख लीजे सब विध इत ॥१६॥

एह बल जब तुम किया, तब अलबत[3] बल सुख धाम ।
अरस परस जब यों हुआ, तब सुख देवें स्यामा स्याम ॥१७॥

जिन जानो ढील इस्क की, जब रस आयो अंतस्करन ।
तब सुख पाइए धाम के, निस दिन रंग रमन ॥१८॥

फेर फेर सुरत साधिए, धनी चरित्र सुख चैन ।
इस्क आए बेर कछू नहीं, खुल जाते निज नैन ॥१९॥

फेर फेर सरूप जो निरखिए, फेर फेर भूखन सिनगार ।
फेर फेर मिलावा मूल का, फेर फेर देखो मनुहार[4] ॥२०॥

१. कपटी । २. दूरी । ३. अवश्य । ४. खुश करना ।

फेर फेर देखो धनी हेत की, फेर फेर रंग विलास ।
फेर फेर इस्क रस प्रेम की, देखो विनोद कई हाँस ॥२१॥

अंदर धनी के देखिए, एक चित्त हेत रस रीत ।
क्यों कहूं रंग हाँस विनोद की, सुख सनेह प्रेम प्रीत ॥२२॥

खिन खिन में सुख होएसी, धनी याद किए असल ।
ए सुख आए इस्क, बेर ना लगे एक पल ॥२३॥

मैं जो दई तुमें सिखापन, सो लीजो दिल दे ।
महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, सखी जीवन हमारा ए ॥२४॥

॥प्रकरण॥४॥ चौपाई॥३०६॥

बन में सरूप सिनगार

वतन आपनो, ब्रह्मसृष्ट को देऊं बताए ।
धाम की सुध मैं सब देऊं, ज्यों अंतस्करन में आए ॥१॥

इन भोम की रेती क्यों कहूं, उज्जल जोत अपार ।
भोम बन आसमान लो, झलकारों झलकार ॥२॥

जोत जरे इन जिमी की, मावत नहीं आसमान ।
तिन जिमी के बन को, जुबां कहा करसी बयान ॥३॥

इन भोम रंचक रेत की, तेज न माए आकास ।
जो नंग इन जिमी के, क्यों कहे जुबां प्रकास ॥४॥

जोत जिमी पोहोंचे आसमान लो, आसमान पोहोंचे जोत बन ।
सो छाए रही ब्रह्मांड को, सब ठौरों उठत किरन ॥५॥

ए मंदिर झरोखे बन पर, झलकत हैं कई नंग ।
बन फूल फल बेलियां, लगत झरोखों संग ॥६॥

कई रंग नंग झलकत, जिमी झलके दिवालों बन ।
सो छाए रही जोत आसमान में, पसु पंखी नूर रोसन ॥७॥

जिमी आकास बिरिख नूर के, पात फूल फल नूर ।
दिवाल झरोखे नूर के, क्यों कहूं नूर जहूर ।।८।।

जात अलेखे पंखियों, पसु अलेखे जात ।
जात जात अनगिनती, क्यों कर कहूं विख्यात ।।९।।

पसु पंखी अति सुन्दर, बोलत अमृत रसान[1] ।
सुन्दरता केस परन की, क्यों कर करों बयान ॥१०॥

कई विध बानी बोलहीं, कई विध जिकर सुभान ।
कई दिन रातों रटत हैं, मुख मीठी कई जुबान ॥११॥

मीठे नैन बैन मुख मीठे, सोभा सुंदर अमान ।
जिन विध धनी रीझहीं, खेलें बोलें तिन तान ॥१२॥

विचित्र बानी माधुरी, बन में गूंजें करें गान ।
चेतन चैन जो चातुरी, क्यों कर करूं बखान ॥१३॥

आए दरवाजे आगे खड़े, खेलोने अति घन ।
स्याम स्यामाजी साथ को, पसु पंखी लेवें दरसन ॥१४॥

ठौर खेलन के चित धरो, विध विध के बन माहें ।
केहेती हों आगूं तुम, जो हिरदे चढ़ चढ़ आए ॥१५॥

आगूं धाम के बन भला, जमुना जी सातों घाट ।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच जल कठेड़ा पाट ॥१६॥

घाट पाट जल ऊपर, अमृत बन हैं जांहें ।
इन बन की सोभा क्यों कहूं, मेरो सब्द न पोहोंचे तांहें ॥१७॥

झीलन स्यामा संग राज सों, साथें किए जल केलि ।
इन समें के विलास की, क्यों कहूं रंग रेलि ।।१८।

मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर तरफ से चारों द्वार ।
चारों खूंटों थंभ नीलवी, अंबर[2] भर्‌यो झलकार ॥१९॥

१. मीठी बोली । २. आकाश ।

ए बारे थंभों चांदनी, सोभित जल ऊपर ।
साथ बैठा सब फिरता, चारों तरफों पसर ॥२०॥

सोभा बन संझा समें, फल फूल खुसबोए ।
साथ बैठा पाट[1] ऊपर, बीच सुंदर सरूप दोए ॥२१॥

बीच बैठक राज स्यामाजी, साथ गिरदवाए घेर ।
साजे सकल सिनगार, सोभा क्यों कहूँ इन बेर ॥२२॥

साथ बैठा पाट ऊपर, लग कठेड़े भराए ।
जोत करी आकास लों, जानों आकास में न समाए ॥२३॥

कई रंग नंग कठेड़े, परत जल में झांई ।
तेज जोत जो उठत, तले मावे न आकास माहीं ॥२४॥

सो झांई जल लेहेरां लेवहीं, तिनसे लेहेरां लेवे आसमान ।
कई रंग लेहेरें तिनकी, एक दूजी न सके भान ॥२५॥

जल में सिनगार सखियन के,लेहेरां लेवें संग छांहें ।
होए ऊंचे नीचें आसमान लों, केहेनी अचरज न आवे जुबांए ॥२६॥

जेती जुगत पाट ऊपर, सब लेहेरां लेवें माहें जल ।
जानों तले ब्रह्मांड दूजो भयो, भयो आसमान जोत सकल ॥२७॥

बन पाट जोत आसमान लों, सब देखत जल माहें ।
एक नयो अचंभोए बन्यो, केहेनी में आवत नाहें ॥२८॥

ज्यों ज्यों जल लेहेरां लेवहीं, त्यों त्यों तले ब्रह्मांड डोलत ।
कई विध तेज किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत ॥२९॥

ए ब्रह्मांड कह्यो न जावहीं, पर समझाए न निमूने बिन ।
सब्दातीत के पार की, बात केहेनी झूठी जिमी इन ॥३०॥

हर घाटों सोभा कई विध, कई जुदे जुदे सुख सनंध ।
बन नीके अपना देखिए, रस सीतल वाए सुगंध ॥३१॥

१. जमुनाजी के किनारे बारादरी पाट घाट ।

क्यों कहूं सोभा बन की, और छाए रही फूल बेल ।
तले खेलें सैयां सरूपसों, आवें एक दूजी कंठ मेल ॥३२॥

जिमी बन जुबां न आवहीं, तो क्यों कहूं सिनगार जहूर ।
सुन्दरता सरूपों की, कई रस सागर भर पूर ॥३३॥

अब क्यों कहूं जोत सरूपों की, और सुन्दरता सिनगार ।
वस्तर भूखन इन जिमी के, हुआ आकास उद्दोतकार ॥३४॥

कई रंग के नकस, कई भांत बेल फूल माहें ।
कई रंग इनमें जवेर, इन जुबां में आवत नाहें ॥३५॥

इन बेल फूल कई पांखड़ी, तिन हर पाखंड़ी[1] कई नंग ।
तिन नंग नंग कई रंग उठें, तिन रंग रंग कई तरंग ॥३६॥

ए स्वाद आतम तो आवहीं, जो पलक न दीजे भंग ।
अरस-परस एक होवहीं, परआतम आतम संग ॥३७॥

अब भूखन की मैं क्यों कहूं, जो इत हैं हेम मनी ।
कई विध की इत धात है, नंग जात नाहीं गिनी ॥३८॥

क्यों कहूं इन बानी की, मुख से उचरत जे ।
मीठी मीठी मुसकनी, सब भीगे इस्क के ॥३९॥

हँसत नेत्र मुख नासिका, श्रवन हँसत चरन ।
भों भृकुटी गाल अधुर, हँसत सिनगार भूखन ॥४०॥

चाल चातुरी कहा कहूं, लटक चटक भरे पाए ।
मटके अंग मरोरते, कछू ए गत कही न जाए ॥४१॥

ए सुख सरूपों की मुसकनी, रंग रस गत मुख बान ।
ए भोम बन धनी धाम को, रेहेस लीला नित्यान ॥४२॥

अब क्यों कहूँ भूखन की, और क्यों कहूँ बानी मिठास ।
क्यों कहूँ रेहेस[2] जो पिउ को, जो अंग अंग में उलास ॥४३॥

१. पत्ती । २. रहस्य, भेद ।

इन जिमी इन बन में, करें खेल सरूप जो एह ।
कहा कहूँ इन विलास की, जो करत प्रेम सनेह ॥४४॥

कई रंग रेहेस संग धनी के, केते कहूँ विलास ।
प्रेम प्रीत सनेह कई रीत, मीठी मुसकनी कई हाँस ॥४५॥

नैन सों नैन लेत रंग सैंनें[१], अरस-परस उछरंग[२] ।
उर मुख नेत्र कर कंठ, यों सुख सब विध अंग ॥४६॥

बंके नैन समारे सर[३] बंके, बंकी[४] सारस भों बंकी ।
बंके बैन लगत बान बंके, बंकी चलत बंक लंकी[५] ॥४७॥

रस लेत धाम के सरूप सों, एक दूजी को ठेल ।
विविध विहार[६] अलेखे अंगों, क्यों कहूं खुसाली खेल ॥४८॥

अंग इस्क इन भोम के, अलेखे अंग असल ।
कई रंग रस सरूप सों, जुदे जुदे या सामिल ॥४९॥

कहा कहूं वस्तर भूखन की, नूर रोसन जोत उजास ।
स्याम स्यामाजी साथ की, अंग अंग पूरत आस ॥५०॥

ए जोत में सोभा सुन्दर, देखिए हिरदे में आन ।
भर भर प्याले पीजिए, देख केहे सुन कान ॥५१॥

भोम बन तलाब सोभित, कुन्ज-बन बीच मंदिर ।
कहा कहूं गलियन की, छाया प्रेमल सुंदर ॥५२॥

नरमाई इन रेत की, उज्जल जोत सुपेत ।
खुसबोए कही न जावहीं, निकुन्ज-बन या रेत ॥५३॥

सोभा पाल तलाब की, कही न जाए जुबां इन ।
बन द्योहरी जल मोहोल की, रोसन रोसन में रोसन ॥५४॥

द्योहरियां सोभित ताल की, पाल पांवड़ियां[७] अन्दर ।
सोभा कहा कहूं सब जड़ित की, बीच मोहोल जल ऊपर ॥५५॥

१. संकेत । २. प्रसन्नता । ३. मांग । ४. तिरछे । ५. कमर । ६. क्रीड़ा । ७. सीढियां ।

जुदी जुदी जुगतें सोभित, बन मोहोलों लिया घेर ।
गिरद झरोखे नवों भोम के, बीच धाम बन चौफेर ॥५६॥

याही भांत अछर की, बीच बन गलियां जानवर ।
खेल खेलें अति सोहने, क्यों बरनों सोभा दोऊ घर ॥५७॥

साम सामी दोऊ दरबार, उठत रोसनी नूर ।
क्यों कहूं इन जुबानसों, करें जंग दोऊ जहूर ॥५८॥

आगूं बड़े द्वार के, बीस थंभ तरफ दोए ।
रंग पांचों नूर जहूर के, ए सिफत किन मुख होए ॥५९॥

द्वार आगूं दोए चबूतरे, दोए तले बीच चौक ।
हरा लाल दोऊ पर दरखत, हक हादी रूहों ठौर सौक[1] ॥६०॥

भोम बन आकास का, अवकास न माए उजास ।
कछुक आतम जानहीं, सो कह्यो न जाए प्रकास ॥६१॥

महामत कहे बन धाम का, विध विध दिया बताए ।
जो होसी ब्रह्मसृष्ट का, ए बान फूट निकसे अंग ताए ॥६२॥

॥प्रकरण॥५॥चौपाई॥३६८॥

जमुना जोए किनारे सात घाट ॥ केल का घाट ॥

कतरे[2] कई केलन के, लटक रहे जल पर ।
आगे पीछे कोई नहीं, सब सोभित बराबर ॥१॥

दिवालां थंभन की, नरमाई अतंत ।
छाया पात गली मन्दिरों, तले उज्जल रेत चिलकत[3] ॥२॥

कई चौक ठौर खेलन के, छाया पात सीतल ।
खूबी जुबां ना केहे सके, रेत मोती निरमल ॥३॥

कच्चे पक्के केलों कतरे, एक खूबी और खुसबोए ।
जुदी जुदी जिनसों सोभित, सुन्दर चौक में सोए ॥४॥

१. रुचि । २. गुच्छे । ३. चमकती ।

सैयां आवत झीलन को, निकस मन्दिरों द्वार ।
ए समया कह्यो न जावहीं, सोभा सिफत अपार ।।५।।
ए घाट पोहोंच्या बड़े वन को, जित हिंडोलों हींचत ।
उत चल्या किनारे जमुना, हद लिबोई से इत ।।६।।

घाट लिबोई[1] का

छत्रियां लिबोइयन की, सुगंध सीतल अति छांहें ।
पेड़ जुदे जुदे लम्बी डारियां, मिल गैयां माहों माहें ।।७।।
कई विध के फल लटकत, जल पर बनी जो हार ।
लटके जवेर जड़ाव ज्यों, ऐसी बन की रची किनार ।।८।।
या विध फल छाया मिने, बनमें झूमत अन्दर ।
कहूं हारे कहूं फिरते, कई रंग चन्द्रवा सुन्दर ।।९।।
सोभा तले रेतीय की, कहा कहूं छाया ऊपर ।
कही न जाए लिबोई[1] घाट की, सोभा अचरज तले भीतर ॥१०॥
पेड़ जुदे जुदे गेहेरी छाया, सब पेड़ों छत्री एक ।
देख देख के देखिए, जानों सबसे ए ठौर नेक ॥११॥
धाम छोड़ आगे चल्या, तरफ चेहेबच्चे[2] पास ।
इन बन की सोभा क्यों कहूं, जित नित होत विलास ॥१२॥
जब खेलें इत सखियां, स्याम स्यामाजी संग ।
तब सोभा इन बन की, लेत अलेखे रंग ॥१३॥

घाट अनार का

ए बन खूबी देत हैं, चल्या दोरी बंध हार ।
फल नकस की कांगरी, लटकत जल अनार ॥१४॥
केतिक छाया जल पर, केतिक छाया बार[3] ।
ए दोऊ बराबर चली, जमुना बांध किनार ॥१५॥

१. नींबू । २. जलकुंड । ३. नदी के किनारे पर ।

घाट अनार को अति भलो, एकल छत्री सब जान ।
घट बढ़ काहूं न देखिए, छाया गेहेरी सब समान ॥१६॥

जो जहां घाट बन देखिए, जानों एही बन विसेक ।
एक से दूजा अधिक, सो कहां लो कहूं विवेक ॥१७॥

कहूं फूल कहूं फल बने, कहूं पात रहे अति बन ।
जुदी जुदी जुगतें मंडप, जानों बहु रंग मनी कंचन ॥१८॥

इन पेड़ों खूबी[1] क्यों कहूं, देख बन होइए खुसाल ।
रोसन रेत खुसबोए बन, आए लग्या दिवाल ॥१९॥

अमृत बन-घाट पाट का

दोऊ पुलों के बीच में, सोभित सातों घाट ।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच थंभ चांदनी पाट ॥२०॥

अमृत बन अति सोभित, घाट पाट का जे ।
आगूं दरवाजे निकट, बन बन्या जो सुन्दर ए ॥२१॥

कई रंग के इत बिरिख हैं, नीले पीले सेत लाल ।
क्यों कहूं सोभा इन मुख, जाकी पूरन सिफत कमाल ॥२२॥

अखोड़[2] अंजीर बन अमृत, ऊपर छाया अंगूर ।
एक छाया पात दिवाल लो, क्यों कर बरनों ए नूर ॥२३॥

कई रंग हैं एक पात में, कई रंग हैं फूल फल ।
अब क्यों बरनों मैं इन जुबां, कई बन हैं सामिल ॥२४॥

केते रंग एक पात में, केते रंग एक फूल ।
केते रंग एक फल में, केते रंग डाल मूल ॥२५॥

ए बन जोत इन भांत की, रोसन करत आसमान ।
आप अपना रंग ले उठत, कोई सके न काहूं भान ॥२६॥

१. विशेषता । २. अखरोट ।

कई मेवे इन बन में, केती कहूं जिनस ।
जुदे जुदे स्वाद कई विध के, जानो एक से और सरस ॥२७॥
इन पेड़ो खूबी क्यों कहूं, देख बन होइए खुसाल ।
ए रेत रोसन खुसबोए बन, ए निरखत बदले हाल ॥२८॥

घाट जांबू का

निकट घाट पाट के, सोभित है अति बन ।
इन मुख खूबी क्यों कहूं, छत्रियां जांबूअन ॥२९॥
गेहेरी छाया अति निपट, देखत नहीं आसमान ।
जमुना धाम के बीच में, ए बन सोभा अमान ॥३०॥
ए मंडप जानों चंद्रवा, कहूं ऊँचा नीचा नाहें ।
ए सोभा जुबां ना केहे सके, होंस रेहेत दिल माहें ॥३१॥
अनेक रंग इन ठौर के, क्यों कहूं इतका नूर ।
रोसन जिमी प्रफुलित, क्यों कहूं जुबां जहूर ॥३२॥
एह सिफत न जाए कही, जिन बन कबूं न जवाल[1] ।
ए जुबां खूबी तो कहे, जो कोई होवे इन मिसाल ॥३३॥
सिफत न होवे रेत की, ना होवे बन सिफत ।
जो कछू कहूं सो उरे रहे, मेरी जुबां ना पोहोंचत ॥३४॥

घाट नारंगी का

चार हार फल की बनी, जल पर दोरी बंध ।
तले सात सात की कांगरी, माहें नकस कई सनंध ॥३५॥
खुसरंग फल नारंग के, पीलक लिए रंग लाल ।
झांईं उठे माहें जल, ए सोभित इन मिसाल ॥३६॥
नारंग बन की छत्रियां, जाए लगी बट घाट ।
फल फूल पात जड़ित ज्यों, जानों रच्यो अचंभो ठाट ॥३७॥

१. नुकसान ।

एकल छाया रेती रोसन, पूरन सिफत कमाल ।
और अनेक बन आगूं भला, ए हद छोड़ चल्या दिवाल ॥३८॥

इन बन की सोभा अति बड़ी, आवत आतम में जोए ।
इन नैन श्रवन के बल थें, मुखसे न निकसे सोए ॥३९॥

इन बन सोभा अपार है, कछु आतम उपजत सुख ।
तिनको हिस्सो लाखमों, कह्यो न जाए या मुख ॥४०॥

घाट बट का

जो बट बन्यो जमुना पर, अनेक तिनकी डार ।
निपट पसारा इनका, जित बैठ करत सिनगार ॥४१॥

ऊँचा निपट द्योहर ज्यों, तले हाथों डारी लगत ।
डारों डारी अति विस्तरी, सुमार न इन सिफत ॥४२॥

जानों थंभ दिए बडवाईके, फिरते फिरते हार चार ।
सोभा लेत पात फूल, ए बट बड़ो विस्तार ॥४३॥

छत्री पांच ऊपरा ऊपर, जानों रचिया भोम समार ।
एक भोम रेती तले, ऊपर भोम बट चार ॥४४॥

एक पड़त झरोखे जल पर, और तरफ सब बन ।
ऊपर भोम धाम देखिए, दसों दिसा नूर रोसन ॥४५॥

इत बोहोत ठौर खेलन के, कई जिनसें तले ऊपर ।
बैठत दौड़त कूदत, खेलत कई हुनर ॥४६॥

ठेकत हैं कई जल में, और कूद चढ़े कई डार ।
खेल करें कई भांत सों, सब अंगों चंचल हुसियार ॥४७॥

तरफ चारों फिरते हिंडोले, उपली लग भोम जोए ।
धाम तलाव जमुना नारंगी, सखियां हींचत बट पर सोए ॥४८॥

अतंत सोभा इन घाट की, छाया चली जल पर ।
ए बट या और बिरिख, जल छाए लिया बराबर ॥४९॥

घाट बट को अति बड़ो, जल लिए चल्या किनार ।
कई बन इत बहु विध के, जानों बने दोरी बंध हार ॥५०॥

सातों घाट ए कहे, आगे पुल कुंज बन ।
अपना खजाना एह है, महामत कहे मोमिन ॥५१॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥४१९॥

कुंज बन मंदिर

सातों घाट बीच में, पुल मोहोल तरफ दोए ।
दोऊ पांच भोम छठी चांदनी, क्यों कहूँ सोभा सोए ॥१॥

साम सामी झरोखे, झलकत अति मोहोलात ।
पुल दोऊ दूजी किनार लग, बीच जल ताल ज्यों सोभात ॥२॥

तले दस घड़नाले पोरियां, बीच नेहेरें ज्यों चलत ।
स्याम स्यामाजी सखियां, इन मोहोलों आए खेलत ॥३॥

खेल करें जब इन मोहोलों, धनी सुख देत सैयन को ।
कई विध खेल कहूँ केते, आवें ना जुबां मों ॥४॥

इन मोहोल आगूं घाट केल का, इस तरफ आगूं बट घाट ।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच घाट चांदनी पाट ॥५॥

सात घाट को लेयके, आगूं आए अर्स द्वार ।
इत पसु पंखी कई खेलत, ए सिफत न आवे सुमार ॥६॥

चल्या गया बन ताल लों, एकल छत्री अति भिल ।
तलाव धाम के बीच में, आगूं निकस्या चल ॥७॥

जमुना धाम तलाव के, बीच में कई विवेक ।
कुंजवन मंदिर कई रंगों, कहा कहूँ रसना एक ॥८॥

उज्जल रेती मोती निरमल, जोत को नाहीं पार ।
आकास न मावे रोसनी, झलकारों झलकार[1] ।।९।।

कई पुरे इन बन में, तिनके बड़े द्वार ।
तिन द्वार द्वार कई गलियां, तिन गली गली मंदिर अपार ॥१०॥

कई मंदिर इत फिरते, कई चारों तरफों मंदिर ।
तिनमें कई विध गलियां, निकुंज बन यों कर ॥११॥

मंदिर दिवालें गलियां, नकस फल फूल पात ।
मंदिर द्वार देख देख के, पलक न मारी जात ॥१२॥

कई पुरे कई छूटक, कई गलियाँ बने हुनर ।
या गलियों या मंदिरों, सब छाया बराबर ॥१३॥

इन बन बोहोतक बेलियां, सोभा अति सुन्दर ।
फल फूल पात कई रंगों, या बाहेर या अन्दर ॥१४॥

कई छलकत जल चेहेबच्चों, करत झीलना जाए ।
अतन्त खूबी इन बन की, क्यों कहूँ इन जुबांए ॥१५॥

फूल पात जो कोमल, रगाँ तिनमें कोई नाहें ।
तिनके सेज चबूतरे, कई बने जो मोहोलों माहें ॥१६॥

इत कई रंग जवेरन के, तिन कई रंगों कई नूर ।
ए मिसाल इनकी, आकास न माए जहूर ॥१७॥

कई बन स्याह सुपेत हैं, कई बन हैं नीले ।
कई बन लाल गुलाल हैं, कई बन हैं पीले ॥१८॥

कई बन हैं एक रंग के, कई एक एक में रंग दस ।
इन विध कई अनेक हैं, कई जुदे जुदे रंगों कई रस ॥१९॥

फल फूल छाया पात की, खुसबोए जिमी और बन ।
आकास भरयो नूरसों, किया रेत बन रोसन ॥२०॥

१. चमक ।

अनेक मेवे कई भांत के, सो ए कहूं क्यों कर ।
नाम भी अनेक मेवन के, और स्वाद भी अनेक पर ॥२१॥

कई मीठे मीठे मीठरड़े, कई फरसे[१] फरसे मुख पर ।
कई तीखे तीखे तीखरड़े, कई खट्टे खट्टे खटूबर[२] ॥२२॥

इन एक एक में अनेक रस, रस रस में अनेक स्वाद ।
इन विध मेवे अनेक रस, सो कहां लों बरनों आद ॥२३॥

कई मेवे हैं जिमी में, कई बेलियों दरखत ।
कई मेवे फल की खलड़ी[३], कई रस बीज में उपजत ॥२४॥

बोहोत रेती इन ठौर है, निपट सेत उज्जल ।
खेल खुसाली होत है, सखियां पांउं चंचल ॥२५॥

इत कई चौक छाया मिने, कहूं चांदनी चौक ।
स्याम स्यामाजी सखियनसों, खेल करें कई जौक[४] ॥२६॥

क्यों कहूं वन की रोसनी, सीतल वाए खुसबोए ।
ए जुबां न केहे सके, जो सुख आतम होए ॥२७॥

इन बन की हद धामलों, और झरोखों दिवाल ।
इन बन में कई हिंडोले, होत रंग रसाल ॥२८॥

चौक चार उपरा ऊपर, बट पीपल बखान ।
बराबर थंभ छातें, ठौर सोभित सब समान ॥२९॥

घाट के दोऊ तरफ पुल, मिले दोऊ तरफों इन ।
बन नारंगी चन्द्रवा, पोहोंच्या दिवालों रोसन ॥३०॥

चार थंभ बराबर सोभित, उपरा लग ऊपर ।
घट बढ़ न दोऊ तरफों, ए सोभा अति सुन्दर ॥३१॥

द्वार समान सब देखत, ऊपर सोभा अपार ।
माहें खट छपरें[५] बन की, हिंडोले छातें चार ॥३२॥

१. फीके । २. खट्टे । ३. छिलका । ४. आनंद । ५. छे डांडे वाले सिंघासन जैसे ।

कई हिंडोले एक छातें, छातें छातें खट अनेक ।
चारों तरफों हार देखिए, जानों एक एक थें विसेक ॥३३॥

राज स्यामाजी सखियां, जब इत आए हींचत ।
इन समें बन हिंडोले, सोभा क्यों कर कहूँ सिफत ॥३४॥

जवेर भी रस जिमी के, और जिमीको रस बन ।
नरमाई फूल पात अधिक, ना तो दोऊ बराबर रोसन ॥३५॥

चढ़ आवत बादलियां, सेहेरें घटा तरफ चार ।
इन समें बन सोभित, माहें बिजलियां चमकार ॥३६॥

बोए आवे सुगंध सीतल, उछरंग होत मलार ।
गाजत गंभीर मीठड़ा, इन समें सोहे सिनगार ॥३७॥

हंस चकोर मैना कोइली, करें बन में टहुँकार ।
बोलें बपैया[१] बांबी[२] दादुर[३], करें तिमरा[४] भमरा[५] गुंजार ॥३८॥

हिंडोले हजार बारे, स्याम स्यामाजी हींचत ।
अखंड सुख धनी धाम बिना, कौन देवे इन समें इत ॥३९॥

ए निकुंज बन सब लेयके, जाए पोहोंच्या ताल ।
जमुना धाम के बीच में, ए बन है इन हाल ॥४०॥

जित बोहोत रेती मोती पतले, गड़त घूटन लो पाए ।
इत सबे मिल सखियां, रब्द गुलाटें खाएं ॥४१॥

इत बोहोत रेतीमें सखियां, दौड़ दौड़ देत गुलाटें ।
कूदें दौड़े ठेकत हैं, रेत उड़ावें पांउँ छांटें ॥४२॥

कबूं दौड़त राज सखियां, सबे मिलके जेती ।
हाँसी करत जमुना त्रट, जित बोहोत गड़त पांउँ रेती ॥४३॥

अनेक रामत रेतीय में, बहुविध इन ठौर होत ।
ए बन स्याम स्यामाजी को, है हाँसी को उद्दोत ॥४४॥

१. पपीहा । २. एक कीड़ा । ३. मेंढ़क । ४. पतंगा । ५. भौंरा (भ्रमर) ।

कहूं कहूं सखियां ठेकत, माहें रेती रब्द कर ।
पीछे हँस हँस ताली देयके, पड़त एक दूजी पर ॥४५॥

एकल छत्री सब बनकी, भांत चंद्रवा जे ।
फेर फेर उमंग होत है, ठौर छोड़ी न जाए ए ॥४६॥

फेर फेर इतहीं दौड़त, कहूं ठेकत दौड़त गिरत ।
सब सखियां मिल तिन पर, फेर फेर हाँसी करत ॥४७॥

केते खेल कहूं सखियन के, जो करत बन नित्यान ।
खेल करें स्याम स्यामाजी, सखियों खेल अमान ॥४८॥

महामत कहे ऐ मोमिनों, देखो ताल पाल के बन ।
ए लीजो तुम दिल में, करत हों रोसन ॥४९॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥४६८॥

॥ हौज कौसर ताल जित जोए कौसर मिली ॥

अब कहूं मैं ताल की, अन्दर आए सको सो आओ ।
जो होवे रूह अर्स की, फेर ऐसा न पावे दाओ ॥१॥

एक हीरे की पाल है, तिनमें कई मोहोलात ।
गिरद द्योहरी कई बन हैं, क्यों कहूं फल फूल पात ॥२॥

जब आवत इत अर्स से, चढ़िए इन घाट ताल ।
चबूतरे दोए द्योहरी, सीढ़ियां चढ़ते होत खुसाल ॥३॥

ए जो कही दो द्योहरी, तिन बीच पौरी दोए ।
एक आगूं चबूतरा, दूजी आगूं द्योहरी सोए ॥४॥

इतथें सीढ़ियां चढ़ती, ऊपर आए पोहोंची किनार ।
दोऊ तरफ दोए चबूतरे, बीच चौक खूंटों चार ॥५॥

ए बड़ा घाट तरफ अर्स के, फिरते तीन घाट तरफ और ।
बने गिरदवाए पाल पर, जुदी जिनसों चारों ठौर ॥६॥

ताल बीच टापू[1] बन्यो, मोहोल बन्यो तिन पर ।
तिन गिरदवाए जल है, खूबी होज कहूं क्यों कर ।।७।।

नेक कहूं तिनका बेवरा, चारों तरफ बन पाल ।
अव्वल बड़े घाट से, ए जो हौज कौसर कह्या ताल ।।८।।

जो झुन्ड ताल की पाल पर, ऊंचा अतंत है सोए ।
फेर आए लग्या भोम सों, इन जुबां सोभा क्यों होए ।।९।।

एह झुन्ड है घाट पर, और पाल ऊपर सब बन ।
फिरता आया झुन्ड लो, पोहोंच्या पावड़ियों रोसन ॥१०॥

और झुन्ड जो दूसरा, तरफ दाहिनी सोए ।
छे छाते सीढ़ियों पर, बांधी मिल कर दोए ॥११॥

जो कहे झुन्ड दोऊ तरफ के, दोए दोए चबूतरे किनार ।
चौथे हिस्से चबूतरे, हार फिरवली खूंटों चार ॥१२॥

चौक बीच आए जब देखिए, दोऊ तरफ बने दोऊ द्वार ।
दोए द्वार दोए सीढ़ियों, चौक सोभित अति अपार ॥१३॥

एक एक बाजू चबूतरे के, तिनके हिस्से चार ।
दो हिस्से खूंट दो दिवालों, और दो हिस्सों बीच द्वार ॥१४॥

चार खूंने[2] दोए चबूतरे, दोऊ तरफों चौथे हिस्से ।
तरफ आठ पेड़ दिवाल ज्यों, सोभा कही न जाए मुख ए ॥१५॥

इसी भांत दोऊ चबूतरे, चारों खूंटों पेड़ दिवाल ।
जब देखिए बीच चबूतरे, चार द्वार इसी मिसाल ॥१६॥

खूंट आठों दोऊ चबूतरे, और आठों बने द्वार ।
सोले दिवालें हुई सबे, सोभा लेत पेड़ों हार ॥१७॥

जानों तीनों चौक बराबर, बारे द्वार दिखाई देत ।
चार चार द्वार चबूतरे, दो सीढ़ियों पर सोभा लेत ॥१८॥

१. द्वीप । २. कोना ।

दस द्वार हुए हिसाब के, हुए बारे देखन मों ।
देखें बीच तीनों चौक से, ए किन मुख खूबी कहों ॥१९॥

दोऊ तरफ द्योहरियां पाल पर, पेड़ सीढ़ियों के लगती ।
दो सीढ़ी ऊपर आगूं द्वारने, चौक आगूं देत खूबी ॥२०॥

एक तरफ एक सीढ़ियों, सामी दूजी के मुकाबिल ।
इसी भांत तरफ दूसरी, सोभा कहा कहे इन अकल ॥२१॥

एक एक सीढ़ियों पर, तरफ दूसरी पेड़ दिवाल ।
तरफ तीसरी पाल पर, चौथी तरफ मोहोल ताल ॥२२॥

दो द्योहरी सोभा लेत हैं, ताल के खूंटों पर ।
द्वार सामी टापूअ के, दोरी बन्ध बराबर ॥२३॥

दोऊ तरफों दो द्योहरी, उतरती जल पर ।
तिन आगूं दोए चबूतरे, सो आए छात अन्दर ॥२४॥

ए जो कही दोए द्योहरी, बीच ऊपर दोए मेहेराब ।
तीनों घाट इन विध, सोभित बिना हिसाब ॥२५॥

ए जो पावड़ियां घाटों पर, जड़ाव ज्यों झलकत ।
अनेक रंगों किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत ॥२६॥

और सीढ़ियां जो बाहेर की, छात आई लग तिन ।
बने छज्जे उपरा ऊपर, ठौर खुसाली खेलन ॥२७॥

ए घाट अति सोहना, चबूतरे बुजरक ।
अति बिराज्या झुन्ड तले, ऊपर छातें इन माफक ॥२८॥

जब हक आवत ताल को, आए बिराजत इत ।
सो खेल जल का करके, ऊपर सौक[1] को बैठत ॥२९॥

पीछे तले या ऊपर, रंग भर रूहें खेलत ।
ए खुसाली खावंद की, जुबां क्या करसी सिफत ॥३०॥

१. शौक ।

कई रंग इन दरखतों, अनेक रंग इन पात ।
अनेक रंग फल फूल में, याकी इतहीं होवे बात ॥३१॥

इन ठौर रेती नहीं, एक जवेर को बन्ध ।
खुसबोए नूर अतंत, क्यों कहूं सोभा सनन्ध ॥३२॥

पाल हीरे की उज्जल, ऊपर रोसन बन छाहें ।
तिनसे पाल सब रोसन, जिमी हरी पाच देखाए ॥३३॥

ए बन बांईं तरफ का, बन्या दोऊ भर पाल ।
देत नूर आकास को, सोभा लेत अति ताल ॥३४॥

अंदर द्योहरियां पाल पर, ऊपर बन बिराज्या आए ।
ए सोभा बन लेत है, ए खूबी कही न जाए ॥३५॥

ऊपर पाल जो द्योहरी, फिरती आगूं गिरदवाए ।
तिन सबों आगूं चबूतरा, तिन दोऊ तरफों उतराए ॥३६॥

यों द्योहरी सब चबूतरों, तिन सीढ़ियां सबको ।
हर द्योहरी हर चबूतरे, सीढ़ियां दोऊ तरफों ॥३७॥

दो सीढ़ियों के बीच में, तले चबूतरे द्वार ।
तिन सब सीढ़ियों परकोटे, चढ़ती कांगरी दोऊ किनार ॥३८॥

सीढ़ियों पर जो चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब ।
मेहेराब आगूं जो चबूतरा, सोभित है ढ़िग आब[1] ॥३९॥

दो दो सीढ़ियों के बीच में, ए जो छोटे कहे दो द्वार ।
तिन पर अजब कांगरी[2], अति सोभित पाल अपार ॥४०॥

पाल ऊपर जो द्योहरी, बीच कठेड़ा सबन ।
ए बैठक सोभा लेत है, कहा कहूं जुबां इन ॥४१॥

१. जल । २. कानिस ।

घाट बांईं तरफ नव द्योहरी का

घाट बांईं तरफ का, चौथे हिस्से तक ।
ऊपर झुण्ड बिराजिया, अति सोभा बुजरक ॥४२॥

ऊपर बनी नव द्योहरी, फिरते आए तले आठ थंभ ।
अदभुत बन्या है कठेड़ा, ए बैठक अति अचंभ ॥४३॥

उतरती दोए द्योहरी, तिन तले दोए चबूतर ।
बीच उतरती सीढ़ियां, तले चौक पानी भीतर ॥४४॥

फेर कहूं इनका बेवरा, ज्यों जाहेर सबों समझाए ।
अब कहूं इन भांतसों, ज्यों मोमिनों हिरदे समाए ॥४५॥

पेड़ चार चारों तरफों, छाया सोभा लेत अतंत ।
हार किनार बराबर, इत ज्यादा दो दरखत ॥४६॥

नव चौकी का मोहोल जो, ए बड़ी ठौर बीच पाल ।
चौथा हिस्सा पाल का, हुई द्योहरी आगूं पड़साल ॥४७॥

इतथें उतरती सीढ़ियां, दाएं बाएं दो द्योहरी ।
हुए तीनों चौक बराबर, सीढ़ियां इतथें तले उतरी ॥४८॥

द्योहरी तले जो चबूतरे, चौक दूजा याही बराबर ।
जल ऊपर जो चबूतरा, आईं सीढ़ियां इत उतर ॥४९॥

अब घाट छोड़ आगे चले, क्यों कहूं खूबी ए ।
एक छाया सब पाल पर, और छाया पाल से उतरती जे ॥५०॥

और हार दोऊ उतरती, लगती तीसरी तले बन ।
इन विध पेड़ बराबर, गिरदवाए सबन ॥५१॥

डारी लटकी जल पर, पेड़ गिरद द्योहरी हार ।
और पेड़ डारों डारी मिली, यों फिरती पाल किनार ॥५२॥

घाट सोले द्योहरी का

जमुना तरफ ताल के, जित जल भिल्या माहें जल ।
द्योहरियां इन बंध पर, जल पर सोभित मोहोल ॥५३॥

तले जाली द्वारें पाल में, जित जल रह्या समाए ।
इत बैठ झरोखों देखिए, जानों पूर आवत हैं धाए ॥५४॥

चार द्योहरियां लग लग, चारों तरफों चार चार ।
सोले बंध पर द्योहरी, थंभ पचीस पांच पांच हार ॥५५॥

पचीस थंभ ऊपर कहे, तले सोले थंभ गिरदवाए ।
सो पोहोंचे दूजी भोम में, भोम बीच की अति सोभाए ॥५६॥

इत कठेड़ा चारों तरफों, बीच कठेड़ा ओर ।
इन बीच चारों हांसों कुंड बन्या, जल जात चल्या इन ठौर ॥५७॥

इत खुली भोम जल ऊपर, चारों तरफों बराबर ।
चारों हिस्से हर तरफों, आधी खुली जिमी जल पर ॥५८॥

ऊपर बैठक तले जल, ए जो कह्या कठेड़ा गिरदवाए ।
इत आए जब बैठिए, तले जल अति सोभाए ॥५९॥

चारों तरफों कुण्ड ज्यों, इत देत खूबी अति जल ।
हाए हाए ए बात करते मोमिन, रूह क्यों न जात उत चल ॥६०॥

चार द्योहरी आगूं चबूतरा, तिन तले घड़नाले चार ।
तिन बीच चारों झरोखे, करें पानी ऊपर झलकार ॥६१॥

आगूं पांच थंभ ऊपर चबूतरा, इसी भांत झरोखों पर ।
सोभा लेत चारों झरोखे, थंभ तले ऊपर बराबर ॥६२॥

ऊपर दोऊ तरफों सीढ़ियां, दोऊ तरफ उतरते द्वार ।
इत आया तले का चबूतरा, परकोटे सोभे दोऊ पार ॥६३॥

जो अंदर चारों घड़नाले, आगूं चबूतरा जल पर ।
तले जल जाली बारों आवत, सोभा इन घाट कहूं क्यों कर ॥६४॥

सीढ़ियों ऊपर जो चबूतरा, बने चारों झरोखे जे ।
इत आगूं सबन के कठेड़ा, अति बन्या ताल पर ए ॥६५॥

सोभा जल जो लेत है, भर्‌यो नूर रोसन आकास ।
बीच लेहेरें लगें मोहोलन को, ए क्यों कहूं खूबी खास ॥६६॥

खेलत जुदी जुदी जिनसों, इत पांउ ना भोम लगत ।
इत खेलें रूहें पाल पर, कई विध दौड़त कूदत ॥६७॥

ए भोम इन विध की, पांउ न खूंचत रेत ।
खेलत हैं इत रूहें, नए नए सुख लेत ॥६८॥

आगूं बन इन घाट के, अतंत सोभा लेत ।
तीसरे झुंड के घाट में, खेलें खावंद रूहें समेत ॥६९॥

घाट तेरे द्योहरी का

द्योहरी चौथे घाट की, देखें पाइयत हैं सुख ।
झुण्ड बन्या इन ऊपर, खूबी क्योंकर कहूं इन मुख ॥७०॥

चौक पर फिरती चांदनी, आठ द्योहरी गिरदवाए ।
पांच द्योहरियां बीच में, तले आठ थंभ सोभाए ॥७१॥

तले फिरता कठेड़ा, चारों तरफों द्वार ।
तले उतरती सीढ़ियां, जल माहें करें झलकार ॥७२॥

जल पर दोए चबूतरे, ऊपर चढ़ती द्योहरी दोए ।
आए पोहोंची थंभन को, अति सोभा घाट पर सोए ॥७३॥

फेर इनका भी कहूं बेवरा, ज्यों हिरदे आवे मोमिन ।
ए चौथा घाट अति सोहना, सुख होए अर्स रूहन ॥७४॥

तेरे चौकी बीच पाल के, आगे पालै की पड़साल ।
गिरद चौकी चार बिरिख की, सोभित झुन्ड कमाल ॥७५॥

उतरी सीढ़ियां पड़साल से, चौक हुआ बीच इत ।
दोऊ चौक दाएं बाएं बने, बीच दोए द्योहरी जित ॥७६॥

इतथें आगूं सीढ़ियां, दोऊ चबूतरों बराबर ।
इत चौक होए सीढ़ी उतरीं, तले आए मिली चबूतर ॥७७॥

मोमिन होए सो देखियो, तुमारा दिल कह्या अर्स ।
चारों घाट लीजो दिल में, दिल ज्यों होए अरस-परस ॥७८॥

ए पाल सारी इन भांतकी, कई विध खेल होत इत ।
या घाटों या पाल पर, हक रूहें खेल करत ॥७९॥

खूबी अजब इन बन की, जो बन ऊपर पाल ।
द्योहरियां उलंघ के, डारें लटक रही माहें ताल ॥८०॥

ऊपर पाल तलाव के, ऊंचा बन अमोल ।
जिनकी लम्बी डारियां, तिनमें बने हिंडोल ॥८१॥

अंदर किनारे पाल पर, द्योहरियां बराबर ।
सोभित किनारे गिरदवाए, अति सोभा सुन्दर ॥८२॥

ऊपर बन बुजरक, कई हिंडोलों हींचत ।
कई डारी बन झूमत, कई विध खेल करत ॥८३॥

फिरते आए घाट लग, चारों घाट बराबर ।
कम ज्यादा इनमें नहीं, अब देखो पाल अंदर ॥८४॥

॥ पाल अंदर की मोहोलात ॥

आगूं फिरता चबूतरा, हाथ लगता आब[1] ।
लग लग द्वार ऊपर बने, जिन बिध होत मेहेराब ॥८५॥

१. जल ।

ताल में द्वार लग लग, पौरें बनी बीच पाल ।
झलकत हैं थंभ अगले, सोभा लेत है ताल ॥८६॥

अब क्यों कहूं पाल अंदर की, कई थंभ कई मोहोलात ।
कई देहेलाने कई मंदिर, ए खूबी कही न जात ॥८७॥

थंभ दोए हारें बनी, अंदर मोहोल कई और ।
कई बैठकें जुदी जुदी जिनसों, कहां लग कहूं कई ठौर ॥८८॥

एह जुगत सब पाल में, गिनती न होए हिसाब ।
थंभ द्वार जो झलकत, सो कहा कहे जुबां ख्वाब ॥८९॥

और सीढ़ियां चारों घाट की, इत दरवाजे नाहें ।
तित मोहोलात है अंदर, बिना हिसाबें माहें ॥९०॥

चारों हिस्से ताल के, मोहोल बने इन ठाट ।
और झुण्ड ऊपर चारों चौक के, ए जो बने चारों घाट ॥९१॥

घाट झुण्ड तलाव के, पावड़ियां तरफ जल ।
द्योहरियां चबूतरे, सोभित इन मिसल ॥९२॥

चौक थंभ कठेड़े, बैठक चारों घाटन ।
जो बन खूबी पाल पर, सो क्यों कहूं जुबां इन ॥९३॥

फेर कहूं पाल ऊपर, जो देखी माहें दिल ।
सो कहूं मैं अर्स रूहन को, देखें मोमिन सब मिल ॥९४॥

द्योहरी आगूं चबूतरे, खुले झरोखे ताल पर ।
सबों बिराजत कठेड़ा, नूर भराए रह्यो अंबर ॥९५॥

चारों घाटों के बीच बीच, गिरदवाए द्योहरियां सब ।
याही विध आगूं सबों, ऊपर बन छाए रही छब ॥९६॥

जो फिरते आए चबूतरे, दोरी बंध बराबर ।
ऊपर बन सोभे दोरी बंध, कहूं गेहेरा नहीं छेदर ॥९७॥

सब खुले झरोखे ढ़ांप के, बन झलूब आया जल पर ।
ए सोभा अति देत है, जो देखिए रूह की नजर ॥९८॥

ऊपर दयोहरी तले चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब ।
परकोटे तले छोटे द्वारने, फिरता बन सोभे तले आब ॥९९॥

आब ऊपर जो चबूतरा, फिरते देखिए छोटे द्वार ।
दे परिकरमा आइए, देख आइए घाट चार ॥१००॥

महामत कहे मोमिन को, गेहेरा गंभीर जल देख ।
टापू बन्यो बीच हौज के, सोभित अति विसेख ॥१०१॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥५६९॥

टापू के बीच मोहोलात[1] चौसठ पांखड़ी की

बन्यो ताल के बीच में, चारों तरफों जल ।
बन झरोखे गिरदवाए, सोभित बाग मोहोल ॥१॥

अब कहूं ताल के मोहोल की, जल गिरदवाए गेहेरा गंभीर ।
लेहेरें लगें बीच गुरज के, जल खलकत उज्जल खीर ॥२॥

ज्यों एक फूल चौसठ पांखड़ी, चार द्वार बने गिरदवाए ।
गुरज साठ बने तिन पर, ए खूबी कही न जाए ॥३॥

एक टापू बन्यो बीच जल के, मोहोल गुरज[2] तिन पर ।
दयोहरियां ताल किनार पर, फिरती पाल बराबर ॥४॥

ए चौक बने चारों तरफों, और पाल ऊपर चार घाट ।
चारों द्वार टापूअके, बने सनमुख ठाट ॥५॥

दयोहरियां घाटन पर, चारों जुदी जिनस ।
देख देख के देखिए, जानों एक पे और सरस ॥६॥

पाल टापू हीरे एक की, तिनमें कई मोहोलात ।
अनेक रंग नंग देखत, असल हीरा एक जात ॥७॥

१. महल । २. गुर्ज ।

जब खूबी ताल यों देखिए, चढ़ चांदनी पर ।
फिरती पाल बन द्योहरी, जल सोभित अति सुंदर ।।८।।

तले सोभा चारों द्वारने, आगूं कठेड़े बैठक ।
आराम लेवें इन ठौरों, जब आवें इत हादी हक ।।९।।

बीच-बीच में बन बिराजत, गुरज छज्जे जल पर ।
छे छज्जे फिरते बने, सब गुरजों यों कर ॥१०॥

तीन छातें चौथी चाँदनी, सब गुरजों पर इत ।
तले छज्जे जल हाथ लग, ऊपर अति सोभित ॥११॥

ए टापू जिमी जवेर की, बीच बीच बन्या बन ।
दोनों तरफों छज्जे बने, ऊपर बन रोसन ॥१२॥

तीनों तरफों गुरज के, छज्जे बने यों आए ।
उपरा ऊपर भी तीन हैं, क्यों कहूं सोभा ताए ॥१३॥

तीन तीन छज्जे तरफ जल के, छे छज्जे बन पर ।
अन्दर गिरदवाए मोहोलात, बीच बैठक चबूतर ॥१४॥

दो गुरजों बीच मंदिर, हर मन्दिर झरोखे ।
तीन तीन उपरा ऊपर, बने तीनों भोमों के ॥१५॥

गुरज गुरज तीन द्वारने, तीनों भोमों में ।
कई एक ठौरों चरनियां, ऊपर चढ़िए जिनों से ॥१६॥

सामी और हार बनी, मन्दिर सामी मन्दिर ।
तिनमें साठ बाहेर, और साठ भए अन्दर ॥१७॥

बीच चेहेबच्चा जल का, कई फुहारे छूटत ।
फिरते द्वार इन चौक के, बोहोत सोभा अतन्त ॥१८॥

तीनों भोम चबूतरे, और फिरते मन्दिर द्वार ।
बीच बैठक चबूतरे, बने थंभ तरफ हार ॥१९॥

कही फिरती हार थंभन की, द्वार द्वार आगूं दोए ।
हर मन्दिर दो द्वारने, सोभा लेत अति सोए ॥२०॥

साठ गुरज फिरते कहे, गिरद चांदनी दिवाल ।
सो ए कमर के ऊपर, खूबी लेत कांगरी लाल ॥२१॥

ऊपर चांदनी कठेड़ा, बीच जोड़ सिंघासन ।
राज स्यामाजी बीच में, फिरती बैठक रूहन ॥२२॥

कबूं मिलावा नजीक, मिल बैठें गिरदवाए ।
छोटा तखत दुलीचे पर, बैठी रूहें अंग सों अंग लगाए ॥२३॥

कबूं कबूं बैठियां कुरसियों, रूहें बारे हजार ।
कबूं दो दो एक कुरसी पर, कबूं हर कुरसी चार चार ॥२४॥

कबूं दो दो सै एक कुरसियों, बैठें साठों गुरजों गिरदवाए ।
सो कुरसी दिवालों लगती, यों बैठक कठेड़े भराए ॥२५॥

बीच तखत बिराजत, सबथें ऊंचा गज भर ।
बैठक हक बड़ी रूह, सोभा लेत सब पर ॥२६॥

हक बड़ी रूह बैठें तखत पर, फिरती रूहें बैठत ।
दो दो सै बीच गुरज के, बारे हजार रूहें इत ॥२७॥

चांद चौदमी रात का, बैठें चांदनी नूरजमाल ।
सनमुख सबे बैठाए के, करें खावंद रूहें खुसाल ॥२८॥

अमृत खसम रूहन पर, नूर नजरों सींचत ।
सो रस रूहें रब का, सनमुख रोसन पीवत ॥२९॥

पूरन पांचों इंद्री सरूपें, एक एक में पांच पूरन ।
हर एक में बल पांच का, हर एक में पांच गुन ॥३०॥

एक एक जाहेर सब में, एक एक में चार बातन ।
इन बिध रूहें मुतलक, असल अर्स के तन ॥३१॥

अर्स तन रूहें आतमा, तरफ सबों बराबर ।
पूरन कहावें याही बात से, सब विधों ए कादर ॥३२॥

सरूप बैठे सब मिल के, घेर के गिरदवाए ।
सबों सुख पूरन हक का, रूहें लेवें दिल चाहे ॥३३॥

अब और देऊँ एक नमूना, इनको न पोहोंचे सोए ।
पर कहे बिना रूहन के, दिल रोसन क्यों होए ॥३४॥

एक जरा इन जिमी का, ताको नूर न माए आकास ।
तिन जिमी के जवेर को, होसी कौन प्रकास ॥३५॥

सो जवेर आगूं रूहन के, कैसा देखावें नूर ।
ज्यों सितारे रोसनी, बल क्या करे आगूं सूर ॥३६॥

आगूं रूह सूरत सूर के, जवेर गए ढँपाए ।
तो सोभा हक जात की, क्यों कर कही जाए ॥३७॥

जो रूहें अंग अर्स के, तिन चीज न कोई सोभाए ।
वाहेदत में बिना वाहेदत, और कछू ना समाए ॥३८॥

वस्तर भूखन हक जात के, सो हक जातै का नूर ।
कोई चीज अर्स अंग को, कर ना सके जहूर ॥३९॥

सोभा अंग अर्स के, या वस्तर या भूखन ।
होवे दिल चाह्या कई विध का, सोभा सिनगार माहें खिन ॥४०॥

सो हेम नंग अति उत्तम, इन रूहों के माफक ।
वस्तर भूखन साज के, जाए देखें नजर भर हक ॥४१॥

ए सोभा सब साज के, रूहें ले बैठी अपना नूर ।
सो आगूं हक बड़ी रूह नूर के, ए क्यों कर करूं मजकूर ॥४२॥

तखत रूहों बीच चांदनी, बैठे बड़ी रूह खावंद ।
सो थंभ हुआ चांदनी, ऊपर आया पूरन चन्द ॥४३॥

जेती फिरती चांदनी, भर्‌यो नूर उद्दोत ।
ले सामी चन्द रोसनी, भयो थंभ एक जोत ॥४४॥

इन नूर थंभ की रोसनी, पड़ी ताल पर जाए ।
जल थंभ कियो आसमान लों, घेर्‌यो चंद गिरदवाए ॥४५॥

जंग करे जोत थंभ की, अर्स जोतसों आए ।
मिली जोत जिमी बन की, ए नूर आसमान क्यों समाए ॥४६॥

महामत कहे ए मोमिनों, जो होवे अरवा अर्स ।
सो प्रेम प्याले ल्यो भर भर, पीजे हकसों अरस-परस ॥४७॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥६१६॥

फूलबाग

और पीछल पाल तलाव के, कई बन सोभा लेत ।
ए बन आगूं फिरवल्या, परे धाम लों देखाई देत ॥१॥

ताल को बीच लेय के, मिल्या धाम दिवालों आए ।
कई मेवे केते कहूं, अगनित गिने न जाए ॥२॥

तरफ पीछल धाम के, अंन बन मेवे अनंत ।
फल फूल पात कंदमूल, ए कहांलों को गिनत ॥३॥

ऊपर झरोखे धाम के, बन आए लग्या दिवाल ।
वाही छाया तले रेती रोसन, जैसा आगे कह्या बन हाल ॥४॥

बाग बने फूलन के, लगत झरोखे दिवाल ।
जब आवत हैं इन छज्जों, रूहें इत होत खुसाल ॥५॥

लग लग होए के बैठत, ऊपर छज्जों के आए ।
आगूं उठत ऊँचे फुहारे, जल झलकत मोती गिराए ॥६॥

आगूं सबन के फुहारे, और आगूं सबों के फूल ।
देख देख ए चेहेबच्चे, सबे होत सनकूल ॥७॥

छलकत छोले चेहेबच्चे, नेहेरें चलत तेज नूर ।
सो विचरत सब बगीचों, पीवत हैं भरपूर ।।८।।

जो लग्या चबूतरे चेहेबच्चा, बुजरक बड़ा विसाल ।
उतरता जल इतथें, नेहेरें चलत इन हाल ।।९।।

विचरत जल चेहेबच्चों, सो सिरे लगे पोहोंचत ।
इसी भांत झरोखे बगीचे, माहें रूहें केलि करत ॥१०॥

इन ऊपर छज्जे बिराजत, सिरे लगे एकै हार ।
ऊपर खूबी इन विध, सोभा लेत किनार ॥११॥

इत खेलत कई जानवर, मृग मोर बांदर ।
कई मुरग तीतर लवा[1] लरें, कई विध कबूतर ॥१२॥

कई विध देत गुलाटियां, कई उलटे टेढ़े चलत ।
कई कूदें फांदें उड़ें लड़ें, कई विध खेल करत ॥१३॥

एक नाचें गावें स्वर पूरें, एक बोलत बानी रसाल ।
नए नए रूप रंग ल्यावहीं, किन विध कहूं इन हाल ॥१४॥

और केते कहूं जानवर, छोटे बड़े करें खेलि ।
ए खुसाली खावन्द की, रूहों करावें इस्क केलि[2] ॥१५॥

ए खेलौने खावन्द के, सब विध के सुखकार ।
कोई विद्या छिपी ना रहे, जानें खेल अपार ॥१६॥

जित तले दस खिड़कियां, इतथें रूहें उतरत ।
फिरत सैर इन बन को, जब कबूं आवें हक इत ॥१७॥

कई बन हैं फूलन के, इन बन को नाहीं सुमार ।
कई भांतें रंग कई जुगतें, कई कांगरियां किनार ॥१८॥

हिसाब नहीं फूलन को, हिसाब ना चित्रामन ।
हिसाब नहीं खुसबोए को, हिसाब ना रंग रोसन ॥१९॥

१. तीतर के जाति का एक पक्षी । २. क्रीड़ा ।

कई मेवे फलन के, कई मेवे हैं फूल ।
कई मेवे डार पात के, कई मेवे कन्दमूल ॥२०॥

कई बन आगूं आए मिल्या, जो बन बड़ा कहियत ।
ऊंचे बिरिख अति सुन्दर, जित हिंडोलों हींचत ॥२१॥

कई बिरिख कई हिंडोले, कई जुदी जुदी जिनस ।
स्याम स्यामाजी साथजी, सुख लेवें अरस-परस ॥२२॥

कहूं कहूं लम्बे हिंडोले, कहूं तिनसें बड़े अतंत ।
कहूं कहूं छोटे बने, कई जुदी जुदी जुगत ॥२३॥

कहूं कहूं सेज्या हिंडोले, कहूं हिंडोले सिंघासन ।
कहूं कहूं खड़ियां हींचत[1], यों खेल होत इन बन ॥२४॥

एक सोए हिंडोले लेवहीं, एक बैठके हींचत ।
एक उठें एक बैठत हैं, यों जुगल केलि करत ॥२५॥

इन बन जिमी की रोसनी, मावत नहीं आकास ।
इन रोसन हिंडोलों हींचत, क्यों कहूं खूबी खास ॥२६॥

इस तरफ चबूतरा धाम का, आए मिल्या बन इत ।
महामत कहे इन अकलें, क्यों कर करूं सिफत ॥२७॥

॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥६४३॥

लाल चबूतरा बड़े जानवरों के मुजरे[2] की जागा

ए जो बड़ा चबूतरा, लगता चल्या दिवाल ।
इत छाया बड़े बन की, ए बैठक बड़ी विसाल ॥१॥

सोभा लेत अति कठेड़ा, तमाम चबूतर ।
तले लगते दरखत, सब पेड़ बराबर ॥२॥

पेड़ लम्बे उपली छातलों, छत्रियां छज्जों पर ।
लम्बे छज्जे बड़ी बैठक, इत मोहोला[3] लेत जानवर ॥३॥

१. झुलती है । २. अभिवादन(गा कर या नाच कर खुश करना) । ३. दर्शन ।

जवेर ख्वाब जिमी के, ए खूब ख्वाब में लगत ।
ए झूठ निमूना क्यों देऊं, अर्स बका के दरखत ।।४।।
रोसनी इन दरखत की, पेड़ डार या पात ।
नूर इन रोसन का, अवकास में न समात ।।५।।
एक डार जरे की रोसनी, भराए रही आसमान ।
तो कौन निमूना इनका, जो दीजिए इनके मान ।।६।।
जिमी रंचक रेत की, कछू दिया न निमूना जात ।
तो क्यों कहूं फल फूल पात की, और झरोखे मोहोलात ।।७।।
ऊपर तमाम चबूतरे, बिछाया है दुलीच ।
दोऊ तरफों बैठी रूहें, हक हादी सिंघासन बीच ।।८।।
बैठे तिन सिंघासन, हक अपना मिलावा ले ।
इन अंग की अकलें, क्यों कहूं खूबी ए ।।९।।
बैठे जुगल किसोर, ऊपर दोऊ के छत्र ।
आगे जिकर करें कई विधसों, और बजावें बाजंत्र ॥१०॥
आवत मोहोलें मुजरे, इतका जो लसकर ।
ताके एक बाल के नूरसों, रही भराए जिमी अंबर ॥११॥
देखावत रूहन को, पसु पंखी लराए ।
हँसत हक अरवाहों सों, नए नए खेल खेलाए ॥१२॥
कई गरूड़ गरजें लड़ें, कई मोर मुरग कुलंग[१] ।
लड़े चढ़ें ऊंचे आसमान लों, फेर के लड़ें जंग बंग ॥१३॥
केसरी[२] काबली हाथी, बाघ बीघ[३] बांदर ।
पस्व घोड़े दीपड़े[४], लड़ें सूअर सांम्हर[५] ॥१४॥
चीते चीतल[६] बैल बकर[७], लड़ें बरबरे हरन ।
जरख[८] चरख रोझ[९] रीछड़े, लड़त आवें अरन[१०] ॥१५॥

१. लंबी टांग का पक्षी, कुक्कुट । २. केसरी सिंह । ३. भेड़िया । ४. तेंदुआ । ५. बारासिंघा । ६. एक प्रकार का हिरन । ७. गाय । ८. लकड़बग्घा । ९. नीलगाय । १०. जंगली भैंसा ।

लोखरी कूकरी[1] जंबुक[2], लड़त हैं मेढ़े ।
खरगोस बिल्ली मूस्क, लरें छिकारे[3] गैंड़े ॥१६॥

कई जातें पसुअन की, और कई जातें जानवर ।
हिसाब न आवे गिनती, ए खेल कहूं क्यों कर ॥१७॥

कई रिझावें लड़ के, कई नाच मिलावें तान ।
कई उड़ें कूदें फांदहीं, कई बोलत मीठी बान ॥१८॥

कई देत गुलाटियां, कई साधत स्वर समान ।
कई खेलें चलें टेढ़े उलटे, कई नई नई मुख बान ॥१९॥

कई नाचत हैं पांउं सों, कई नचावें पर ।
कई नाचत हैं उड़ते, कई हाथ चोंच सिर लर ॥२०॥

कई हँसावत हक को, भांत भांत खेल कर ।
कोई हिकमत छिपी ना रहे, ए ऐसे पसु जानवर ॥२१॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जो इन मेले में बसत ।
ए सोई रूहें जानहीं, जो इन हक की सोहोबत ॥२२॥

क्यों कहूँ इन सुखकी, जो हक देत मुख बोल ।
क्यों देऊँ निमूना इनका, याको रूहें जानें तौल मोल ॥२३॥

क्यों कहूँ इन सुखकी, जो धनी देत कर हेत ।
आराम इन इस्क का, सोई जाने जो लेत ॥२४॥

क्यों कहूं सुख सनमुख का, जो पिलावें नैनों सों ।
ए सोई रूहें जानहीं, रस आवत हैं जिनकों ॥२५॥

क्यों कहूं इन सुखकी, धनी देवें इस्कसों ।
ए सोई रूहें जानही, हक देत हैं जिनकों ॥२६॥

क्यों कहूं इन सुखकी, हक देत कर प्रीत ।
जो ए प्याले लेत हैं, सोई जानें रस रीत ॥२७॥

१. मुर्गी । २. गीदड़ । ३. हिरन जाति का पशु ।

क्यों कहूं सुख नजीक का, जो इन हकको सोहोबत ।
ए सोई रूहें जानहीं, जो लेवें हर बखत ॥२८॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक रमूज करत ।
ए सोई रूहें जानहीं, जिनका बासा इत ॥२९॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक करें इसारत ।
ए सोई रूहें जानहीं, सामी सैन से समझावत ॥३०॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जो हक देत दायम ।
ए सोई रूहें जानहीं, जो पिएं सराब कायम ॥३१॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक करत हैं हाँस ।
ए सोई रूहें जानहीं, जो लेत खुसाली खास ॥३२॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जाए हक लेत बोलाए ।
सनमुख बातें करके, अमीरस नैन पिलाए ॥३३॥

क्यों कहूं इन रूहनकी, जासों धनी बोलत सनमुख ।
नही निमूना इनका, एही जानें ए सुख ॥३४॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जो प्यारी पिउ के दिल ।
सनमुख बातां करत हैं, इन खावंद सामिल ॥३५॥

क्यों कहूं ताके सुखकी, हक बातें करें दिल दे ।
ए रूहें प्याले जानहीं, जो हाथ धनीके लें ॥३६॥

क्यों कहूं इन सुख की, जाको निरखत धनी नजर ।
प्याले आप धनीय को, सामी देत भर भर ॥३७॥

क्यों कहूं इन सुख की, जो हकसों नैनों नैन मिलाए ।
फेर फेर प्याले लेत हैं, आगूं इन धनी के आए ॥३८॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जो दूर बैठत हैं जाए ।
तितथें धनी बोलाएके, ढ़िग बैठावत ताए ॥३९॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जाको देत धनी चित्त ।
सो धनी आगूं आएके, सामी मीठी बान बोलत ॥४०॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें हक नैन ।
खावंद नजीक बुलाए के, बोलत मीठे बैन ॥४१॥

क्यों कहूं सुख नजीकियों, जाको देखें हक नजर ।
बातें इस्क पिउ अंगे, पिएं प्याले भर भर ॥४२॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें मुख पिउ ।
नैन बैन सुख देत हैं, चुभ रेहेत माहें जिउ ॥४३॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो हक बड़ी रूह अंग नूर ।
आठों जाम इन पिउसों, हँस हँस करें मजकूर[1] ॥४४॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो इन पिउ के आसिक ।
भर भर प्याले लेवहीं, फेर फेर देवें हक ॥४५॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो लगे इन हकके कान ।
करें मजकूर मजाक सों, साथ इन सुभान ॥४६॥

क्यों कहूं सुख इन रूहन के, जासों खेलें हँसें सनमुख ।
पार नहीं सोहागको, इन पर धनीको रूख ॥४७॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, इन पिउसों रस रंग ।
आठों जाम आराम में, एक जरा नहीं दिल भंग ॥४८॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों पोहोर पिउ पास ।
रात दिन सोहोबत में, करें हाँस विलास ॥४९॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों जाम दिन रात ।
प्रेम प्रीत सनेह की, भर भर प्याले पिलात ॥५०॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, जिनका साकी ए ।
हक प्याले इस्क के, भर भर रूहों को दे ॥५१॥

१. वार्तालाप ।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो सदा सोहोबत हक जात ।
जो इस्क आराम में, सो क्यों कहूं इन मुख बात ॥५२॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जिनका हक खावंद ।
आठों जाम रूहन पर, हक होत परसंद ॥५३॥

क्यों कहूं इन सुखकी, जो ख्वाब में गैयां भूल ।
याद देने सुख अर्स के, हकें भेज्या एह रसूल ॥५४॥

क्यों कहूं सुख हाँसीय को, जो ख्वाब में दैयां भुलाए ।
ऊपर फेर फेर याद देत हैं, पर फरामोसी क्योंए न जाए ॥५५॥

क्यों कहूं सुख इनका, जासों हक हाँसी करत ।
ए विध कहूं मैं कितनी, जो रूहों हक खेलावत ॥५६॥

क्यों कहूं इन रूहन की, हक देखावें कई सुख ।
दई सुख बका लज्जत, ख्वाब देखाए के दुख ॥५७॥

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो लेवत आठों जाम ।
बिना हिसाबे दिए आराम, हक का एही काम ॥५८॥

वास्ते इन रूहन के, परहेज लिया हकें ए ।
आठों जाम फेर फेर देऊँ, सुख अर्स का जे ॥५९॥

अब क्यों कहूं इन सुख की, लिया ऐसा परहेज हक ।
जैसा बुजरक साहेब, सुख भी तिन माफक ॥६०॥

ए सुख इन केहेनीय में, क्योंए किए न आवत ।
देखो दिल विचार के, कछू तब पाओ लज्जत ॥६१॥

आराम अर्स बका मिने, हक दिल दे देवें सुख ।
ए सुख इन आकार से, क्यों कर कहूं इन मुख ॥६२॥

ठौर बका अर्स कह्या, और खावंद नूरजमाल ।
इन दरगाह रूहों के सुख, क्यों कहूं फैल हाल ॥६३॥

ए सुख रूह कछू जानहीं, पर केहेनी में आवत नाहें ।
ख्वाब वजूद की अकलें, क्यों कर आवे जुबाएं ॥६४॥

अर्स अजीम का खावंद, रमूज करे दिल दे ।
अपने अर्स अरवाहों सों, क्यों कहे जुबां इन देह ॥६५॥

क्यों कहूं सुख हाँसीय का, वास्ते हाँसी किए फरामोस ।
फेर फेर उठावें हाँसीय को, वह टलत नहीं बेहोस ॥६६॥

आप फरामोसी देयके, ऊपर से जगावत ।
क्यों जागें बिना हुकमें, हक इन विध हाँसी करत ॥६७॥

ए हाँसी फरामोसीय की, होसी बड़ो विलास ।
जागे पीछे आनंद को, अंग न मावत हाँस ॥६८॥

अनेक सुख देने को, साहेबें दई फरामोसी ।
जगावते भी जागे नहीं, एही हाँसी बड़ी होसी ॥६९॥

अनेक सुख दिए अर्स में, सुख फरामोसी नाहीं कब ।
हँस हँस गिर गिर पड़सी, ए सुख ऐसा देखाया अब ॥७०॥

खिन एक विरहा ना सहें, सो सौ बरस सहें क्यों कर ।
फरामोसी इन हक की, कोई हाँसी ना इन कदर ॥७१॥

ए सुख आनंद फरामोस को, कह्यो जाए ना अलेखे ए ।
ए सुख जागे पीछे चाहे नहीं, सुख दिए फरामोसी जे ॥७२॥

सुख तो अलेखे पाइया, पर इन सुख ऐसी बात ।
एक वल पड़्या आए बीच में, ताथें ए सुख रूहें न चाहत ॥७३॥

अनेक हाँसी होएसी, अनेक उपजसी सुख ।
इस्क तरंग कई बढ़सी, ऐसा देखाया फरामोसी दुख ॥७४॥

कई सुख हाँसी फरामोस के, कई हजूर सुख खिलवत ।
कई सुख पसु पंखियन के, कई सुख मोहोलों बैठत ॥७५॥

कई सुख चबूतर के, कई कठेड़े गिलम ।
कई सुख बीच तखत के, कई सुख देत बैठ खसम ॥७६॥

कई सुख ऊपर बैठक के, कई सुख दरखतों छात ।
कई सुख तले बड़े बिरिख के, झूमत हैं ऊपर मोहोलात ॥७७॥

फेर कहूं सुख तले बन के, ए बन बड़ा विस्तार ।
भर चबूतरे आगूं चल्या, मिल्या मधुबन किनार ॥७८॥

मधुबन की किन विध कहूं, बन जाए लग्या आसमान ।
पुखराज अर्स के बीच में, ए सिफत न होए बयान ॥७९॥

लिबोई केल के घाट जो, ताके सिरे मिले आए इत ।
बुजरक बन मधुबन का, मिल्या जोए किनारे जित ॥८०॥

और फिरवल्या[1] पुखराज को, सो पोहोंच्या जाए लग दूर ।
चढ़ पुखराज जब देखिए, आए तले रह्या हजूर ॥८१॥

सुख हक का महामत जानहीं, या जानें मोमिन ।
दूजा नहीं कोई अर्स में, बिना बुजरक रूहन ॥८२॥

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥७२५॥

फेर कहूं तले बन की, जो बन बड़ा विस्तार ।
भर चबूतरे आगूं चल्या, जाए पोहोंच्या केल के पार ॥१॥

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन ।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों बन ॥२॥

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए ।
इन चेहेबच्चे की सिफत, मुख थें कही न जाए ॥३॥

कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियर ।
और नाम केते लेऊं, बट पीपर सर ऊमर ॥४॥

१. घेर लिया ।

ए बन गेहेरा दूर लग, इत आए मिल्या केल घाट ।
जमुना जल किनार लों, छाया चली दोरीबंध ठाट[1] ।।५।।

जोए जमुना का जल, पहाड़ से उतरत ।
तले आया कुंडमें, पहाड़ से निकसत ।।६।।

जमुनाजी के मूलमें, पहाड़ बन्यो चबूतर ।
आगूं कुंड दूजा भया, जहां से जल चल्या उतर ।।७।।

पेहेले कुन्ड चबूतरा, दूजा आगूं सोए ।
चारों तरफों बैठक, जल उज्जल खुसबोए ।।८।।

चारों तरफ चबूतरा, जमुना दोऊ किनार ।
ए कुंड हुए दोऊ इन विध, चली द्योहरी दोऊ हार ।।९।।

केतेक लग ढांपी चली, तरफ दोऊ थंभ हार ।
इन आगूं जुदी जिनस, चली द्योहरी दोऊ किनार ॥१०॥

ऊपर ढांप्या पुल ज्यों, सोभा लेत सुन्दर ।
ऊपर द्योहरी जड़ाव ज्यों, जल खलकत चल्या अन्दर ॥११॥

चार थंभ हारें चली, ऊपर ढांपी तरफ दोए ।
यों चल आई दूरलों, ए जल जमुना जोए ॥१२॥

दोऊ किनारें बैठक, बन गेहेरा गिरदवाए ।
अति सोभा इत जोए की, इन जुबां कही न जाए ॥१३॥

दोऊ तरफों द्योहरी, कई कंगूरे कलस ऊपर ।
इत बैठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर ॥१४॥

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर ।
एक द्योहरी एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर ॥१५॥

ए बन की सोभा क्यों कहूं, पेड़ चले आए बराबर ।
दोऊ तरफों जुगतें, आए द्योहरियां ऊपर ॥१६॥

१. शोभायमान ।

इत लंबा बन आए मिल्या, जमुना भर किनार ।
इतथें छत्री ले चल्या, पोहोंच्या पहाड़ के पार ॥१७॥

दोऊ किनार सीधी चली, आए पोहोंच्या केल घाट ।
एक चौक द्योहरी इतलों, ए बन्यो जो ऐसो ठाट ॥१८॥

छूटक छूटक द्योहरी, सातों घाटों माहें ।
दोऊ किनारें जड़ाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए ॥१९॥

इतथें चले ताल लों, एक द्योहरी एक चबूतर ।
दोऊ तरफ या विध, जोए हौज मिली यों कर ॥२०॥

महामत कहे ए मोमिनों, मैं बोलत बुध माफक ।
ख्वाब मन जुबानसों, क्यों कर बरनों हक ॥२१॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥७४६॥

मोहोल पहाड़ पुखराजी ॥ राग श्री मारू ॥

सुख लीजो मोमिन, पहाड़ मोहोल के आराम ।
अर्स अजीम के कायम, निस-दिन एही ताम[1] ॥१॥

हौज जोए अर्स जिमिएं, जो फुरमान में फुरमाए ।
पहाड़ मोहोल पेड़ इनका, सो हक हुकमें देऊं बताए ॥२॥

एक जवेर इन जिमी पर, बीच अर्स एक नंग ।
बोहोत नाम जवेरों के, जुदे नाम जुदे रंग ॥३॥

सो बड़ा पहाड़ एक नंग का, तिनमें कई मोहोलात ।
चौड़ा ऊंचा तेज में, क्यों कहूं अर्स की बात ॥४॥

गिरद मोहोल बराबर, तरफ तले संकड़ा ।
मोहोल बढ़ते बराबर, चढ़ते अति चौड़ा ॥५॥

गिरदवाए फेर देखिए, आकास न माए झलकार ।
मोहोलातें सब नूर की, जुबां कहा केहेसी विस्तार ॥६॥

१. आहार ।

हरे पीले लाल उज्जल, संग सोब्रन[1] नूर अमान[2] ।
एक जवेर इन भोम का, भरया रोसन नूर आसमान ।।७।।

कई विध के इत मोहोल हैं, सब रंग के इत बन ।
कई जल धारें फुहारे, रस मेवे स्वाद सबन ।।८।।

ए पर्वत इन भांत का, नैनों निमख न छोड़्या जाए ।
क्यों कहूं खूबी इन जुबां, देखत रह्या हिरदे भराए ।।९।।

ऊपर सोब्रन सिखर तले, सोभित जल उतरत ।
खूबी खुसबोए बन में, आए मिल्या ताल जित ॥१०॥

खूबी इन पहाड़ की, ऊँचा माहें आकास ।
कई मोहोल बैठक रोसनी, ज्यों रोसन धाम प्रकास ॥११॥

दूरथें अति सुन्दर, आए देखें सोभा अतंत ।
इन जुबां इन पहाड़ की, क्यों कर करे सिफत ॥१२॥

कई बैठक तले ऊपर, कई ठौर तले कराड़[3] ।
सोभा जल बन सोभित, अतंत खूबी इन पहाड़ ॥१३॥

उपरा ऊपर भोम अनेक, अति विराजे सोए ।
खूबी इन मोहोलन की, देख देख मन मोहे ॥१४॥

जड़्या पहाड़ जानों सोने सों, जुदे जुदे जवेरन ।
ए मोहोल अति सुन्दर, बड़ी बैठकें रोसन ॥१५॥

माहें कई नेहेरें चलें, सब पहाड़ में फिरत ।
कई फुहारे चेहेबच्चे, सब ठौरों खूबी करत ॥१६॥

ए मोहोल बड़े अति सुन्दर, एक दूजे थें चड़त ।
ज्यों ज्यों ऊपर चढ़िए, त्यों त्यों खूबी बढ़त ॥१७॥

ए मोहोल बैठन के, अति बड़ियाँ पड़साल ।
बोहोत देखी मैं बैठकें, पर ए सोभा अति कमाल ॥१८॥

१. सुवर्ण । २. आरामदायक । ३. ऊंचा किनारा ।

ऊपर चौक लग चाँदनी, अतंत है विसाल ।
नजर न पीछी फिर सके, देख देख होइए खुसाल ॥१९॥

कोटक कचेहेरी[1] बनी, फिरतियां गिरदवाए ।
ए सुन्दरता इन जुबां, मोपे कही न जाए ॥२०॥

ज्यों ज्यों नैनों देखिए, त्यों त्यों लगत सुंदर ।
न्यारी नजर न होवहीं, चुभ रह्या रूह अंदर ॥२१॥

अति बड़े सुभट सूरमें, सेन्यापति सिरदार ।
मेला होत है इन मोहोलों, कई जातें जिनसें अपार ॥२२॥

रूहें राज स्यामाजी बिराजत, निपट सोभा है इत ।
ऊपर तले बीच सुन्दर, खूबी-खुसाली[2] करत ॥२३॥

इत सिखरें सब पहाड़ की, जानों जवेर सब नूर ।
सिखरें सब आसमान लों, जानों के गंज जहूर ॥२४॥

इन मोहोलों में देखिए, अतंत सोभा थंभन ।
उपरा ऊपर देखिए, जुबां कहा करे बरनन ॥२५॥

फिरता पेड़ जो पहाड़ का, तले बन्या सकड़ा ए ।
फिरते थंभ चौड़े चढ़े, जाए फैल्या आसमान में जे ॥२६॥

ऐसे ही थंभ तिन पर, चौड़ा अति विस्तार ।
या विध चढ़ता चढ़या, गिरदवाए बनी किनार ॥२७॥

ज्यों ज्यों मोहोल ऊंचे चढ़े, तिन चौगिरद[3] थंभ हार ।
चौड़ा ऊंचा चढ़ता, चढ़ता चढ़या विस्तार ॥२८॥

चढ़ते मोहोल मोहोलन पर, जाए लग्या आसमान ।
चढ़ती सोभा सुन्दर, ए क्यों कर कहे जुबान ॥२९॥

मोहोल बड़े सोभा बड़ी, थंभ फिरते दोरी बंध ।
जोतें जोत जगमगे, क्यों कहूं सोभा सनंध ॥३०॥

१. भवन । २. आनंद दायक । ३. चारों ओर (तरफ)

तले से ऊपर लग, मोहोल झरोखे पड़साल ।
कई चौक थंभ कचेहेरियां, कई देहेलानें दिवाल ॥३१॥

मोहोलन पर मोहोल विस्तरे, सोभा चढ़ती चढ़ी अतंत ।
कोई मोहोल बड़े इन भांत के, सब नजरों आवत ॥३२॥

फिरते मोहोल अति बने, कई मोहोलातें जे ।
कई रंगों चरनी[1] बनी, सब एक जवेर में ए ॥३३॥

हजार हांसों सोभित, तापर गुरज बिराजत ।
मोहोल माहें विध विध के, बैठक झरोखे जुगत ॥३४॥

हजार हांसों हजार रंग, हर हांस हांस नया रंग ।
थंभ रोसन जिमी लग चांदनी, करत मिनो मिने जंग ॥३५॥

ऊपर चौड़ा तले सकड़ा, दोरीबंध देखत ।
तले से ऊपर लग देखिए, गिरदवाए सब सोभित ॥३६॥

मोहोल चारों तरफों, हजार हांसों माहें ।
ए मोहोल पहाड़ जवेर के, क्यों केहेसी जुबांए ॥३७॥

बराबर दोरीबंध ज्यों, फिरती पहाड़ किनार ।
सो इन मुख सोभा क्यों कहूं, झलकारों झलकार ॥३८॥

एक नकस बरनन ना कर सकों, ए अति बड़ो बयान ।
ए मोहोल पहाड़ अर्स के, कहा कहे एह जुबान ॥३९॥

गुरज हजार बीच चांदनी, सब गुरज बराबर ।
कई कोट जुबां इन खूबी की, सिफत न सके कर ॥४०॥

तले चार गुरज बिलंद[2] हैं, थंभ होत ज्यों कर ।
चारों भोम से छात लग, आए पोहोंचे ऊपर ॥४१॥

सो याही छात को लग रहे, ज्यों एक मोहोल चार पाए ।
पेड़ पांचमा बीच में, मोहोल पांचों जुदे सोभाए ॥४२॥

१. सीढ़ियां । २. ऊंचे ।

सो पांचों माहें मोहोलात हैं, रंग नंग जुदी जिनस ।
देख देख पांचों देखिए, एक पे और सरस ॥४३॥

कहा कहूं क्यों कर कहूं, एक जुबां मोहोल अनेक ।
इन झूठी जिमीके साजसों, क्यों कहूं अर्स विवेक ॥४४॥

तले से ऊपर लग, थंभ झरोखे देहेलान ।
ए बैठकें बका[1] मिने, रूहें संग सुभान ॥४५॥

ए पांचों फेर के देखिए, खोल के रूह नजर ।
ले भोम से लग चांदनी, खूब ऊपर खूबतर ॥४६॥

एक तरफ अर्स हौज के, तरफ दूजी हौज जोए ।
और दोए तरफ दोए चरनियां, ज्यों जड़ित जगमगे सोए ॥४७॥

ए छठा पहाड़ हौज जोए का, ताके तले बड़ो विस्तार ।
आए पोहोंच्या अधिक ऊपर, इत मिल गया इनके पार ॥४८॥

तले छे जुदे रहे, ऊपर पहाड़ मोहोल एक ।
और दोए कही जो घाटियां, भए आठ ऊपर इन विवेक ॥४९॥

चरनी दोए बड़ी कही, जो बड़े गुरज दरम्यान ।
आइयां जिमी से ऊपर लग, क्या करसी जुबां बयान ॥५०॥

बड़ियां ऊंची आसमान लों, और खूबी देत अति जोर ।
जोत जवेर अति झलकत, किनार दोऊ सीधी दौर ॥५१॥

दोऊ सीढ़ियों के सिरे पर, दोए दरवाजे बुजरक ।
दोऊ तरफों दो दिवालें, सो भी वाही माफक ॥५२॥

दोए द्वार इत और हैं, इन चांदनी चार द्वार ।
सो चारों तरफों जगमगे, सोभा अलेखे अपार ॥५३॥

गुरज दोए हर द्वारने, इत बड़े दरबार ।
सो तेज जोत नूर को, कह्यो न जाए सुमार ॥५४॥

१. अखंड ।

ए जो गिरदवाए मोहोल चांदनी, बीच मोहोल गुरज हजार ।
जोत बीच आसमान के, मावत नहीं झलकार ॥५५॥

ए अति बड़े मोहोल किनारे, और कंगूरे अति सोभित ।
सोभा इन मोहोलन की, जुबां कहा करसी सिफत ॥५६॥

हौज जोए इन पहाड़ से, सो पीछे कहूं सिफत ।
बड़े मोहोल पर मोहोल जो, ए खूबी आकास में अतंत ॥५७॥

इन मोहोल ऊपर जो चांदनी, तिन पर जो मोहोलात ।
सो विस्तार है अति बड़ा, या मुख कह्यो न जात ॥५८॥

इन पहाड़ ऊपर मोहोलात जो, ऊँचा बड़ा विस्तार ।
गिरद झरोखे ऊपर तले, याको क्यों कर होए निरवार ॥५९॥

चारों तरफों दरवाजे, आगूं चौखूंटे चबूतर ।
थंभ चार हर चबूतरे, मोहोल इन आठों पर ॥६०॥

चारों तरफों द्वारने, और चारों खूंटों गुरज चार ।
कहा कहूं अन्दर मोहोल की, जिनको नहीं सुमार ॥६१॥

इनके आठ चबूतरे, तिन आठों पर आठ गुरज ।
आकास में जाए जगमगे, करें जंग जोत सूरज ॥६२॥

इन आठों बीच चार द्वार ने, कई सोभा लेत अपार ।
कठेड़ा आठों चबूतरे, तरफ चारों चार द्वार ॥६३॥

चार गुरज चार खूंट के, माहें मोहोल फिरते गिरदवाए ।
फिरते झरोखे सिरे लगे, आसमान में पोहोंचे आए ॥६४॥

आठों खाँचों के गुरज जो, छ्यानब्बे गुरज कहे ।
बारे गुरज अव्वल कहे, सब एक सौ आठ भए ॥६५॥

सब मोहोल अति सुन्दर, चौखूंटे एक सौ चार ।
चार गिरद चार खूंट के, एक सौ आठ यों सुमार ॥६६॥

दिवालां आकास लों, करे जोत जोत सों जंग ।
बिलंद झरोखे कई थंभ, हिसाब ना जिनस रंग ॥६७॥

चारों तरफों मोहोलात के, क्यों कहूं खूबी ए ।
कई रंग नंग थंभ जवेर के, चारों तरफों झरोखे ॥६८॥

एक सौ आठ गुरज जो, ऊपर जाए लगे आसमान ।
कलस रोसन कई तिन पर, सो जाए न कहे जुबान ॥६९॥

माहें मोहोल कई विध के, कई कचेहेरी देहेलान ।
कई मंदिर हवेलियां, क्यों कर कहूं बयान ॥७०॥

कई अंदर नेहेरें फिरें, माहें हवेलियों चेहेबच्चे ।
खुसबोए फूल मेवे कई, माहें बैठक कई बगीचे ॥७१॥

बाहेर देखाई माफक, अंदर बड़ा विस्तार ।
पहाड़ ऊपर या मोहोल में, आवत नहीं सुमार ॥७२॥

बड़े द्वार बड़े चबूतरे, इत सोने के कमाड़ ।
जड़ाव चारों द्वार ने, एक जवेर मोहोल पहाड़ ॥७३॥

इन मोहोलों हक आवत, सुख देने रूहों सबन ।
सुख इत के दिए जो ख्वाब में, सो जानें रूह मोमिन ॥७४॥

चरनी आठों चबूतरे, और ऊपर आठों के छात ।
बड़े छज्जे चारों द्वार पर, सब फिरते छज्जे मोहोलात ॥७५॥

कई कलस कई कंगूरे, आसमान में रोसन ।
खूबी हक के अर्स की, इत क्यों कहूँ जुबां इन ॥७६॥

जवेर अर्स जिमी के, और सोना भी जिमी अर्स ।
जिमी रेत या दरखत, सब अर्स जिमी एक रस ॥७७॥

अर्स तरफ दाहिनी, तरफ सामी ताल जोए ।
बांईं तरफ और पीछली, ए कही सीढ़ियां दोए ॥७८॥

अब कहूँ इनका बेवरा, ए सब मोहोलात नंग एक ।
ए लीजो नीके दिल में, केहेती हों विवेक ॥७९॥

ए चारों तरफ कहे पहाड़ के, बीच गुरज बड़े थंभ चार ।
ए आठ निसान गिरद के, लीजो रूहें दिल विचार ॥८०॥

और मोहोलात इन ऊपर, सो नूर ऊपर जो नूर ।
देत खूबी बीच अकास के, अवकास सबे जहूर ॥८१॥

एक सौ आठ गुरज कहे, जो करत ऊपर रोसन ।
कंगूरे कलस ऊपर कई, देख होत खुसाल मोमिन ॥८२॥

इन मोहोलों बीच इमारतें, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए ।
ए खूबी सब्दातीत की, लीजो रूह के दिल लगाए ॥८३॥

आगूं जल अति सोभित, तले गिरदवाए पाल ।
तिन पर बन बिराजत, क्यों कहूँ खूबी इन ताल ॥८४॥

ए जवेर अर्स जिमी के, सब्द में न आवत ।
ए मोमिन देखो रूहसों, जुबां न पोहोंचे सिफत ॥८५॥

नसीहत लई जिन मोमिनों, ए तरफ जानें सोए ।
अर्स हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए ॥८६॥

जो अरवाहें अर्स की, सो यामें खेलें रात दिन ।
ऊपर तले मांहें बाहेर, ए जरे जरा जाने मोमिन ॥८७॥

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहूं पहाड़ सिफत ।
ए लज्जत तिनको आवसी, जाए हक बका निसबत ॥८८॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥८३४॥

ताल बंगले जोए मोहोलात

मोहोल के तले ताल जो, तुम देखो अर्स अरवाए ।
रहिए संग सुभान के, छोड़िए नहीं पल पाए ॥१॥

ऊपर पहाड़ के ताल जो, बोहोत बड़ो विस्तार ।
तले बड़े मोहोलात के, सो नेक कहूं विचार ।।२।।

बड़े देहेलान कचेहेरियां, बैठक बारे हजार ।
हक हादी रूहन की, नाहीं सिफत सुमार ।।३।।

थंभ बड़े जवेरन के, कहूं सो केते रंग ।
बोहोत छज्जे कई रंगों के, करे जोत जोत सों जंग ।।४।।

कई छज्जे ताल ऊपर, पड़त जल में झांईं ।
मोहोल सबे माहें देखत, खूबी आवे न जुबां माहीं ।।५।।

अंदर मोहोल नेहेरें चलें, चारों तरफों फिरत ।
इन सबमें सोभा देय के, पुखराजें पोहोंचत ।।६।।

तीनों तरफों ताल के, जुदी जुदी मोहोलात ।
बड़े छज्जे तरफ पहाड़ के, दोऊ बाजू दरखतों छात ।।७।।

मोहोल दोऊ छातों पर, तिन परे भी बड़े बन ।
ए बन मोहोल अति बिलन्द, पर नेक करूं रोसन ।।८।।

दोऊ बाजू बन मोहोल दोऊ, परे दोऊ तरफों दरखत ।
पीछे मोहोल पर बड़े मोहोल, तिनकी जुदी बड़ी सिफत ।।९।।

आगूं दोऊ सिरे गुरज दोए, माहें छज्जे कई किनार ।
दोऊ बीच में पानी उतरत, गिरत चादरें चार ॥१०॥

सो चारों जुदी जुदी, उपरा ऊपर भी चार ।
सोभा लेत और गरजत, सो सोले भई सुमार ॥११॥

दोऊ गुरज बीच बड़े देहेलान, जित सोले जाली द्वार ।
थंभ झरोखे दोऊ तरफों, ए सोभा अति अपार ॥१२॥

तले बैठ जब देखिए, जानों गुरज लगे आसमान ।
क्यों कहूं इन मोहोलात की, खेलें रूहें हादी सुभान ॥१३॥

मोहोल बड़े बीच गुरजों के, खूबी लेत तरफ दोए ।
एक खूबी तरफ ताल के, दूजी ऊपर चादरों सोए ॥१४॥
तले चारों सीढ़ी जुदी जुदी, पीछे करत पानी मार ।
सो चारों उपरा ऊपर, इन विध पड़त धार ॥१५॥
सो धारें पड़त बीच कुण्ड के, कुण्ड पर मोहोल गिरदवाए ।
दोऊ बाजू छातें दरखत, पीछे मोहोल मिले आए ॥१६॥
चारों तरफ झरोखे कुण्ड के, बीच चादरें खूबी देत ।
बड़े देहेलान कचेहेरियां, हक रूहें खुसाली लेत ॥१७॥
खास मोहोल कुण्ड ऊपर, जहां लेहेरी छलकत जल ।
सो जल उतरत पहाड़ से, चढ़ गिरत ऊंचे नल ॥१८॥

बंगले

बिराजे बंगले, ए जो मोहोल तले ताल ।
बारे हजार बड़ी रूह ले, हकसों खेलत माहें हाल ॥१९॥
पहाड़ तले कई कुण्ड हैं, कई बिध पानी फिरत ।
कई जिनसें केती कहूं, नेहेरें साम सामी चलत ॥२०॥
कई नेहेरें फिरें माहें फिरतियां, कई आड़ियां आवत ।
एक बड़ी नेहेर बाहेर निकसी, सो पानी पूर ज्यों चलत ॥२१॥
खास बिरिख कई विध के, सो केते कहूं विवेक ।
तले पहाड़ छाया मिने, जानों ए बिरिख अति विसेक ॥२२॥
बन सुन्दर अति उत्तम, सोभा लेत ए ठौर ।
ए बन छाया का देखे पीछे, जानो ऐसा न कोई और ॥२३॥
थंभ बड़े बड़ी जाएगा, पहाड़ तले चहुंओर ।
ए खूबी कही न जावहीं, बन सोभित नेहेरें जोर ॥२४॥

बीच बीच दोरी बंध, अड़तालीस बंगले ।
हर हारें अड़तालीस, ए बैठक पहाड़ तले ॥२५॥

बराबर नेहेरें चेहेबच्चे, और बराबर दरखत ।
झूठी जुबां इन देह की, क्यों कर कहे ए जुगत ॥२६॥

चारों तरफों बराबर, ऊपर लगे पहाड़ सों आए ।
जुदे जुदे जवेरन को, नूर पहाड़ तले न समाए ॥२७॥

छात पांचमी पोहोंची पहाड़ लों, बड़े बंगले बड़ी दिवाल ।
बड़े छज्जे चारों तरफों, सुख पाइए जो आवे हाल ॥२८॥

कई रंगों जरी पसमी, कई दुलीचे रंग केते ।
सोभित हैं सबों बैठकें, कई नकस बेल फूल जेते ॥२९॥

दो तीन चार पुड़े चौकियां, कई जवेरों झलकत ।
सीसे प्याले डब्बे तबके, कई वस्तें धरियां इत ॥३०॥

कई सादे सिंघासन, कैयों ऊपर छत्र ।
कई ठौर कदेले कुरसियां, कई तखत खूबतर ॥३१॥

कई एक ठौरों हिंडोले, कई सेज बिछोने पलंग ।
कई जुदे जुदे जवेर, करत मिनो मिने जंग ॥३२॥

कई सोभित हैं सांकलें, माहें डब्बे पुतलियां तबक ।
इत रूहें संग स्यामाजी, बीच बिराजत हक ॥३३॥

कई सीढ़ियां सोब्रन[1] की, कई हीरा मानिक पुखराज ।
उपली भोमे चौकी पर, कई धरे संदूकें साज ॥३४॥

कई सोभित साखें[2] कमाड़ियां, जोर जवेर झलकार ।
घोड़े[3] कड़े बेनी[4] जंजीरां, रोसन करत अपार ॥३५॥

हर बंगले विस्तार बड़ा, आगूं बड़े दरबार ।
कई मोहोलों कई मंदिरों, कहो कहां लग कहूं न सुमार ॥३६॥

१. स्वर्ण । २. चौखट । ३. खूंटी । ४. किवाड़ की बाजू ।

ए बन जवेर अर्स के, खूबी कहा कहे जुबान ।
बीच बैठक चबूतरे, सुख रूहें संग सुभान ॥३७॥

चारों तरफों नेहेरें चलें, बीच कठेड़े चबूतर ।
चेहेबच्चे बीच बीच बन, ए सिफत कहूं क्यों कर ॥३८॥

कई मोहोल नेहेरें किनारें, कई बन में बिराजत ।
भांत भांत कई विध के, ए किन विध करूं सिफत ॥३९॥

बन मोहोल नेहेरें कहीं, इन जिमी विध कही न जाए ।
ए अर्स जवेर देख्या चाहे, सो ए बन देखो आए ॥४०॥

जैसा पहाड़ तैसी जिमी, और तैसेही दरखत ।
ए मोहोल ऐसे जवेरन के, जुबां क्यों कर करे सिफत ॥४१॥

ए नूर खूबी इतकी इतहीं, इनका निमूना सोए ।
और सब्द तो निकसे, जो और ठौर कोई होए ॥४२॥

ए दरखत नेहेरें चेहेबच्चे, बीच खेलन ठौर कमाल ।
याही विध बड़े पहाड़ लग, सुख रूहें नूरजमाल ॥४३॥

पेहेली तरफ का जो बन, बड़े मेहेराव आगूं दरखत ।
ए बन मेवे केते कहूं, अर्स अजीम की न्यामत ॥४४॥

जहां लो नजरों देखिए, ए बड़े बिरिख अति विस्तार ।
मेवे मोहोल छातें बनी, ना कछू पसु पंखी को पार ॥४५॥

सोई जिमी उज्जल अति सोभित, ए जो पहाड़ नजीक या दूर ।
आकास भरयो रोसनी, कहां लग कहूं ए नूर ॥४६॥

आकास भरयो खुसबोय सों, वाए तेज खुसबोए ।
जित तित सब खुसबोए, बोए चांद सूर दोए ॥४७॥

पेड़ बोए पात बोए, बोए फल फूल डार ।
जल जिमी खुसबोए को, कछू आवे नहीं सुमार ॥४८॥

जित देखूं तित खुसबोए, पहाड़ जवेर बोए नूर ।
रस धात रेजा रेज जो, खुसबोए सबे जहूर ॥४९॥

कई रेहेत अंदर जानवर, कई विध बोलें बान ।
ए खूबी खुसाली हक की, जुदी जुदी कई जुबान ॥५०॥

पसु सबे खुसबोए सों, खुसबोए सबे जानवर ।
तन बंध बंध खुसबोए सों, बोए बाल पर पर ॥५१॥

वस्तर भूखन रूहन के, ताकी क्यों कहूँ खुसबोए ।
इन खूबी खुसबोए को, सब्द न पोहोंचे कोए ॥५२॥

हकीकत तले पहाड़ की, ए जो नेक कही जुगत ।
ए विस्तार इत बोहोत है, जुबां कर न सके सिफत ॥५३॥

जिन जानों रूहन को, अर्स में सेवक नाहें ।
हुकमें काम करावत, जो आवत दिल माहें ॥५४॥

एक एक मोमिन के, अलेखे सेवक ।
बड़ी साहेबी बका मिने, बंदे तिन माफक ॥५५॥

पुतलियां जवेरन की, सोभा सुन्दरता अत ।
कहूं केती सेवा बंदगी, सब अग्या सों करत ॥५६॥

या बिध सब जानवर, और केते कहूँ पसुअन ।
सब विध करें बंदगी, जैसा सोभित जिन ॥५७॥

हुकमें होवे सब बंदगी, आगूं इन रूहन ।
हसें खेलें नाचें गाएँ, कई विध करें रोसन ॥५८॥

पसु पंखी जवेरन के, अति सोभा अर्स में लेत ।
सब सेवा करें रूहन की, इत ए काम कर देत ॥५९॥

कई पुतलियां जवेरन की, खड़ियां तले इजन[1] ।
हजार दौड़ें एक हुकमें, आगूं इन रूहन ॥६०॥

१. हुकम ।

हर रूहों आगूं दौड़हीं, कई खूबी लेत खुसाल ।
रात दिन कबूं न काहिली[१], रहें हमेसा बीच हाल ॥६१॥

बंदियां खूब खुसालियां, जाए फिरें ज्यों मन ।
काम कर दसों दिस, आए खड़ियां वाही खिन ॥६२॥

ए दौड़ें रूहों के मन ज्यों, खड़ियां हुकम बरदार[२] ।
एक रूह मन में चितवे, वह जी जी करें हजार ॥६३॥

मुख केहेने की हाजत[३] ना पड़े, जो उपजे रूहों के दिल ।
सो काम कर ल्यावें खिन में, ऐसा इनों का बल ॥६४॥

सरूप रूहों के मनके, जो कछुए मन चाहें ।
ऊपर तले माहें बाहेर, एक पल में काम कर आएं ॥६५॥

कई ले खड़ियां रूमाल, कई ले खड़ियां पान डब्बे ।
बंदियां[४] बारे हजार की, आगूं अलेखे ॥६६॥

कई वस्तां आगूं ले खड़ियां, वस्तर भूखन कई साज ।
ए साहेबी अर्स अजीम की, ए नाहीं ख्वाब के राज ॥६७॥

ए खूबी इन अर्स की, क्यों कहूं इन जुबान ।
कायम सुख साहेबी, ए होए रूहों बीच बयान ॥६८॥

ए बातें केती कहूं, अर्स के जो सुख ।
साहेबी इन रूहन की, इत बरनन याही मुख ॥६९॥

जो जवेर बंदे रूहन के, देखो तिन को बल ।
जानत हो इन विध को, देखियो अपनी अकल ॥७०॥

मैं तुमें पूछों मोमिनो, जो तुम हो अर्स के ।
तुम अपनी रूहसों विचार के, जवाब दयो मुझे ए ॥७१॥

उड़त पर के वाउसे, कोट ब्रह्मांड देवे उड़ाए ।
एक छोटी चिड़िया अर्स की, ताकी लड़ाई क्यों कही जाए ॥७२॥

१. सुस्ती । २. आज्ञाकारी । ३. जरुरत । ४. सेविकाएं ।

कोट ब्रह्मांड पर के वाउ से, अर्स चिड़िया देवे उड़ाए ।
तो इन अर्स के फील[1] को, बल देखो चित्त ल्याए ॥७३॥

खरगोस एक जवेर का, चले रूह के मन सों ।
बड़ा फील लड़े अर्स का, कहो कौन जीते इनमों ॥७४॥

रूहों दिल चाहे बोलत, दिल चाही सोभा सुन्दर ।
दिल चाहे पेहेरे भूखन, दिल चाहे वस्तर ॥७५॥

करें दिल चाही सब बंदगी, चित चाह्या चलत ।
दिल चाहे बल तेज जोत, सब दिल चाही सिफत ॥७६॥

सब वस्तां आगे ले खड़ियां, ज्यों पातसाही लवाजम[2] ।
आगूं चेतन दिल से, खड़ियां सनमुख एक कदम ॥७७॥

रूप रंग रस दिल चाहे, दिल चाही चित चितवन ।
दिल चाही अकल इंद्रियां, करें दिल चाही रोसन ॥७८॥

ए जो खूब खुसाली सूरतें, सो सब रूहों के दिल ।
ए जो हर रूहों के आगे खड़ी, बांध अपनी मिसल[3] ॥७९॥

क्यों कर कहूँ ए साहेबी, ए जो रूहें करत अर्स माहें ।
हकें कई देखाए ब्रह्मांड, पर कोई पाइए न निमुना क्यांहें ॥८०॥

झूठ आगे सांच के, क्यों आवे सरभर[4] ।
नाहीं क्यों कहे आगूं है के, लगे ना पटंतर[5] ॥८१॥

ए जो दुनियां खेल कबूतर, साहेबी आगूं रूहन ।
ए खरगोस रूहों के दिल का, लड़े साथ अर्स फीलन ॥८२॥

ए जो फौज रूहों के दिल की, सो आवत सांच समान ।
तिन आगे त्रैगुन यों कर, ज्यों चली जात खेल की जहान ॥८३॥

उपजत रूहों के दिल से, राखत ऐसा बल ।
कई कोट ब्रह्मांड के खावंद, चले जात मांहें एक पल ॥८४॥

१. हाथी । २. सामग्री । ३. जमात । ४. बराबरी । ५. अंतर ।

ए सुध अर्स में रूहों को नहीं, देखी खेल में बड़ाई रूहन ।
तो खेल हकें देखाइया, ऊपर मेहेर करी मोमिन ॥८५॥

नजरों होत अछर के, कोट चले जात माहें खिन ।
मैं सुन्या मुख धनी के, खेल पैदा फना रात दिन ॥८६॥

एक इन वचन का बसबसा[१], तबका रेहेता था मेरे मन ।
लखमीजी का गुजरान, होत है विध किन ॥८७॥

खेल दुनियां अर्स खेलौने, करें बाल चरित्र भगवान ।
या खेल या बिन साहेबी, होए लखमीजी क्यों गुजरान ॥८८॥

सो संसे मेरा मिट गया, हक इलमें किए बेसक ।
दिल में संसे क्यों रहे, जित हकें अपनी करी बैठक ॥८९॥

अर्स कह्या दिल मोमिन, दिया अपना इलम सहूर ।
सक ना खिलवत निसबत, ताए काहे न होवे जहूर ॥९०॥

जैसी साहेबी रूहन की, विध लखमीजी भी इन ।
वाहेदत में ना तफावत[२], पर ए जानें रूहें अर्स तन ॥९१॥

ए बातें बका अर्स की, बिना रूहें न जाने कोए ।
ए बातें खुदाए की, और तो जाने जो दूसरा होए ॥९२॥

निपट बड़े सुख अर्स के, इत आवत नहीं जुबांए ।
देख माया निमूना झूठ का, याकी बातें करसी अर्स माहें ॥९३॥

महामत कहे हुकमें इलम, जो हक सिखावें कर हेत ।
सो केहेवे आगूं अर्स तन के, अपने दिल अर्स में लेत ॥९४॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥९२८॥

जमुनाजी का मूलकुंड कठेड़ा चबूतरा ढांपी खुली सात घाट ॥
किनारे मोहोल जोए के, तुम मिल देखो मोमिन ।
पाउ पलक न छोड़िए, अपना एही जीवन ॥१॥

१. शंका । २. फरक ।

अब जल तले जो आइया, उतर कुंड से जे ।
केताक फैल्या तले दरखतों, और निकसी नेहेर बड़ी ए ।।२।।

जोए जमुना का जल जो, पहाड़ से निकसत ।
सो पोहोंच्या तले चबूतरे, ए बैठक अति सोभित ।।३।।

तीनों तरफों कठेड़ा, ऊपर छाया दरखत ।
सो छाया मोहोलों पर छई, ए रूहें लेवें लज्जत ।।४।।

जोए जमुना के मूल में, उतर जल चबूतर ।
और कुण्ड एक इत बन्यो, जहां से जल चल्या उतर ।।५।।

इत भी चारों तरफों बैठक, सोभा लेत अति सोए ।
तीनों तरफों कठेड़ा, जल उज्जल खुसबोए ।।६।।

जुदे जुदे रंगों जवेर ज्यों, कहा कहूं झलकार ।
ए कुण्ड कठेड़ा चबूतरा, सिफत न आवे सुमार ।।७।।

अब कुण्ड से पुल आगूँ चल्या, ढाँपिल दोऊ किनार ।
दोऊ तरफों बैठकें, थंभ चले दोऊ हार ।।८।।

बड़े दरखत कुण्ड लों, ऊपर छाया सीतल ।
अब दरखत मोहोलों माफक, दोऊ तरफों बीच जल ।।९।।

इत दोऊ तरफों कठेड़ा, ऊपर सोभित जल निरमल ।
जहां लग जल ढांप्या चल्या, जुबां कहा कहे इन अकल ॥१०॥

दोऊ तरफों दोए चबूतरे, दोऊ तरफ कठेड़े दोए ।
बीच थंभ लगते चले, सोभा लेत अति सोए ॥११॥

ऊपर द्योहरियां झलकत, जवेर अति सुन्दर ।
ए खूबी कही न जावहीं, जल खलकत चल्या अन्दर ॥१२॥

कई विध विध के कलस कई, कई किनारे कई जिनस ।
झलकार न माए आकास, कई कटाव कई नकस ॥१३॥

बड़ी रूह रूहें सामिल, हक बैठत इन ठौर ।
ए खूबी कहूँ मैं किन जुबां, इतथें जिनस चली और ॥१४॥

चार थंभ हारें चलीं, ऊपर ढांपिल तरफ दोए ।
यों चल आई दूर लों, ए जल जमुना जोए ॥१५॥

दोऊ किनारों बैठक, बन गेहेरा गिरदवाए ।
अति सोभा इन जोए की, इन जुबां कही न जाए ॥१६॥

दोऊ तरफों जो द्योहरी, कई कंगूरे कलस ऊपर ।
इत बैठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर ॥१७॥

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर ।
एक मोहोल एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर ॥१८॥

इन बन की सोभा क्यों कहूँ, पेड़ चले आए बराबर ।
दोऊ तरफों जुगतें, मोहोल आए ऊपर ॥१९॥

ए लंबे बन को जाए मिल्या, जमुना भर किनार ।
इतथें छत्री ले चल्या, जाए पोहोंच्या नूर के पार ॥२०॥

दोऊ किनारे सीधी चली, पोहोंची पुल केल घाट ।
ए मोहोल चौक इतलों, आगूं चल्या ओर ठाट ॥२१॥

पेहेले बेवरा सातों घाट का, और जोए हौज मिलाए ।
पीछे पुल मोहोल हक के, सो फेर नीके देऊं बताए ॥२२॥

दोऊ पुल के बीच में, सातों घाट सोभित ।
पांच पांच भोम छठी चांदनी, इन मोहोंलों की न होए सिफत ॥२३॥

छूटक छूटक द्योहरी, सातों घाटों माहें ।
दोऊ किनार जड़ाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए ॥२४॥

इतथें चली ताल लों, एक मोहोल एक चबूतर ।
दोऊ तरफों ढांपी चली, जोए हौज मिली यों कर ॥२५॥

बन दोऊ किनारे ले चल्या, ऊपर बराबर जल ।
कोई आगे पीछे दोऊ में नहीं, एक दोरी पात फूल फल ॥२६॥

या विध कुण्ड से ले चली, अति खूबी दोऊ किनार ।
जल ऊपर लटकत चली, दोरी बंध दोऊ हार ॥२७॥

जो रंग जित सोभा लेवहीं, जित चाहिए फल फूल ।
डार पात सब जुगतें, कहा कहे जुबां ए सूल ॥२८॥

दरखत सबे खुसबोए के, खुसबोए जिमी और जल ।
वाए तेज खुसबोए सों, तो कहा कहूँ पात फूल फल ॥२९॥

जिमी आकास जोत में, तेज जोत जल बन ।
नूर द्योहरी किनार दोऊ, अवकास न माए रोसन ॥३०॥

दोरी बंध जल बराबर, दोऊ तरफ चली जो साध[1] ।
चल कुंड से मरोर सीधी चली, मरोर हौज मिली आए आध ॥३१॥

महामत कहे ए मोमिनों, मैं बोलत बुध माफक ।
ख्वाब मन जुबान सों, क्यों करुं बरनन हक ॥३२॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥९६०॥

पुल मोहोल दोऊ जवेर के

तुम देखो दिल में, अरवाहें जो अर्स ।
हक देखावत नजरों, घड़नाले नेहेरें दस ॥१॥

मेहेर करी मेहेबूब ने, मोहोल देखे ऊपर जोए ।
ए सुख कहूं मैं किनको, मोमिन बिना न कोए ॥२॥

तले ताक[2] अति सोभित, साम सामी बार[3] ।
जल छोड़े ना हद अपनी, निकसत सामी द्वार ॥३॥

नेहेरें आवत जिन द्वार की, निकसत सामी द्वार ।
तले मोहोल के आए के, जल चल्या जात है पार ॥४॥

१. सीधी । २. पुल की मेहेराब । ३. दोरी बंध ।

मोहोल पांचों भोम के, सोभित बराबर ।
दोऊ तरफों देखत, पुल मोहोल पानी ऊपर ।।५।।
दोऊ मोहोलों बीच में, पानी तले आए निकसत ।
ए मोहोल नूरजमाल के, जुबाँ कहा करे सिफत ।।६।।
सामी अर्स द्वार के, बीच अमृत बन पाट ।
तीन बाएं तीन दाहिने, ए बेवरा सातों घाट ।।७।।
लगता बट घाट के, चारों खूंटों चार हार ।
सो चारों तरफों बराबर, दो जल पर दोए किनार ।।८।।
और मोहोल घाट केल के, सो भी जिनस इन ।
ए दोऊ मोहोल अति सुन्दर, करत साम सामी रोसन ।।९।।
साम सामी थंभ झरोखे, और सामें बड़े देहेलान ।
क्यों कहूं सिफत इन जुबां, जोए ऊपर मोहोल सुभान ॥१०॥
चारों तरफों मोहोल छज्जे, तामें एक तरफ भया नूर ।
तरफ दूजी अर्स अजीम, दोऊ तरफों जल जहूर ॥११॥
पांच भोम छठी चांदनी, ए खूबी अति सोभित ।
ए हद इन मोहोलन की, जुबां क्या करसी सिफत ॥१२॥
सात घाट बीच में लिए, दोए मोहोल दोऊ किनार ।
पुल पूरे जल ऊपर, ले वार से लग पार ॥१३॥
दोऊ तरफों बिरिख अति सुन्दर, दोऊ तरफों मोहोल सुन्दर ।
बीच जोए सातों घाटों, दस नेहेरें चलें अंदर ॥१४॥
ए अर्स जिमी के जवेर, ए जवेर मोहोल नूर तिन ।
जोत बीच आसमान में, मावत नहीं रोसन ॥१५॥
नूरतजल्ला नूर के, बीच में ए मोहोलात ।
ए सुख बका के क्यों कहूं, इन मोहोलों खेलें हक जात ॥१६॥

हक ए सुख देवें हादी[1] को, और देवें रूहन ।
ए सुख अर्स अजीम के, क्यों कहूं जुबां इन ॥१७॥
महामत कहे ए मोमिनों, ए सुख अपने अर्स के ।
एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे ॥१८॥

॥प्रकरण॥१६॥चौपाई॥९७८॥

पार जोए के बन खूबी

पार जमुना जो बन, इसी भांत दिल आन ।
दोरी बंध बन ले चल्या, डारी सब समान ॥१॥
जहां लग नजरों देखिए, तहां लग एही बन ।
जित जमुना तले आए मिली, देखो किनार एही रोसन ॥२॥
दोऊ किनारे बन सोभित, चल्या जल जमुना ले ।
रोसनी न माए आकास लों, क्या कहे जुबां नूर ए ॥३॥
चल्या अछर के मोहोल लों, एकल छत्री नूर ।
जैसा बन इत धाम का, ए भी तैसा ही जहूर ॥४॥
मोहोल के पीछे फिरवल्या, जहां लों पोहोंचे नजर ।
सब ठौरों एही रोसनी, कहां लों कहूं क्यों कर ॥५॥
सुन्दर दरवाजा नूर का, रोसन झरोखे गिरदवाए ।
नव भोम बिराजत, मोहोल रोसन रहे छिटकाए ॥६॥
इसी भांत है चांदनी, ऐसी कांगरी ऊपर ।
इतथें जब देखिए, तब आवत धाम नजर ॥७॥
दोऊ दरवाजे साम सामी, सोभित दोरी बंध ।
नूर[2] नूरबिलंद[3] की, जुबां कहा कहे ए सनंध ॥८॥
एकल छाया बन की, जहां लों नजर देखत ।
तोलों फेर सब देखिया, सोभा सब में अतंत ॥९॥

१. श्यामाजी । २. अक्षरधाम । ३. परमधाम ।

खूबी इन भोम बन की, जानों फेर फेर देखूं धाए[1] ।
देख देख के देखिए, तो नजर न काढ़ी जाए ॥१०॥
सब एक बन छांहेड़ी, श्री धाम के गिरदवाए ।
गिरदवाए जमुना तलाव के, नूर अछर पोहोंचे आए ॥११॥
बन नूर के फिरवल्या, एही छाया है तित ।
इन जुबां ए बरनन, क्यों कर करूं सिफत ॥१२॥
अनेक पसु इन बन में, अनेक हैं जानवर ।
खेलत बोलत गून्जत, करत चकोसर[2] ॥१३॥
कई खूबी पसु केसन की, कई खूबी जानवर पर[3] ।
कई सुन्दर सोभा नकस, ए जुबां कहे क्यों कर ॥१४॥
कई मुख बानी बोलत, अतंत मीठी जुबान ।
अति सुन्दर हैं सोहने, क्यों कर कीजे बयान ॥१५॥
कई खेलत करत लड़ाइया, कई कूदत कई फांदत ।
उड़के कई देखावहीं, कई बानी बोल रिझावत ॥१६॥
पसु पंखी सब बन में, घेरों घेर फिरत ।
कई तले कई बन पर, कई विध खेल करत ॥१७॥
राज स्यामाजी साथ सों, खेलत हैं इन बन ।
ए जो ठौर कहे सब तुमको, तुम जिन भूलो एक खिन ॥१८॥
धनी कबूं देखें फेर दौड़ते, कबूं बैठ चले सुखपाल ।
ए बन जमुनाजीय का, एही बन फिरता ताल ॥१९॥
कबूं राज आगूं दौड़त, ताली स्यामाजी को दे ।
पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हाँसी का ए ॥२०॥
महामत कहे सुनो साथ जी, खिन बन छोड़ो जिन ।
या मंदिरों संग धनीय के, विलसो रात और दिन ॥२१॥

॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥९९९॥

१. दौड़कर । २. कौतुहल, शोरगुल । ३. पंख ।

परिकरमा बड़ी फिराक की

क्यों दियो रे बिछोहा[1] दुलहा, छूटी हक खिलवत ।
हम अरवाहें जो अर्स की, फेर कब देखें हक सूरत ।।१।।

बेसक इलम दिया अपना, आप आए के इत ।
ना रह्या धोखा जरा हमको, देखाए दई निसबत ।।२।।

खेल देखाए उरझाए हमको, सो फेर दिया छुड़ाए ।
ना तो ऐसा फरेब, कबूं किन छोड्या न जाए ।।३।।

हम वास्ते रसूल भेजिया, और भेज्या अपना फुरमान ।
सो इत काहूं न खोलिया, मिली चौदे तबक की जहान ।।४।।

सो कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, दई महंमद हकी सूरत ।
कह्या आखिर आवसी अर्स रूहें, खोलो तिन बीच मारफत ।।५।।

खिलवत संदेसे दिए रूहअल्ला, जो मेहेर कर केहेलाए ।
किन खोले न द्वार अर्स के, मोको सब विध दई समझाए ।।६।।

मुझे संदेसे खिलवत के, सब रूहअल्ला दई सिखाए ।
बेसक इलम अर्स का, मोहे सब विध दई बताए ।।७।।

छूटी रूहों को अर्स की, मूल मेले की लज्जत ।
इस्क न आवे क्यों हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत ।।८।।

फेर दई हकें मेहेर कर, मूल मेले की लज्जत ।
क्यों न जागें रूहें ए सुन के, जाकी इन हकसों निसबत ।।९।।

बेसक इलम रूहों पाइया, अजूं नजर क्यों ना खोलत ।
क्यों न आवे हमको इस्क, जाकी अर्स अजीम निसबत ॥१०॥

पेहेचान हुई सब विध की, पाई हक मारफत ।
क्यों न आवे इस्क हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत ॥११॥

१. वियोग, जुदाई ।

हजूर खिन एक ना हुई, इत चली जात मुद्दत ।
ए क्या हक को खबर है नहीं, वह कहां गई निसबत ॥१२॥

जो सुख अर्स अजीम के, सो देखाए दुनीमें इत ।
भेज्या इलम बका अपना, वह कहां गई निसबत ॥१३॥

बेसुध चौदे तबकों, तामें हमको बेसक किए इत ।
सुख अर्सों के सब दिए, कर ऐसी हक निसबत ॥१४॥

हम पर अर्स में हँसने, माया देखाई तीन बखत ।
इस्क हमारा देखने, वह कहां गई निसबत ॥१५॥

चौदे तबक आड़े देयके, सो नजीक छिपे क्यों कित ।
निपट सेहेरग से नजीक, वह कहां गई निसबत ॥१६॥

किन तरफ हमारे तुम हो, किन तरफ तुमारे हम ।
बीच भयो क्यों ब्रह्मांड, क्यों हम पकड़ बैठे कदम ॥१७॥

पेहेले क्यों फरामोसी देयके, रूहें डारी माहें छल ।
पीछे ताला कुंजी दोउ दिए, दई खोलने की कल ॥१८॥

किन विध दई तुम बेसकी, सक रही न किन सब्द ।
दुनियां चौदे तबक में, सुध परी न बांधी हद ॥१९॥

हमको सक ना हद में, ना कछू बेहद सक ।
सक रही न पार बेहद की, दिया बेसक इलम हक ॥२०॥

ए विध रूहें देखी जिनों, सो केहेनी में आवत नाहें ।
कछू वास्ते हम रूहनके, हुकम कहावत जुबांए ॥२१॥

ए हक की मैं हुकम ले, कई विध बका द्वार खोलत ।
याद देने अर्स अजीम में, होत सब वास्ते उमत ॥२२॥

हम तो इत आए नहीं, अर्स एक दम छोड़्या न जाए ।
जागे पीछे दुलहा, हम देख्या खेल बनाए ॥२३॥

अर्स निसबत हक की, खेल में आए बिना लेत सुख ।
हिकमत[1] देखन हक हुकम की, कही न जाए या मुख ॥२४॥

हुकमें मांग्या हुकम पे, सो हुकमैं देवनहार ।
सो हुकम फैल्या सबमें हक का, सो हकै खबरदार ॥२५॥

बिना हुकम हक के जरा नहीं, कहे सुने देखे हुकम ।
किल्ली[2] इलम हुकमें सब दई, किया तेहेकीक[3] हुकमें खसम ॥२६॥

सुख खिलवत इन मुख क्यों कहूँ, कह्या न जाए जुबांए ।
ए बातें आसिक मासूक की, रूहें जानें अर्स दिल माहें ॥२७॥

जो सुख खोलूं अर्स के, माहें मिलावे इत ।
निकस जाए मेरी उमर, केहे न सकों खिन की सिफत ॥२८॥

हम रूहों को चेतन किए, खोली रूह-अल्ला हकीकत ।
ए खिलवत के सुख कहां गए, हम कब पावसी ए न्यामत ॥२९॥

हक खिलवत सुख मोमिनों, लिखी फुरमान में मारफत ।
कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत ॥३०॥

रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत ।
दिल अर्स मोमिन लीजियो, कहे रूह मता हुकमें महामत ॥३१॥

॥प्रकरण॥१८॥चौपाई॥१०३०॥

खिलवत से चांदनी ताँईं

भोम तले की बैठाए के, खेल देखाया बांध उमेद ।
हक बिना हकीकत कौन कहे, दिए बेसक इलम भेद ॥१॥

कहां सुख झरोखे अर्स के, कहां सुख सीतल बयार ।
कहां सुख बन कहां खेलना, कहां सुख बखत मलार ॥२॥

कहां सुख कोकिला मोर के, बन में करें टहूंकार ।
बादल अंबर छाइया, सुख बीजलियां चमकार ॥३॥

१. कारीगरी (युक्ति) । २. चाबी । ३. निश्चय ।

दो दो रूहें मिल बैठती, सुख लेती सुखपाल ।
कहां सुख साथ मासूक के, सैर जाते जोए या ताल ।।४।।

ए सुख हमारे कहां गए, कहां जाए करूं पुकार ।
तुम कोई न देखाया तुम बिना, अजूं क्यों न करो विचार ।।५।।

क्यों दिन जावें एकले, किन विध जावे रात ।
किन विध बसो तुम अर्स में, वह कहां गई मूल बात ।।६।।

सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मिल मन्दिर बारे हजार ।
कौन देवे मासूक बिना, सुख भुलवनी अपार ।।७।।

हम अर्स भोम तीसरी, चढ़ देखें नूर मकान ।
दोऊ द्वारों नूर झलके, ए सुख कब देसी मेहेरबान ।।८।।

इत आवत झरोखे मुजरे, हमारे मेहेबूब के ।
ए सुख धनी हमको, फेर कब देखाओगे ।।९।।

बड़ी बैठक जित होत है, इन बड़े देहेलान ।
ए कब देखाओ मेला बड़ा, मेरे वाहेदत बड़े सुभान ॥१०॥

चौथी भोम सुख निरत के, कौन देवे कर हेत ।
ए सुख अर्स के इन जिमी, हक हमको विध विध देत ॥११॥

भोम पांचमी सुख पौढ़न के, ए हक की बातें नेक ।
कौन केहेवे मासूक बिना, आसिक गुझ विवेक ॥१२॥

सुख छठी भोम मोहोलन के, ए कौन देवे कर विचार ।
इन जुबां सुख क्यों कहूँ, इन हक के बेसुमार ॥१३॥

सुख कहा कहूँ भोम सातमी, जो लेते खटों छपर ।
हक हादी रूहें झूलत, साम सामी बांध नजर ॥१४॥

सुख हिंडोले भोम आठमी, हक हादी रूहें हींचत ।
ए चारों तरफों के झूलने, हक हमको देत लज्जत ॥१५॥

नौमी भोम बैठाए के, जो सुख नजरों दूर ।
ए कौन देवे सुख हक बिना, बुलाए के अपने हजूर ॥१६॥

सुख चांदनी चढ़ाए के, पूनम की मध्य रात ।
ए कौन देवे मासूक बिना, इस्क भीगे अंग गात[1] ॥१७॥

आगे गुमटियों चढ़ाय के, नजरों नूर मकान ।
कौन देवे अंगुरी बताए के, बिना मेहेबूब मेहेरबान ॥१८॥

दसों भोम के मोहोल सुख, कौन देवे मासूक बिन ।
सो इत सुख ल्याए इलम, ना तो कौन देवे जिमी इन ॥१९॥

॥प्रकरण॥१९॥चौपाई॥१०४९॥

अर्स आगूं खुली चांदनी

दोऊ कमाड़ों की क्यों कहूं, नूर रंग दरपन ।
ए रोसनी जुबां क्यों कहे, भरया नूर अंबर[2] धरन[3] ॥१॥

दोऊ बाजू बड़े दरवाजे, रूह अल्ला कह्या रंग लाल ।
बिन अंग जुबां बोलना, आगूं क्यों कहूं अर्स दिवाल ॥२॥

चबूतरे दिवाल में, दोऊ तरफ आठ मेहेराब ।
जो नीके कर निरखिए, तो तबहीं उड़ जाए ख्वाब ॥३॥

ए जो कहे आठ मेहेराव, दोऊ चबूतरों पर ।
ए बैठक हक हादी रूहें, भरया नूर जिमी अंबर ॥४॥

बीस थंभ रंग पांच के, आगूं अर्स द्वार ।
दस बाएं दस दाहिने, करें रोसन नूर झलकार ॥५॥

हीरा मानिक पोखरे[4], पाच नीलवी जे ।
नूर थंभ तरफ दाहिनी, तरफ बाईं यही नूर के ॥६॥

ज्यों आगूं त्यों पीछल, याके सनमुख माहें दिवाल ।
बीसों दोए चबूतरे, इन दिवाल रंग लाल ॥७॥

१. शरीर । २. आसमान । ३. जिमी । ४. पुखराज ।

अर्स आगूं खुली चांदनी, माहें चबूतरे चार ।
दोए तले बीच बन के, दो ऊपर लगते द्वार ।।८।।

इन मोहोलों सुख क्यों कहूं, आगूं बड़े दरबार ।
हक हादी सुख इन कठेड़े, देत बैठाए बारे हजार ।।९।।

आगूं इन मोहोलों खेलौंने, खेल करत कला अपार ।
नाम जुदे जुदे तो कहूं, जो कहूं आवे माहें सुमार ॥१०॥

ए सुख लें अरवा अर्स की, हक हादी संग निस दिन ।
ए जाहेर किया इत हुकमें, वास्ते हम मोमिन ॥११॥

चारों हांसों खुली चांदनी, तीन तरफों बन बराबर ।
तरफ चौथी झरोखे अर्स के, सोभे आगूं चबूतर ॥१२॥

तले जो दोऊ चबूतरे, बिरिख लाल हरा तिन पर ।
ए बिरिख द्वार चबूतरे, नूर रोसन करत अंबर ॥१३॥

इत जोत जिमी की क्यों कहूं, हुओ आकास जिमी एक ।
सोभा क्यों कहूं आगूं अर्स के, जानों सबसे एह विसेक ॥१४॥

आगूं अर्स चबूतरे, हम सखियां बैठत मिलकर ।
ए सुख हमारे कहां गए, खेलत नाचत बांदर ॥१५॥

इत तखत कदेले कुरसियां, बैठें रूहें बारे हजार ।
सुख इतके हमारे कहां गए, मोर नचावनहार ॥१६॥

हक हमारे इत बैठके, कई विध करें मनुहार ।
कई पसु पंखी अर्सके, इत सुख देते अपार ॥१७॥

सुख सब पसु पंखियन के, कई खेल बोल दें सुख ।
ए आगूं अर्स आराम के, क्यों कर कहूं इन मुख ॥१८॥

कबूं एक एक पसु खेलत, कबूं एक एक जानवर ।
ए सुख अर्स अजीम के, सुपन जुबां कहे क्यों कर ॥१९॥

कई बांदर बाजे बजावहीं, आगूं अर्स के नाचत ।
ए सुख हमारे कहां गए, हम देख देख राचत ॥२०॥

इत कई विध पसु खेलत, कई खेलत हैं जानवर ।
खेल बोल नाच देखावहीं, कई हँसावत लड़कर ॥२१॥

हक हादी रूहें चांदनी बैठत, ऊपर होत बखत मलार ।
मोर बांदर दादुर कोकिला, सुख देत कर टहुंकार ॥२२॥

सुख कहां गए इन समें के, कई विध बन करें गुंजार ।
सेहेरां[१] गाजत छाया बादली, होत बीजलियां चमकार ॥२३॥

बट पीपल की चौकियां, चारों भोम हिंडोले ।
ए सुख कब हम लेवेंगे, हक हादी रूहें भेले ॥२४॥

चारों भोम चौकी हिंडोले, हक हादी रूहें हींचत ।
हम सुख लेती सब मिल के, सो कहां गई निसबत ॥२५॥

एक अलंग[२] सारी हिंडोले, सो सिफत न कही जाए ।
अधिकारी इन सुख के, सो काहे को रूह बिलखाए ॥२६॥

पसु पंखी चारों भोम के, सुख देत दिल चाहे ।
सो सुख कब लेसी मोमिन, क्यों इन बिन रह्यो जाए ॥२७॥

कब सुख लेसी फूल बाग के, बाग ऊपर झरोखे ।
कहां जाऊं किनसों कहूं, कब हम सुख लेवें ए ॥२८॥

ए जो चेहेबच्चे फूल बाग के, इत कारंजे[३] उछलत ।
ए सुख कब हम पावेंगे, कहां जाए पुकारूं कित ॥२९॥

जो सुख लाल चबूतरे, लेत मोहोला[४] बड़े पसुअन ।
ए बैठक सुख क्यों कहूं, ए सुख जानें अर्स के तन ॥३०॥

हांस[५] चालीस चबूतरा, धरत कठेड़ा जोत ।
केहे केहे मुख केता कहे, आसमान भर्यो उद्दोत ॥३१॥

१. मेघ । २. दोरीबंध । ३. फुहारे । ४. मुजरा, दर्शन । ५. पहल ।

बाघ चीते गज केसरी, हंस गरूड़ मुरग मोर ।
पसु पंखी सुख क्यों कहूं, इन जुबां के जोर ॥३२॥

इत बिछौने दुलीचे, ऊपर सोभित सिंघासन ।
सोभे कई भांतों छत्रियां, कब हक देवें हादी रूहन ॥३३॥

कई रंगों बन सोभित, चौक सोभित चबूतर ।
ए खूबी आगूं अर्सके, इन जुबां कहूं क्यों कर ॥३४॥

कहां बन कहां खेलना, कहां सुख मेले सखियन ।
कहां नाचें मोर बांदर, कहां सुख पसु पंखियन ॥३५॥

अर्स जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आकास ।
कब देखें सुख इन जिमी, जित बरसत नूर प्रकास ॥३६॥

जोत ए दरखत पात की, हुओ अंबर जिमी रोसन ।
धनी ए सुख कब देओगे हमें, अपने इन बागन ॥३७॥

इत हक कहावें हुकम कहे, वास्ते हादी रूहन ।
अर्स में केहेसी सुख खेल के, सिर ले कहे महामत मोमिन ॥३८॥

॥प्रकरण॥२०॥चौपाई॥१०८७॥

सात घाट पुल हौज

और सुख सातों घाट के, और सुख दोऊ पुल ।
ए सुख सब अर्स के, कब लेसी हम मिल ॥१॥

घाट जांबू अति सोभित, जिमी जड़ाव किनारे जोए ।
कई मोहोल किनारे जवेरों, बन सोभित किनारे सोए ॥२॥

ए बन जड़ाव जानों चंद्रवा, कई रंग बने इन हाल ।
जाए पोहोंच्या लग झरोखों, अर्स की हद दिवाल ॥३॥

देखो बन ए नारंगी, जानो उनथें एह अधिक ।
सुख लेती रूहें इन घाट के, कब देसी हमें हक ॥४॥

घाट नारंगी अति भला, जानों कोई न इन समान ।
सो कब पावें सुख झीलना, जो हम लेतीं संग सुभान ।।५।।

कई रंग बन छत्रियां, सुन्दर अति सोभाए ।
करत अंबर में रोसनी, पोहोंची अर्स हिंडोलों जाए ।।६।।

सोभा बट घाट क्यों कहूं, तरफ चारों चार दिवाल ।
जरी किनारे दोऊ सोभित, क्यों देऊं इन मिसाल ।।७।।

ऊपर बिराजत हिंडोले, तरफ चारों सोभित ।
ऊपर जल पुल लगते, ए सुख कहां गए अतंत ।।८।।

क्यों कहूं रेती इन भोम की, जानो उज्जल मोती सेत ।
ए सुख हमारे कहां गए, जो इन भोम में लेत ।।९।।

अचरज बन इन घाट का, सोभित ज्यों मंदिर ।
बेल पात फूल फल छांहें, ए सोभित अति सुन्दर ॥१०॥

कहां सुख सातों घाट के, कहां सुख पुल मोहोलात ।
कहां सुख झरोखे जल पर, जो तले नेहेरें चली जात ॥११॥

जोए बट थें कुंज बन चल्या, बोहोत रेती बीच ताए ।
ताल हिंडोलों बीच होए, आगूं निकस्या जाए ॥१२॥

किन विध लेवें सुख बन के, क्यों हिंडोलों हींचत ।
किन विध रूहें अर्स में, माहों-माहें खेल करत ॥१३॥

मोहोल बने बेलियन के, सेज हिंडोले सिंघासन ।
चेहेबच्चे फुहारे कई सुख, कब होसी रूहन ॥१४॥

इन मंदिरों सेज्या सिंघासन, छोटे चेहेबच्चे हिंडोले ।
कई फुहारें नेहेरें चलें, धनी हमें कब सुख देओगे ए ॥१५॥

कहां सुख गलियां अर्स की, माहों-माहें बांध के होड़ ।
रूहें रेती में ठेकतियां, दौड़तियां कर जोड़ ॥१६॥

इन घाट आगूं पुल जोए पर, जाए पार पोहोंच्या पुल ।
ए भी तिन बराबर, जो पेहेले कह्या अव्वल ॥१७॥

बन जो दोऊ किनारों, साम सामी सोभात[1] ।
हारें चौकी पांच हार की, पोहोंची पुल पर छात ॥१८॥

पुल तले नेहेरें चलें, दोऊ पुल मुकाबिल ।
दोऊ बीच सोभा देय के, जाए ताल पोहोंच्या जल ॥१९॥

कहां गए सुख जोए के, जमुना जरी किनार ।
कहां सुख जल कहां झीलना, कहां नित नए सिनगार ॥२०॥

दोऊ किनारे जोए के, एक मोहोल एक चबूतर ।
कहूं हेम रंग कहूं जवेर, अति सोभित बन ऊपर ॥२१॥

जमुना दोऊ किनार के, मोहोल ढांपिल दोऊ ओर ।
तलाव तरफ जोए आए के, जाए माहें मिली मरोर ॥२२॥

॥प्रकरण॥२१॥चौपाई॥११०९॥

हौज कौसर

अब ताल पाल की क्यों कहूं, बन पांच हार गिरदवाए ।
फिरती द्योहरी चबूतरे, सोभा इन मुख कही न जाए ॥१॥

बड़े घाट ताल के चार हैं, चारों सनमुख बराबर ।
दोऊ तरफ उतरती द्योहरी, तले आगूं चबूतर ॥२॥

पाल ऊपर जो द्योहरियां, आगूं हर द्योहरी चबूतर ।
तिन दोऊ तरफों सीढ़ियां, जित होत चढ़ उतर ॥३॥

सीढ़ी मुकाबिल सीढ़ियां, आए मिलत हैं जित ।
दो दो बीच द्वार नें, सबों सोभित परकोटे इत ॥४॥

खिड़की मुकाबिल खिड़कियां, अन्दर बाहेर जे ।
जो सुख हैं मोहोलन के, कब लेसी हम ए ॥५॥

१. शोभायमान ।

ऊपर परकोटे कांगरी, ऊपर हर द्वार नों ।
कांगरी पाल किनार पर, सिफत आवे ना जुबां मों ।।६।।

दोऊ द्वार बीच मेहेराब जो, ए सोभा कहूं क्यों कर ।
पड़साल आगूं सबन के, गिरदवाए सोभा जल पर ।।७।।

अब जल की सोभा क्यों कहूं, हम करती इत झीलन ।
चित्त चाहे करें सिनगार, ए सुख कब लेसीं मोमिन ।।८।।

मासूक संग सुख मिल के, इत हिंडोले पाल पर ।
सो सुख याद क्यों न आवहीं, जो हम लेती मिलकर ।।९।।

सब एक हीरे की पाल है, टापू मोहोल याही के ।
अनेक रंगों कई जुगते, किन विध कहूं मुख ए ॥१०॥

चांदनी झरोखे बैठ के, किन विध लेती सुख ।
सो याद देत धनी इन जिमी, काल क्यों काटूं माहें दुख ॥११॥

हकें सुख अर्स देखाइया, इलम दे करी बेसक ।
हम क्यों रहें इन मासूक बिना, जो कछुए होए इस्क ॥१२॥

इन मोहोल सुख रूहों के, और सुख घाटों चार ।
हाए हाए क्यों जाए हमें रात दिन, ए सुख बैठी रूहें हार ॥१३॥

याद देत हक ए सुख, हाए हाए तो भी न लगे घाए ।
ऐसी बेसकी ले क्यों रहे, जो होए अर्स अरवाए ॥१४॥

हक हुकम ऐसा करत है, ना तो तेहेकीक ना रहे तन ।
अब हक इत रूहों राखत, कोई अचरज हाँसी कारन ॥१५॥

याद करों सुख हाँसीय के, के याद करों सुखपाल ।
के याद करों तले मोहोल के, हाए हाए अजूं ना बदलत हाल ॥१६॥

।।प्रकरण।।२२।।चौपाई।।११२५।।

नेहेरें मोहोलों में

सुख नेहेरों का अलेखे, सबों ऊपर मोहोलात ।
कई मिली कई जुदियां, तरफ चारों चली जात ।।१।।

चार तरफ चार नेहेरें, ऊपर सब ढांपेल ।
कहूं चार आठ सोले मिली, कई विध मोहोलों खेल ।।२।।

चारों खूटों मोहोल ढांपिल, जानूं के रचिया सेहेर ।
इन विध बराबर गलियां, आड़ी ऊंची गली बीच नेहेर ।।३।।

कई कोट अलेखे पदमों, सेहेर बसे पसुअन ।
कई सेहेर हैं जानवर, सबों इस्क अकल चेतन ।।४।।

यों कई नेहेरें बीच सेहेरन के, इन सेहेरों कई मोहोलात ।
हर मोहोलों कई बैठकें, ए सोभा कही न जात ।।५।।

अब नेहेरें बरनन तो करुं, जो कछू होए हिसाब ।
मोहोल मोहोल बीच कई कुंड बने, कई कारंजे[1] छूटे ऊंचे आब ।।६।।

कई जल मोहोलों चढ़े, कई माहोलों से उपरा ऊपर ।
कई लाखों हजारों बैठकें, सुख इत के कहूं क्यों कर ।।७।।

कई मोहोल ऊंचे अति बड़े, जैसे हक दिल चाहे ।
हर मोहोलों बीच नेहेरें चलें, ए सुख बैठक कही न जाए ।।८।।

हर जातों मोहोल जुदे जुदे, जुदी जुगतें पानी चलत ।
जुदी जुदी जुगतें कारंजे, क्यों कर कहूं एह सिफत ।।९।।

इन बड़े मोहोल सुख नेहेरों के, हमें कब देओगे खसम ।
मांगे मंगाए जो देओ, सब हुआ हाथ हुकम ॥१०॥

सागर से नेहेरें आवत, पानी जुदा जुदा फैलात ।
कई विध मोहोलों होए के, फेर सागरों में समात ॥११॥

१. फुवारे ।

कई चलत चक्राव ज्यों, कई आड़ी ऊंची चलत ।
कई चलत मोहोलों पर, कई मोहोलों से उतरत ॥१२॥

एक नेहेर से कई नेहेरें, जुदी जुदी फिरत ।
कई जुदी जुदी नेहेरें होए के, कई एक में अनेक मिलत ॥१३॥

कई नेहेरें मोहोलों मिने, चारों तरफों फिरत ।
कई मोहोल नेहेरें कई, कई विध विध सों विचरत ॥१४॥

कहूं चार नेहेरें मिली चली, कहूं चार से सोले निकसत ।
कई नेहेरें सुख इन मोहोलों, धनी कब करसी प्राप्त ॥१५॥

कहूं नेहेरें जाहेर चली, कई पहाड़ों के माहें ।
नेहेरें पहाड़ों या सागरों, सोभा क्यों कहूं इन जुबांए ॥१६॥

॥प्रकरण॥२३॥चौपाई॥११४१॥

मानिक पहाड़ के हिंडोले

पहाड़ मानिक मोहोल कई, यों पहाड़ मोहोल अनेक ।
सब अपार अलेखे इन जिमी, कहां लो कहूं विवेक ॥१॥

बड़े पहाड़ जो हिंडोले, बारे हजार बैठत ।
एकै छप्पर खटके, हक हादी साथ हींचत ॥२॥

अनेक पहाड़ कई हिंडोले, जुदी जुदी कई जुगत ।
जो सुख हिंडोले पहाड़ के, जुबां कर ना सके सिफत ॥३॥

कई हिंडोले पहाड़ में, ऊपर से ढांपेल ।
सुख लेवें कई विध के, रूहें करें कई खेल ॥४॥

कई सुख लें मीठे पहाड़ के, कई विध हींचे हिंडोले ।
कई सुख हिंडोले बाहेर, बीच पहाड़ के खुले ॥५॥

एक जरा इन जिमी का, जोत न माए आसमान ।
जोत जवेरों पहाड़ों की, इत कहा कहे जुबान ॥६॥

कोई पहाड़ गिरदवाए का, कोई बराबर खूंटों चार ।
जो सोभा पहाड़न की, सो न आवे माहें सुमार ।।७।।
जिमी गिरदवाए पहाड़ों की, सब देखत बराबर ।
पहाड़ भी सीधे सब तरफों, जानों हकें किए दिल धर ।।८।।
कई मोहोल पहाड़ों मिने, कई मोहोल पहाड़ों ऊपर ।
जो बन पहाड़ या जिमिएं, सो इन जुबां कहूं क्यों कर ।।९।।
ना सुख कहे जाएं जिमी के, ना सुख कहे जाएं बन ।
ना सुख कहे जाएं मोहोलों के, ना सुख कहे जाएं पहाड़न ॥१०॥
कई पहाड़ झिरने झिरें, कई ऊपर नेहेरें चली जाएं ।
कई उतरें ऊपर से चादरें, कई तालों बीच आए समाए ॥११॥
नेहेरें बन में होए चलीं, सो नेहेरें कई मिलत ।
आगूं आए मोहोल बन के, इत चली कई जुगत ॥१२॥
ए सुख हमारे कहां गए, ए जो खेल होत दिन रात ।
हक के साथ हम सब रूहें, हँस हँस करती बात ॥१३॥

।।प्रकरण।।२४।।चौपाई।।११५४।।

बन के मोहोल नेहेरें

बन छाया है मोहोल जो, इत मोहोल बने बन के ।
जानो सोभा सब से अतंत है, सब सुख लेती रूहें ए ।।१।।
नेहेरें सागर से खुली चलीं, सो भी भई बन माहें ।
ए बन सोभा नेहेरों की, खूबी क्यों केहेसी जुबांएं ।।२।।
सागर किनारे जो बन, ए बन नेहेरें विवेक ।
मोहोल बन जो देखिए, जानों सोई नेक से नेक ।।३।।
कई मोहोल ढिग सागरों, और कई मोहोल बनराए ।
तिनों में नेहेरें चलें, हम सुख लेतीं इत आए ।।४।।

ए बन नेहेरें दूर लों, जहां लो नजर फिरत ।
ए सुख संग सुभान के, हम कई विध लेतीं इत ।।५।।

इन बन की और मोहोल की, और पहाड़ हिंडोले जे ।
जिमी सब बराबर, अर्स लग देखिए ए ।।६।।

बन बिगर की जो जिमी, जानों जरी दुलीचे बिछाए ।
ए दूब जोत आसमान लों, रह्या नूरै नूर भराए ।।७।।

ए नेहेरें अति दूर लग, अति दूर देखे सागर ।
सागर नेहेरें मोहोल जो, अति बड़े देखे सुन्दर ।।८।।

सागर किनारे मोहोल जो, सो जाए लगे आसमान ।
ए मोहोल जुदी जुदी जिनसों, इत सुख चाहिए सागर समान ।।९।।

कई मोहोल बराबर सागरों, मोहोल ऊंचे चढ़े अनेक ।
कई जुगतें सोभा सुन्दर, ए क्यों कहे जुबां विवेक ॥१०॥

कई मोहोल सुख सागरों, कई सुख टापू मोहोल ।
ए सुख अपार अलेखे, सो क्यों कहूं इनकी तौल ॥११॥

महामत कहे सुनो मोमिनों, बीच टापू जल गिरदवाए ।
ए अति ऊंचे मोहोल सुन्दर, देखो अपनी रूह जगाए ॥१२॥

।।प्रकरण।।२५।।चौपाई।।११६६।।

पुखराज से पाट घाट ताँईं

सुख क्यों कहूं पहाड़ पुखराज के, और कहा कहूं मोहोल तले ।
ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते, मोहोल तीसरे तिन उपले ।।१।।

आठ पहाड़ तले मोहोल के, ऊपर ताल पुखराज ।
कई मोहोलातें आठों पर, ऊंचे रहे मोहोल बिराज ।।२।।

ताल ऊपर मोहोलात जो, आठ पहाड़ तले जो इन ।
मोहोल उपले आकास लों, किया निपट नूर रोसन ।।३।।

निपट बड़े मोहोल पहाड़ के, निपट बड़े दरबार ।
कब सुख लेसी इनके, ए धनी तुमहीं देवनहार ।।४।।

इत बड़े जानवर खेलत, आगूं बड़े दरबार ।
ए सुख कब हम लेयसी, मोमिन इत इंतजार ।।५।।

कई रंगों कई विध खेलत, पहाड़ से सेत[1] फील[2] ।
दम न रहें मासूक बिना, धनी क्यों डारी बीच ढील ।।६।।

कहां गए सुख आपके, हम कहां पुकारें जाए ।
तुम बिना नहीं कोई कितहूं, मोमिन बेसक किए बनाए ।।७।।

और सुख पहाड़ ताल के, तीनों तरफों मोहोलात ।
पहाड़ सुख मोहोल अंदर, जो कई नेहेरें चली जात ।।८।।

गुरज दोऊ के बीच में, गिरत चादरें[3] चार ।
चार चार हर एक में, उतरत सोले धार ।।९।।

सो परत बीचले कुंड में, इत चारों तरफ देहेलान ।
ए सुख कब हम लेयसी, इन मेले साथ मेहेरबान ॥१०॥

कब सुख लेसी बंगलों, जित नेहेरें चलें चक्राव ।
बीच बीच बगीचे चेहेबच्चे, कई जल उतरे तले तलाव ॥११॥

इन मोहोलों इन बंगलों, इन चेहेबच्चों बगीचों ।
ए सुख छाया बन की, कब देओगे हमकों ॥१२॥

कई सुख बीच बंगलों, कई सुख खूब खुसाली खास ।
सो दिल कब हम देखसी, हकसों विविध विलास ॥१३॥

एक सब्द सखी बोलते, कई ठौरों उठें जी जी कार ।
मन सरूप कई सोहागनी, कई एक पाँउं खड़ियां हजार ॥१४॥

सखी कछुक मन में चाहत, सो आगूं खड़ी ले आए ।
यों चित चाहे सुख धाम के, कब लेसी हम जाए ॥१५॥

१. सफेद । २. हाथी । ३. धाराऐं ।

जोए[1] जितथें हुई जाहेर, कहां सुख इन चबूतर ।
आगूं कुंड जल चलकत, बड़ा बन सोभा ऊपर ॥१६॥

ए बन गिरद पुखराज के, बड़ा बन खूबी लेत ।
ए फेर मिल्या बन जोए के, नूर आकास भर्‌यो जिमी सेत ॥१७॥

इत अनेक वनस्पति, कई पसु पंखी करें जिकर ।
हम इत सुख लेती हक सों, जानों बैठक एही खूबतर[2] ॥१८॥

ए बन मोहोल कई विध के, बड़े बड़े कई बड़े रे ।
मोहोल मंदिरों हिसाब नहीं, चौड़े चौड़े कई चौड़े रे ॥१९॥

जब पीछल चले पुखराज के, अति चौड़ो बड़ो विस्तार ।
ए बन खूबी क्यों कहूं, आवत नहीं सुमार ॥२०॥

एक एक पेड़ पर कई भोमें, भोम भोम कई जुगत ।
पसु पंखी एक बिरिख पर, कई जुगतें बास बसत ॥२१॥

कई तेज जोत प्रकास में, अवकास भर्‌यो ताके नूर ।
जिमी मोहोल बन पसु पंखी, ए कब देखें अर्स जहूर ॥२२॥

ए बन जाए बड़े बन मिल्या, चल गया पुखराज पार ।
अर्स बन सोभा क्यों कहूं, और बन दोऊ किनार ॥२३॥

कुंड आगे ढांपी चली, अदभुत ऊपर मोहोलात ।
अंदर बैठकें क्यों कहूं, दोऊ किनार लिए चली जात ॥२४॥

किनारे कठेड़ा बैठक, अति सुन्दर थंभ सोभात ।
दोऊ तरफों चबूतरे, खूबी इन मुख कही न जात ॥२५॥

जाए आगूं भई जोए जाहेर, ढांपिल दोऊ किनार ।
ऊपर कलस दोऊ कांगरी, और थंभ सोभे हार चार ॥२६॥

जड़ित किनारें दोऊ जल पर, दोऊ कठेड़े गिरदवाए ।
ए सुख लेती मासूक संग, इत अचरज बनराए ॥२७॥

१. जमुनाजी । २. सबसे अच्छी ।

इतथें चली तरफ ताल के, एक मोहोल एक चबूतर ।
दोऊ किनारे कुसादी[1] होए चली, इत सोभा लेत यों कर ॥२८॥

आगूं पुल इत आइया, ऊपर बड़ी मोहोलात ।
कई देहेलान झरोखे जल पर, जल चल्या घड़नाले[2] जात ॥२९॥

पुल पांच भोम छठी चांदनी, चारों तरफों बराबर ।
ए कहां गए सुख रूहन के, ए हम क्यों गए ठौर बिसर ॥३०॥

सात घाट बने बीच में, पुल दूजा तिनके पार ।
दोऊ मोहोल झरोखे बराबर, इत हिंडोले ठंढ़ी बयार[3] ॥३१॥

पुल से आगे घाट केल का, ले चल्या जमुना जोए ।
केल किनारे मिल्या मधुबन, पुखराज अर्स बीच दोए ॥३२॥

लटक रही केलां जोए पर, अति खूबी खूबतर ।
ए सुख कब लेसी इन घाट के, खेलें विध विध जानवर ॥३३॥

इन आगूं घाट लिबोई का, लग्या हिंडोलों जाए ।
क्यों कहूं छब[4] छत्रियन की, ए घाट अति सोभाए ॥३४॥

इत सुख लेवें सब मिलके, रूहें बड़ी रूह हकसों ।
सों फेर सुख कब हम देखसी, लेसी बैठके हिंडोलों ॥३५॥

इन आगूं घाट सोभित, अति बिराजे जोए किनार ।
काहूं काहूं बीच मोहोल है, बन सोभे हार अनार ॥३६॥

जाए मिल्या अर्स दिवालों, सोले गुरज झरोखे बीस ।
हर गुरज बीच बीच में, मोहोल सोभे झरोखे तीस ॥३७॥

इन घाट के ऊपर, रोसन पाँच सै झरोखे ।
इन बन मोहोलों मासूक संग, सुख कब लेसी हम ए ॥३८॥

ए झरोखे एक भोम के, यों भोम झरोखे नवों ठौर ।
तिन ऊपर चाँदनी कांगरी, तापर बैठक विध और ॥३९॥

१. फैलाव से । २. नेहेर पुल के नीचे के मेहेराब । ३. पवन । ४. शोभा ।

आगूं पाट घाट मोहोल सुन्दर, जल पर अति सोभाए ।
तले घड़नाले तिनमें, बीच तीन नेहेरें चली जाए ॥४०॥

थंभ बारे पाट[1] चांदनी, जल हिस्से तीसरे जोए ।
चारों खूंटों थंभ नीलवी, थंभ आठ चार रंग सोए ॥४१॥

लग कठेड़े रूहें बैठत, कई रंग जवेरों जोत ।
बीच बैठे मासूक आसिक, जल बन आकास उद्दोत ॥४२॥

इत सोभित बन अमृत, और कई बिध बन अनेक ।
ए जाए मिल्या लग चांदनी, अर्स आगूं बन विवेक ॥४३॥

द्वार अर्स अजीम का, और नूर द्वार जोए पार ।
ए सुख कब हम देखसी, इन दोऊ दरबार ॥४४॥

नूर पार भी एह बन, और पहाड़ पुखराज ।
इन आगूं बड़ा बन चल्या, रह्या सागरों लग बिराज ॥४५॥

नजर फिरी मेरी दूर लग, देख्या बन विस्तार ।
नीला पीला स्याम सेत कई, कहों कहाँ लग कहूं न सुमार ॥४६॥

जिमी सब बराबर, बन पोहोंच्या सागर जित ।
या बन या मोहोलों मिने, नेहेरें चली गैयां अतंत ॥४७॥

पार ना पहाड़ों हिंडोलों, नहीं मोहोलों नेहेरों पार ।
पार ना बन नेहेरें जिमी का, क्यों पसु पंखी होए निरवार ॥४८॥

पार न आवे सागरों, और पार किनारों नाहें ।
पार ना मोहोलों किनारों, कई नेहेरें आवें जाएं ॥४९॥

मोहोल जिमी बन कहत हों, और पहाड़ नेहेरें बनराए[2] ।
ए कैसे होसी अर्स के, ए देखो रूह जगाए ॥५०॥

कई फौजे पसुअन की, कई फौजें जानवर ।
जिमी खाली कहूं न पाइए, बसत अर्स लसकर[3] ॥५१॥

१. बारादरी । २. बन, बगीचे । ३. सैन्य ।

जिमी बन ए लसकर, जिमी बस्ती न कहूं वीरान ।
सब आए मुजरा करत हैं, आगूं अर्स सुभान ॥५२॥

ए पातसाही अर्स की, केहेनी में आवत नाहें ।
ए कह्या वास्ते मोमिन के, जानों दिल दौड़ावें तांहें ॥५३॥

एक पात न गिरे बन का, ना खिरे पंखी का पर ।
एक जरा जाया[1] न होवहीं, ए अर्स जिमी यों कर ॥५४॥

सब जिमी मोहोल हक के, और सब ठौरों दीदार ।
सब अलेखे अखंड, कहे महामत अर्स अपार ॥५५॥

॥प्रकरण॥२६॥चौपाई॥१२२१॥

पसु पंखियों की पातसाही

एह निमूना ख्वाब का, किया कारन उमत ।
कायम अर्स ख्वाब में, देखाया लेने लज्जत ॥१॥

ब्रह्मसृष्ट कही वेद ने, अहेल-अल्ला कहे फुरमान ।
निसबत सुख ख्वाब में, कर दई हक पेहेचान ॥२॥

एक साहेबी अर्स की, और कोई काहूं नाहें ।
आराम देने उमत को, देखाया ख्वाब के माहें ॥३॥

ख्वाब देखाई साहेबी, और अर्स की हैयात[2] ।
ए दोऊ तफावत देख के, अंग में सुख न समात ॥४॥

अब कहूं अर्स अजीम की, और बन का विस्तार ।
नहीं इंतहाए[3] जिमी जंगल का, ना पसु पंखी सुमार ॥५॥

इन रेत रंचक की रोसनी, आकास न मावे नूर ।
तो रोसनी सब बन की, क्यों कर कहूं जहूर ॥६॥

तेज ऐसो इन डार को, और पात को प्रकास ।
सो रोसनी ऐसी देखत, मावत नहीं आकास ॥७॥

१. नुकसान । २. अखंड । ३. अंत ।

ए जुबां ना केहे सकत है, एक पात की रोसन ।
तो इन डार की क्यों कहूं, जो प्रफुलित[1] सब बन ।।८।।

डार पात सब नूर में, फल फूल बेलों जोत ।
केहे केहे मुख कहा कहे, सब आकास में उद्दोत ।।९।।

बन गिरदवाए अर्स के, और एही गिरदवाए ताल ।
एही गिरदवाए जोए के, जुबां कहा कहे खूबी जमाल[2] ॥१०॥

कह्या ऐसा ही बन नूर का, रेत ऐसे ही रोसन ।
तो नूर मोहोल की क्यों कहूँ, जाको नामै नूर वतन ॥११॥

तो अर्स मोहोल की रोसनी, और अर्स मोहोल हौज जोए जे ।
नूर मोहोल ना केहे सकों, तो क्या कहे जुबां नूर ए ॥१२॥

सिरदार सब बन में, पसु पंखी जात जेती ।
खूबी बल हिकमत की, जुबां क्या कहेगी केती ॥१३॥

जिमी अर्स की देखियो, हिसाब न काहूं सुमार ।
देख देख के देखिए, अनेक अलेखे अपार ॥१४॥

तिन सब जिमी में बस्ती, कहूं पाइए नहीं वीरान ।
पातसाही पसुअन की, और जानवरों की जान ॥१५॥

ए जो जिमी अर्स हक की, सो वीरान[3] क्यों कर होए ।
अबादान[4] हमेसगी, आराम बिना नहीं कोए ॥१६॥

अखंड आराम सब में, चल विचल इत नाहें ।
सब सुख हैं अर्स में, रहें याद हक के माहें ॥१७॥

अरस-परस हैं हक सों, आसिक हक के जोर ।
आवें दीदार को दरिया लेहेर ज्यों, कई पदमों लाख करोर ॥१८॥

कई लेहेरें आवत हैं, जो नाहीं जिमी को पार ।
पीछे आवें दरिया पसुअन के, तिन दरियाव नहीं सुमार ॥१९॥

१. खिला हुआ । २. खूबसूरती, सौंदर्य । ३. उजाड़ । ४. बसा हुआ ।

दौड़ इनों के मन की, क्यों कर कहूं छंछेक[1] ।
पोहोंचें सब कदमों तले, जित खावंद सबों का एक ॥२०॥

जो ठौर चित्त में चितवें, हम जाए पोहोंचें इत ।
खिन एक बेर न होवहीं, जानों आगे खड़े हैं तित ॥२१॥

एक हक अर्स के नजीक हैं, कोई दूर दूर से दूर ।
आवत सब दीदार को, जानो आगे खड़े हजूर ॥२२॥

हिकमत बल इनों के, क्यों कर कहे जुबान ।
दीदार पावें अर्स हक का, सो देखो दिल आन ॥२३॥

क्यों न होए बल इनको, जाको अमृत हक सींचत ।
ए पाले-पोसे खावंद के, अर्स तले आवत ॥२४॥

विचार किए पाइयत हैं, इनों बल हिकमत ।
ए किया निमूना पावने, इन कादर की कुदरत ॥२५॥

हकें देखाई इन वास्ते, अपनी जो कुदरत ।
अर्स बड़ाई पाइए, ए देखें तफावत ॥२६॥

करत सबे साहेबियां, जिमी जुगत भरपूर ।
दोऊ बखत आवत हैं, देखन हक का नूर ॥२७॥

पातसाही पसु पंखियन की, करत बिना हिसाब ।
अखंड अलेखे अति बड़े, पिएं नूर हैयाती आब ॥२८॥

हिसाब नहीं पसुअन को, हिसाब नहीं पंखियन ।
नाहीं हिसाब बन जिमी को, जो बीच कायम वतन ॥२९॥

बसत सबे अर्स तले, कई पदमों लाख करोर ।
करत पूरी पातसाहियां, पसु पंखी दोऊ जोर ॥३०॥

जो कोई दूर बसत हैं, सो जानों आगे हजूर ।
बोहोत बल हिकमत, सब अंगों निज नूर ॥३१॥

१. स्फुर्ति ।

जित मन में चितवें, तित पोहोंचें तिन बखत ।
ऐसा बल रखें हक का, कायम जिमी में बसत ॥३२॥

पसु पंखी इन बन में, जो जिमी बन सोभित ।
और सोभा पर नकस की, क्यों कर करूं सिफत ॥३३॥

पसु सुन्दर अति सोहनें, मीठी बान बोलत ।
इनों सिफत जुबां क्यों कहे, जो खावंद को रिझावत ॥३४॥

कई भांतें कई खेलौने, कई खेल खुसाली करत ।
कई विधों निरत नाच के, मासूक को हँसावत ॥३५॥

अनेक बानी मुख बोलहीं, अनेक अलापें गाए ।
ऐसे बचन कई बोलहीं, किसी आवे न औरों जुबाएं ॥३६॥

छोटे बड़े पसु पंखी, सब रिझावें साहेब ।
लड़ें खेलें बोलें बानी, विद्या कई विध साधें सब ॥३७॥

कई जुदी जुदी विद्या जानवर, कई चढ़ें ऊंचे कूदें फांदें[1] ।
टेढ़े आड़े सीधे उलटे, कई विध गत[2] साधें ॥३८॥

कई विध करें लड़ाइयां, कई विध नाचें मोर ।
कई विध हँसावें धनी को, खेल करें अति जोर ॥३९॥

निरमल नेत्र अति सुन्दर, परों पर चित्रामन ।
मीठी बानी खूबी खेल की, कहां लो कहूं रोसन ॥४०॥

और गत पसुअन की, खेल बोल इनों और ।
क्यों कहूं सिफत इनों की, जो बसत सबे इन ठौर ॥४१॥

कई लड़ के देखावहीं, कई उड़ देखावें कूद ।
क्यों कहूं सिफत कायम की, इन जुबां जो नाबूद[3] ॥४२॥

कई देत गुलाटियां, कई अनेक करें फैल हाल ।
सौ सौ गत देखावहीं, ज्यों हक हादी रूहें होत खुसाल ॥४३॥

१. उलंघ जाना । २. चाल । ३. ना चीज (नाशवंत) ।

कई हंस गरूड़ केसरी, कई बाघ चीते घोड़े ।
ए ऐसे कहे जानवर, उड़ आकास में दौड़ें ॥४४॥

हाथी इत कई रंग के, अस्वारी के सिरदार ।
कबूं कबूं राजस्यामाजी रूहें, बड़े बन करत विहार ॥४५॥

कबूं कबूं राज रूहन सों, मनवेगी सुखपाल ।
बड़े बन मोहोलन में, करत खेल खुसाल ॥४६॥

इत और बिरिख कई बड़े, निपट बड़े हैं बन ।
बन पर बन अति विस्तरे, कहां लग करूं रोसन ॥४७॥

एक पेड़ लम्बी डारियां, तिन डारों पर पेड़ अपार ।
पेड़ डारों कई भोम रची, जुबां कहा कहे ए विस्तार ॥४८॥

इन भोम भोम कई मंदिर, पेड़ डारी कई दिवाल ।
छाया बनी पात फूल की, कई बन मंदिर इन हाल ॥४९॥

विस्तार बड़ा एक पेड़ पर, कहां लग कहूं जुबान ।
देखो विध एक बिरिख की, ए मंदिर न होए बयान ॥५०॥

एक बिरिख को बरनन, ऐसे कई बिरिख तिन बन माहें ।
तिन पर विस्तार अति बड़ो, सेहेर बसत जानों ताहें ॥५१॥

एक पेड़ दरखत का, कई दरखत तिन पर ।
तिन पर कई मंदिर रचे, कई रेहेत अंदर जानवर ॥५२॥

किनके पेड़ जिमी पर, कई पेड़ पेड़ ऊपर ।
यों पेड़ पर पेड़ आसमान लों, कई सोभा देत सुन्दर ॥५३॥

इन बिध बन विस्तार है, उपरा ऊपर अतंत ।
सोभा अमान[1] पसु पंखी, इन मंदिरों में बसत ॥५४॥

बोहोत दूर लों ए बन, आगूं आगूं बड़े देखाए ।
चढ़ते चढ़ते चढ़ते, लग्या आसमानों जाए ॥५५॥

१. अनगिनत (असंख्य), अद्वितीय (बेमिसाल) ।

एक पंखी जिमी पर, एक बसत इन मोहोलन ।
एक बसत बल परन के, आकास में आसन ॥५६॥

ए बड़े खेल की खुसाली, बड़े बन कबूं करत ।
अस्वारी पसु पंखियन पर, कई कूदत उड़ावत ॥५७॥

हाथी ऊंचे पहाड़ से, मुख सुन्दर दंत सुढाल[1] ।
मन वेगी कबूं न काहिली[2], तेज तीखी चलें चाल ॥५८॥

बाघ गूंजें अति बली, कूवत[3] ले कूदत ।
देखे आवत दूर से, जानों आसमान से उतरत ॥५९॥

चीते अतंत सुन्दर, ऐसे ही बलवान ।
कमी काहू में नहीं, सोभित जोड़ समान ॥६०॥

जरे जानवर के वाओ सों, ब्रह्मांड उड़ावे कोट ।
तो अर्स जिमी के फील की, कहूं सो किन पर चोट ॥६१॥

ब्रह्मांड बड़ा इन दुनी में, कोई नाहीं दूसरा ठौर ।
तो अर्स बाघ के बल को, कहूं न निमूना और ॥६२॥

बोहोत बातें हैं इनकी, सो केती कहूं जुबान ।
ए नेक इसारत करत हों, है बेसुमार बयान ॥६३॥

अलेखे बल अकल, अलेखे हिकमत ।
अलेखे पेहेचान है, इस्क अलेखे इत ॥६४॥

ख्वाब बल पसुअन का, देखलाया तुम को ।
कैसा बल अर्स पसुअन का, विचार देखो दिल मों ॥६५॥

झूठ देखे सांच पाइए, इस्क बल हिकमत ।
ए तीनों तौल देखो दोऊ ठौर के, अंदर अपने चित्त ॥६६॥

ए झूठा अंग झूठी जिमी में, झूठी इन अकल ।
पूछ देखो याही झूठ को, कोई अर्स की है मिसल ॥६७॥

१. सुडोल । २. सुस्ती । ३. शक्ति ।

अर्स मिसाल कोई है नहीं, तौल देखो तुम इत ।
ए झूठा पसु बल देख के, तौलो जिमी बल सत ॥६८॥

सांच झूठ पटंतरो, कबहूं नाहीं कित ।
तो धनिएँ देखाई कुदरत, लेने अर्स लज्जत ॥६९॥

विचार किए इत पाइए, अर्स बुजरकी इत ।
धनी बुजरकी पाइए, और बुजरकी उमत ॥७०॥

महामत कहे ए मोमिनों, एही उमत पेहेचान ।
बिध बिध बान जो बेधहीं, हक बका अर्स बान ॥७१॥

॥प्रकरण॥२७॥चौपाई॥१२९२॥

पसु पंखियों का इस्क सनेह

खावंद इनों में खेलहीं, धंन धंन इनों के भाग ।
अर्स के जानवरों को, कायम है सोहाग ॥१॥

सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल ।
रात दिन जिकर हक की, करें मीठे मुख बोल ॥२॥

जस नया जुबां जुदी जुदी, रात दिन रटन ।
याही अंग इस्क में, छोड़त[1] नाहीं खिन ॥३॥

खावंद के दीदार को, पसु और जानवर ।
आवत हैं गुन गावते, अपने समें पर ॥४॥

किस्सा इनों के इस्क का, किन मुख कह्यो न जाए ।
दीदार न होवे बखत पर, तो जानों अरवा देवें उड़ाए ॥५॥

अरवा इनों की ना छूटे, पर ऊपर होए बेहोस ।
अंग अरवा क्यों छूटहीं, अन्दर धनी को जोस ॥६॥

एक रोम न गिरे इनों का, हक नजर सींचेल ।
आठों पोहोर अंग में, करत धनी सो केलि ॥७॥

१. छोड़ना ।

धनी इनों के कारने, सरूप धरें कई करोर ।
लें दिल चाह्या दरसन, ऐसे आसिक हक के जोर ।।८।।

सो मैं कह्यो न जावहीं, जो इस्क इनों के अंग ।
रोम रोम इनों के कायम, क्यों कहूं इस्क तरंग ।।९।।

एक इस्क धनी बिना, और कछू जानत नाहें ।
खेलें बोलें गाएं लरे, सो सब इस्क माहें ॥१०॥

क्यों कहूं पसु पंखियन की, इनके इस्क को बल ।
एक जरे को न पोहोंचहीं, इन अंग की अकल ॥११॥

मैं देख्या अर्स के लोकों को, कोई अंग न बिना इस्क ।
क्यों न होए गंज इस्क के, जित जरा नाहीं सक ॥१२॥

कह्यो क्यों ए न जावहीं, इन अंगों के इस्क ।
कई कोट जुबां ले कहूं, तो कह्यो न जाए रंचक ॥१३॥

जेता बल जिन अंग में, तेता इस्क हक का जान ।
सक जरा ना मिले, पिउ सों पूरी पेहेचान ॥१४॥

पिउ की पेहेचान बिना, कछुए न जाने कोए ।
जरा सक तो उपजे, जो कोई दूसरा होए ॥१५॥

इस्क पूरा इनों अंगों, और पेहेचान पूरन ।
सब वजूदों एही रोसनी, कछू जानें ना हक बिन ॥१६॥

कछू कह्यो तो जावहीं, जो कछू जरा कहावे कित ।
ब्रह्मांड तो खेल कबूतर, एक जरा न पाइए इत ॥१७॥

ताथें अंबार[१] इस्क के, इन जिमी सब जान ।
हक का कायम वतन, सब अंग इस्क पेहेचान ॥१८॥

एक जरा जो इन जिमी का, सो सब इस्क की सूरत ।
आसमान जिमी जड़ चेतन, पेहेचान इस्क दोऊ इत ॥१९॥

१. भंडार ।

पार नहीं जिमीन को, और पार नहीं आसमान ।
पार नहीं जड़ चेतन, पार ना इस्क रेहेमान ॥२०॥

छोटा बड़ा अर्स का, सो सब हैं चेतन ।
पेहेचान इस्क अंग में, इन विध बका वतन ॥२१॥

जल में जीव बसत हैं, सो सुन्दर सोभा अमान[1] ।
फौज बांध आगूं धनी, खेल करें कई तान ॥२२॥

मच्छ कच्छ मुरग मेंडक, कई रंग करें अपार ।
जुदी जुदी बानी बोलत, स्वर राखत एक समार ॥२३॥

कई रंगों गुन गावते, सब स्वर बांधे रसाल ।
जस धनी को गावहीं, जिकर करें माहें हाल ॥२४॥

जीव छोटे बड़े कई जल के, अपने अपने ख्याल ।
खेलें बोलें दौड़ें कूदें, खावंद को करें खुसाल ॥२५॥

अनेक जानवर जल के, सो केते लेऊं नाम ।
जल किनारे रटत हैं, पिउ जस आठों जाम ॥२६॥

ए देखो नेक नीके कर, इनमें जरा सक नाहें ।
क्यों न होए इस्क के अंबार, तुम विचार देखो दिल माहें ॥२७॥

जो जरा इन जिमी का, तिन सब में इस्क ।
ए चेतन इन भांत के, कछू जानें न बिना हक ॥२८॥

पसु पंखी बन जिमिएं, तले ऊपर हैं जित ।
क्या जाने मूढ़ मुसाफ की, रमूजें[2] इसारत ॥२९॥

देखो अंबार[3] इस्क के, या जड़ या चेतन ।
जो कछू नजरों श्रवनों, सो इस्कै को वतन ॥३०॥

दरखत करत हैं सिजदा, छोटा बड़ा घास पात ।
पहाड़ जिमी जल सिजदे, इस्क न इनों समात ॥३१॥

१. बेमिसाल । २. रहस्य । ३. भंडार ।

यों अर्स सारा इस्क में, एक जरा न जुदा होए ।
खावंद सबों पिलावहीं, क्यों कहिए इस्क बिना कोए ॥३२॥

आसिक सबे इस्क में, या चांद या सूर ।
या तारा या आकास, सब इस्कै का जहूर ॥३३॥

जो सरूप इन जिमी के, सो सब रूह जिनस ।
मन अस्वारी सबन को, आए पिएं प्रेम रस ॥३४॥

सो भी रूह मन अर्स के, ए तूं नीके जान ।
बल देख झूठे मन को, अर्स मन बल पेहेचान ॥३५॥

ए झूठ हक को न पोहोंचहीं, तो क्यों देऊं निमूना ए ।
कछुक तो कह्या चाहिए, गिरो समझावने के ॥३६॥

चारों तरफों अर्स जिमिएं, जो कोई हैं सूरत ।
बखत पर दीदार को, मन वेगी पोहोंचत ॥३७॥

कोई दूर बसत हैं, सो दूर दूर से दूर ।
सो भी जान कदमों तले, इन मन बल ऐसा जहूर ॥३८॥

इन जिमी की क्यों कहूं, जिनको नाहीं पार ।
उत पार जो बसत हैं, इन मन बल को नहीं सुमार ॥३९॥

जो कोई जहां बसत हैं, सो तहां से आवत ।
समें-सिर दीदार को, कोई नाहीं चूकत ॥४०॥

ज्यों मन एक निमख में, पोहोंचत पार के पार ।
तो क्यों न पोहोंचे बका जिमी को, जिन मन बल नहीं सुमार ॥४१॥

दसों दिस बसत हैं, सब में खावंद बल ।
रोम रोम अंग इस्क के, इन हक इस्कै के सींचल ॥४२॥

कोई न निमूना पाइए, या इस्क या बल ।
एह खिलौने तिनके, जो खावंद अर्स असल ॥४३॥

एक जरा कह्या जुबां माफक, इत अलेखे विवेक ।
रूहें अर्स का बल अर्स के, जो हक जात हैं एक ॥४४॥

ख्वाब बैठ इन अर्स में, हकें देखाया तुमको ।
महामत कहे ए मोमिनों, पेहेचान लीजो दिलमों ॥४५॥

॥प्रकरण॥२८॥चौपाई॥१३३७॥

पसु पंखियों की अस्वारी

अस्वारी पसु पंखियन पर, धनी करत हैं जब ।
जो जहां बसत हैं, सो आए मिलत हैं सब ॥१॥

अस्वारी को रूहन को, जिन पर हुआ दिल ।
तिन आगूं ही जानिया, सो आए खड़े सब मिल ॥२॥

केसरी बाघ चीते हाथी, और जातें कई अनेक ।
कह्या जीन बने अंग उत्तम, सो कहां लों कहूं विवेक ॥३॥

कई बिध अस्वारी होत है, बुजरक जो जानवर ।
जीन जुगत क्यों केहे सकों, जो असल बने इन पर ॥४॥

घोड़े पर[1] राखत हैं, आकास में उड़त ।
कमी करें ना कूदते, सुख अस्वारी के अतंत ॥५॥

कई बिध खेल रूहन के, मन वेगी जानवर ।
तिन पर अस्वारी करके, चढ़त आसमान पर ॥६॥

सोभा लेत बन में रूहें, अस्वार होत मिल कर ।
पसु पंखी दौड़ें मन ज्यों, जित जिमी बन बिगर ॥७॥

जब अस्वारी साहेब करें, होवें बड़ी रूह रूहें अस्वार ।
पसु पंखी सबे मिले, हर जातें फौंजें न पार ॥८॥

कई जातें पसुअन में, हर जातें गिनती अपार ।
यों जातें जानवरों में, हर जातें नहीं सुमार ॥९॥

१. पंख ।

पसु पंखी जो बन में, सब आवें करने दीदार ।
राज स्यामाजी रूहें, जब कबूं होवें अस्वार ॥१०॥

हर फौजों बाजे बजें, हर फौजों निसान ।
भांत भांत रंग राखत हैं, आप अपनी पेहेचान ॥११॥

एह जुबां केती कहूं, अलेखे विस्तार ।
एक जात की फौज ना गिन सकों, तिन हर फौजों कई सिरदार ॥१२॥

कई फौजें तिन सिरदार की, हर फौजों कई जमातदार ।
गिनती तिन जमात की, होवे नहीं सुमार ॥१३॥

यों जुदी जुदी जातें चलते, दाएं बाएं मिसल ।
इंतमाम[१] सबों में अति बड़ा, या आगूं या पीछल ॥१४॥

आगे पीछे फौज के, चोपदार बड़े बांदर ।
दाएं बाएं मिसल[२] अपनी, फौज रखें बराबर ॥१५॥

कई फौजें पसुअन की, और कई फौजें जानवर ।
सुआ मैना नकीब[३] तिनमें, फौज रखें मिसल पर ॥१६॥

कई जातें देखे जवेर, अर्स के भूखन ।
जंग करें जानवरों, जो परों पर चित्रामन ॥१७॥

पर जो पसुअन के, सो अतंत सोभा लेत ।
कहा करें ए भूखन, पसु ऐसी सोभा देत ॥१८॥

इनो रोम की जो रोसनी, सो उठत माहें आसमान ।
जंग करें जवेरों सों, कोई सके न काहू भान ॥१९॥

एक रोम जोत आसमान में, रही रोसनी भराए ।
तो जो एते पसु पंखी, सो जोत क्यों कही जाए ॥२०॥

ए दिल जाने रूहसों, मुख जुबां पोहोंचे नाहें ।
ए मोमिन होए सो विचारसी, अपने हिरदे माहें ॥२१॥

१. इंतजाम । २. जमात । ३. धनी का यश गान करने वाला ।

सो भूखन जो अर्स के, सब पेहेरे मन चाहे ।
सिनगार किया सब लसकरें, ए देखो मन ल्याए ॥२२॥

एक जरे जिमी की रोसनी, सो ढांपे कई कोट सूर ।
तो जिमी पहाड़ मोहोलन को, सब कैसा होसी नूर ॥२३॥

बन जंगल या जिमी, एक दूजे से प्रकास ।
विचार देखो ए मोमिनों, नूर कैसा भया आकास ॥२४॥

ए नूर जिमी बन लसकर, कहा कहूं रूहों रोसन ।
और तखत जो हक का, तुम विचार देखो मोमिन ॥२५॥

अब नूर बिलंद जो हक का, ले उठ्या सबका नूर ।
बन जिमी आकास सब, ए देखो एक जहूर ॥२६॥

आगूं केसरी कोतल[१], अति खूबी ले खेलत ।
बाघ चीते[२] घोड़े हाथी, नट ज्यों नाचत ॥२७॥

अव्वल हार केसरिन की, दूजी हार बाघन ।
हार तीसरी सियाहगोस की, चौथी हार चीतन ॥२८॥

दीप सुअर रोझ रीछड़े, बैल साम्हर मृग मेढ़े ।
हरन अरन[३] बकर[४] कूकर, फील[५] गिमल[६] घोड़े गैंड़े ॥२९॥

केसरी कूवत ज्यादा कही, निपट अति बलवान ।
ए ख्वाब देखाया तिन वास्ते, करने अर्स पेहेचान ॥३०॥

केसरी कूवत कूदते, गरजत बिना हिसाब ।
बिन मन आवे आसमान में, ऐसी उठक सिताब ॥३१॥

ए गिनती बेसुमार है, और बोलत मिलकर जब ।
गरजत अर्स अंबर जिमी, बल देत देखाई तब ॥३२॥

सब्द केसरी जब काढ़हीं, अंबर जिमी रहे गाज ।
पड़घा उठे पृथ्वी पर्वतों, उठे उनथें अधिक आवाज ॥३३॥

१. सजा हुआ । २. तेंदुआ । ३. जंगली भैंसा । ४. गाय । ५. हाथी । ६. एक प्रकार का घोड़ा ।

क्यों कहूं बल बाघन को, ए जो ख्वाब में ऐसे जोर ।
देह छोटी बड़ी कूवत, देत फीलों मद तोर ॥३४॥

बोलत बाघ विस्तार के, सब मिल एकै सोर ।
गरजे सेती जानिए, इनों अंगों का जोर ॥३५॥

छंछेक[1] देखे छैल चीते, जुगत जलदी जोर ।
काहिली ना अंग कबहूं, होत नहीं मन मोर[2] ॥३६॥

अस्व आगूं अति बड़े, अस्वारी के सिरदार ।
सिर ऊंचे गरदन थांभत, थंभक थंभक थेई कार ॥३७॥

जब बोलत बदन विकास के, होत सबे हेहंकार[3] ।
दसों दिसा सब गरजत, पड़त सबे पुकार ॥३८॥

सब्द फील जब उठहीं, गरजत गंज गंभीर ।
जिमी पहाड़ सब गाजत, और सैन्या सोहे सूर धीर ॥३९॥

यों कई जातें पसुअन की, कई खूबी बल कहूं केता ।
अपार बल खूबी अर्स की, नाहीं जुबां माफक है एता ॥४०॥

कई जातें हैं जानवर, चलते आगूं उड़त ।
कई लेवें गुलाटियां, अनेक खेल खेलत ॥४१॥

छोटे छोटा या बड़े बड़ा, खेल देखावें सब ।
सब सुख तबहीं पावहीं, धनी को रिझावें जब ॥४२॥

कई मुख बानी उचरें, तान मान गुन गान ।
आठों जाम करत हैं, सुन्दर ध्यान बयान ॥४३॥

नैन नीके चोंच सोभित, मीठी जुबां मुख बान ।
खुसबोए गूंजें कई भमरे, कई तिमर अलापें तान ॥४४॥

आसमान छाया पंखियों, सब खूबी देखावत ।
आप अपनी साधना, सब खेल की साधत ॥४५॥

१. चंचलता । २. मलीन । ३. ज्यादा भयानक ।

बिना हिसाबें बाजंत्र, पड़े एक ताली घोर ।
जिमी अंबर सब गाजत, ए जुगत सोभा जोर ॥४६॥

बाजे सब बजावहीं, बंदे बांदर बलवंत ।
ओतो आपे बाजहीं पर, ए सेवा न छोड़त ॥४७॥

बाजे आपे चलहीं, पर पसु सेवा को उठाए ।
इन बखत खूबी कहा कहूं, ए केहे न सके जुबांए ॥४८॥

आगूं पीछूं सैन्या चले, खूबी देत बराबर ।
जो दाएं बाएं मिसलें, कोई छोड़े ना क्यों ए कर ॥४९॥

अस्वारी सबे सोभावत, मिसल आपनी जान ।
हर जातें फौज अपनी बांधके, चले सब समान ॥५०॥

ऐसे बड़े हाथी अर्स के, और बड़े कई पसुअन ।
जेता पसु पंखी अर्स का, तिन सबों अस्वारी मन ॥५१॥

देखो दिल विचार के, ए पसुओं का चलन ।
उड़त हैं आसमान में, ए चारों तरफों सब धरन ॥५२॥

ऐसे सबे लसकर, सुमार नाहीं बल ।
चिन्हार इस्क सबों को, बंदे कायम कदम तल ॥५३॥

एक देखी जात फीलन की, तिन फीलों जात अनेक ।
कई रंगो कई रूप हैं, सो कहां लों कहूं विवेक ॥५४॥

कई फौजें कई जिनस रंग, हर फौजें कई सिरदार ।
तिन सिरदार तले कई फौजें, तिन एक फौज को नाहीं सुमार ॥५५॥

अब फौज गिनों दिल अपने, पीछे गिनो सिरदार ।
सो सिरदार कई एक फौज में, तिन फौज करो निरवार ॥५६॥

यों गिनती न होए एक जात की, जो कहे फील रंग अपार ।
रंग रंग जातें कई कहीं, सो क्योंए न होए सुमार ॥५७॥

गिनती न होए एक जात की, तो क्यों कहूं इनों को बल ।
एक चिड़िया उड़ावे कोट ब्रह्मांड, तो कौन बल फीलों मिसल ॥५८॥

इन सब फीलों को पाखरे[१], और सिरिए[२] जड़ाव रतन ।
सो जवेर हैं अर्सके, और अर्सै का कुंदन[३] ॥५९॥

और सबन की क्यों कहूं, ए एक कही मैं जात ।
ए कैसी सोभा लेत हैं, दे दिल देखो साख्यात ॥६०॥

अब और जातकी क्यों कहूं, जो है फीलों से बुजरक ।
ए बुजरक साहेबी देखाई रूहों, पावने पटंतर[४] हक ॥६१॥

लेत सोभा अर्स जिमिएँ, जब साहेब होत अस्वार ।
ए जिन देख्या सो जानहीं, औरों पोहोंचे नहीं विचार ॥६२॥

कहा कहूं जात लसकर, एक जात को नाहीं पार ।
तिन जात में अनेक फौजें, एक फौज को नाहीं सुमार ॥६३॥

तिन हर फौजों कई साहेबियां, करें पातसाहियां अनेक ।
तिन पातसाहियों की क्यों कहूं, लवाजमें विवेक ॥६४॥

जब चले सैर जिमीय की, जो बन बिगर थोड़ी रेत ।
साफ जिमी अति दूर लों, तरफ पछिम की सुपेत ॥६५॥

इत दूर लों बन है नहीं, बोहोत बड़ो मैदान ।
अस्वारी होए इसही तरफ, जब कबूं करें सुभान ॥६६॥

मैदान अति दूर लो, दूर दूर अति दूर ।
सूर आकास रोसनी, और उज्जल जिमी सब नूर ॥६७॥

आगे सैर विध विध की, जब करें ऊपर सागर ।
कई विध के रस पूरन, सब पैरत[५] हैं जानवर ॥६८॥

जल किनारे बन हैं, कई विध की बैठक ।
कई जल टापू पहाड़ में, कई मोहोलों माहें छूटक ॥६९॥

१. झालरें । २. सिर पर । ३. शुद्ध स्वर्ण । ४. फर्क । ५. तैरते हैं ।

चलत पैरत कूदत, उड़ना याको काम ।
मन की अस्वारी सबको, मन चाह्या करें विश्राम ॥७०॥

जो दिल चाहे तखतरवा[1], हजार बारे ले बैठत ।
राज स्यामाजी बीच में, आकास में उड़त ॥७१॥

कबूं सैर इन खेल को, ऊपर चढ़े आसमान ।
दिल चाहे सुख सबन को, देत रूहें प्यारी जान ॥७२॥

मन ऊपर चलत हैं, या जिमी जल बन ।
या चढ़े आसमान में, ठौर फिरवले सबन ॥७३॥

पार नहीं आसमान को, जहांलो जानें तहांलो जाएं ।
खेल कर पीछे फिरें, देखें पर्वत आए ॥७४॥

दिल चाह्या रूहन को, हक दें हमेसा सुख ।
पहाड़ बन मोहोल आकास जिमी, जित रूहों का होवे रूख ॥७५॥

जो रूख होवे जल पर, या जोए या ताल ।
या सुख मोहोलन में, देवें दायम नूरजमाल ॥७६॥

ए खूबी इन बखत की, हकें दई देखाए ।
ए ख्वाब में प्यारी लगी, अर्स की ठकुराए ॥७७॥

मैं तुमें कहूं मोमिनों, देखो दिल लगाए ।
ऐसी साहेबी खसम की, जो रूह देख सुख पाए ॥७८॥

इस वास्ते निमूना, ए जो करी कुदरत ।
साहेबी अपनी जान के, करी बकसीस ऊपर उमत ॥७९॥

तो क्या निमूना झूठ का, पर लेसी रूहों लज्जत ।
ख्वाब बड़ाई देख के, विचारसी निसबत ॥८०॥

ए साहेबियां देखाइयां, ख्वाब में उमत ।
और देखाई साहेबी अपनी, सुख देने को इत ॥८१॥

१. बड़ा भारी सुखपाल ।

तफावत ए झूठ की, क्यों आवे बराबर सांच के, ।
पर रूहें सुख पावत हैं, देख अपनी साहेबी ए ॥८२॥

कहा कहूं ठकुराई की, और क्यों कहूं बुध बल ।
क्यों कहूं इस्क पेहेचान की, और क्यों कहूं सुख नेहेचल ॥८३॥

क्यों कहूं मोहोल अर्स के, क्यों कहूं जिमी बन ।
क्यों कहूं इन लसकर की, मिने पातसाहियां पूरन ॥८४॥

ए बात हैं विचार की, कई जातें जानवर ।
कई जातें पसुअन की, याको बल कहूं क्यों कर ॥८५॥

एक जात बाघन की, कहूं केते रंग तिन माहें ।
इन रंग सुमार ना आवहीं, क्यों होवे हिसाब जुबांए ॥८६॥

अब कैसा बल समूह का, पसु और जानवर ।
देखो साहेबी अर्स की, ले ब्रह्मांड बल नजर ॥८७॥

ए निमूना इन वास्ते, देखलाया रूहन ।
झूठ कौन आगूं सांच के, पर बल न पाइए या बिन ॥८८॥

इन सुपन जिमी में बैठ के, क्यों कहूं ठकुराई अर्स ।
ए गिरो विचारें सुख पावसी, जो होसी अरस-परस ॥८९॥

ए विचार विचार विचारिए, तो पाइए लसकर बल ।
सुमार तो भी न पाइए, जिमी अपार नेहेचल ॥९०॥

क्यों कहूं जिमी अपार की, क्यों कर कहूं मोहोलात ।
क्यों कहूं जोए हौज की, क्यों कहूं नूर जात ॥९१॥

क्यों कहूं अर्स जिमी की, क्यों कहूं हक सूरत ।
क्यों कहूं खासी रूह की, क्यों कहूं रूहें उमत ॥९१॥

क्यों कहूं इन सुख की, क्यों कहूं इन विलास ।
क्यों कहूं इस्क आराम की, क्यों कहूं रमूजें हाँस ॥९३॥

इन अर्स का खावंद, सो धनी अपना हक ।
ए देखो साहेबी अर्स की, ए मोमिनों बुजरक ॥९४॥

देखो साहेबी अपनी, मेरा खसम नूरजमाल ।
जब देखत हों दिल ल्याए के, मेरी रूह होत खुसाल ॥९५॥

क्यों न होए खुसालियां, देख अपनी ठकुराए ।
और नाहीं कोई कहूं, ए मैं देख्या चित्त ल्याए ॥९६॥

मेरे खसम का नूर है, नूर अंग नूरजलाल ।
सो आवत दायम दीदार को, मेरा खसम नूरजमाल ॥९७॥

सांची साहेबी खसम की, जो कायम सुख कामिल[१] ।
ऐसा आराम अपने हकसों, इत नाहीं चल विचल ॥९८॥

बड़ी बड़ाई बड़ी साहेबी, बुजरक सदा बेसक ।
और सब याकें खेलौने, सब पर एकै हक ॥९९॥

महामत साहेबी हकक़ी, मैं खसम अंग का नूर ।
अंग रूहें मेरा नूर हैं, सब मिल एक जहूर ॥१००॥

॥प्रकरण॥२९॥चौपाई॥१४३७॥

तीनों सरूपों की पेहेचान बल अर्स की तरफ का

पेहेले किया बरनन अर्स का, रूह अल्ला का केहेल ।
अब चितवन सें केहेत हों, जो देत साहेदी अकल ॥१॥

जब जानों करूं बरनन, तब ऐसा आवत दिल ।
जब रूह साहेदी[२] देत यों, इत ऐसा ही चाहिए मिसल[३] ॥२॥

इन विध हुआ है अव्वल, दई रूह साहेदी तेहेकीक ।
जो कही बानी जोस में, सो साहेब दई तौफीक[४] ॥३॥

हकें दई किताबें मेहेर कर, जो जिस बखत दिल चाहे ।
सोई आयत आवत गई, जो रूह देत गुहाए ॥४॥

१. संपूर्ण, लायक, निपुण । २. साक्षी । ३. बराबर, माफक । ४. सामर्थ ।

सब्द जो सारे इन विध, कही आगे से आखिरत ।
बिना फुरमान देखें कहे, ना हादिएँ कही हकीकत ।।५।।

कहें सब्द रूह साहेदी, पर दिल देत कछू सक ।
मुसाफ देखे भागी सक, सब आयतें इसी माफक ।।६।।

और फुरमान में ऐसा लिख्या, ओ केहेसी मेरे माफक ।
आवसी मेरी उमत में, करने कायम दीन हक ।।७।।

सोई सुध दई फुरमानें[1], सोई ईसे दई खबर ।
मेरे मुख सोई आइया, तीनों एक भए यों कर ।।८।।

रूहअल्ला ने मेहेर कर, दिया खुदाई इलम ।
सब सुध भई अर्स की, रूहें बड़ी रूह खसम ।।९।।

सब काम भए उमत के, देखें हक फुरमान ।
सोई इलम दिया रूहअल्ला, मैं लई नसीहत[2] तीनों पेहेचान ॥१०॥

अब जो केहेती हों अर्स की, सो दिल में यों आवत ।
बिना देखे केहेत हों, जित रूह जो चाहत ॥११॥

अर्स के बरनन की, कही हादियों इसारत ।
सो दोऊ साहेदी लेयके, जाहेर करूं सिफत ॥१२॥

मेरी बानी जुदी तो पड़े, जो वतन दूसरा होए ।
कहे हादी बल माफक, उरे सिफत सब कोए ॥१३॥

बेसुमार बुजरकी[3] अर्स की, नेक कहूं अकल माफक ।
ए रूहें नीके जानत हैं, जो अपार अर्स है हक ॥१४॥

ए सुख न आवे जुबां मिने, तो भी केहेना अर्स बन सुख ।
रूहें बैठत उठत सुख सनेह सो, कई गिरो को देत श्रीमुख ॥१५॥

धनिएँ आगूं अर्स के, कहे तीन चबूतर ।
दाहिनी तरफ तले तीसरा, हरा दरखत तिन पर ॥१६॥

१. कुरान । २. शिक्षा । ३. श्रेष्ठता ।

चौथी तरफ नाहीं कह्या, सो मेरी परीछा लेन ।
जाने मेरे इलम से रूह आपै, केहेसी आप मुख बैन ॥१७॥

ना तो ए लड़का सो भी जानहीं, जो कछू कर देखे सहूर ।
एक तरफ क्यों होवहीं, आगूं अर्स तजल्ला नूर ॥१८॥

खूब देखाई क्यों देवहीं, चबूतरा एक तरफ ।
जाने केहेसी आपे दूसरा, मेरे इलम के सरफ ॥१९॥

तले चौथा चाहिए, आगूं अर्स द्वार ।
दरखत दोऊ चबूतरों, सोभा लेत अपार ॥२०॥

आगूं इन चबूतरों, खेलावत जानवर ।
नए नए रूप रंग ल्यावहीं, अनेक विध हुनर[1] ॥२१॥

आगूं इन दरबार के, दायम विलास है बन ।
कई विध खेल करें जानवर, हक हँसावें रूहन ॥२२॥

इन चौक खुली जो चांदनी, आगूं बड़े दरबार ।
उज्जल रेती झलकत, जोत को नाहीं पार ॥२३॥

जोत लगी जाए आसमान, थंभ बंध्यो चौखून ।
आकास जिमी बीच जोत को, इनको नहीं निमून ॥२४॥

और जोत जो बिरिख की, सो भी बीच आकास और बन ।
पार नहीं इन जोत की, पर एह रंग और रोसन ॥२५॥

जेता कोई रंग बन में, तिन रंग रंग हर हार ।
इन विध आगूं अर्स के, बन पोहोंच्या जोए किनार ॥२६॥

कहूं हारें कहूं चौक गुल[2], कहूं नकस कटाव ।
जाए न कही इन जुबां, ज्यों चंद्रवा जुगत जड़ाव ॥२७॥

ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें ।
अकल में न आवत, तो क्यों आवे बानी माहें ॥२८॥

१. कारीगरी । २. गुलाब का फूल, सुमन ।

चारों तरफों बन में, कई जिनसें कई जुगत ।
नई नई भांत ज्यों चंद्रवा, बन में केती कहूं विगत ॥२९॥

चारों तरफों अर्स के, कई बैठक चौक चबूतर ।
जुदे जुदे कई विध के, ए नेक[1] कहूं दिल धर ॥३०॥

सात घाट आगूं अर्स के, ए है बड़ो विस्तार ।
नेक कहूं हिंडोले चौकियां, फेर कहूं आगूं अर्स द्वार ॥३१॥

बट पीपल चारों चौकियां, ऊपर छातें भी चार ।
अंबराए बिरिख अनेक बन, निहायत[2] रोसन झलकार ॥३२॥

चल्या गया चौथी तरफ लों, अतंत खूबी विस्तार ।
तले चेहेबच्चे नेहेरें चलें, जुबां केहे न सके सुमार ॥३३॥

याही बन के चबूतरे, याही बन की मोहोलात ।
ए खूबी इन बन की, इन जुबां कही न जात ॥३४॥

एक एक चौकी देखिए, रूहें बैठत बारे हजार ।
बीच बीच सिंघासन हक का, ए सोभा अति अपार ॥३५॥

ए बन हांस पचास लो, सेत हरे पीले लाल ।
ए बन खूबी देख के, मेरी रूह होत खुसाल ॥३६॥

जित बन जैसा चाहिए, तहां तैसा ही तिन ठौर ।
नकस बेल फूल बन के, एक जरा न घट बढ़ और ॥३७॥

एह बन देखे पीछे, उपज्यो सुख अनंत ।
ए ठौर रूह से न छूटहीं, जानों कहां देखूं मैं अंत ॥३८॥

तले जिमी अति रोसनी, और रोसन चारों छात ।
चारों चौक देखे आगूं चल के, ए सुख रूहें जाने बात ॥३९॥

तले बन निकुन्ज जो, तिन पर ए मोहोलात ।
मिल गए मोहोल अर्स के, रूहें दौड़त आवत जात ॥४०॥

१. थोड़ा । २. अत्यंत, अधिक ।

ज्यों ऊपर हिंडोले अर्स के, भोम सातमी आठमी जे ।
जब इन बन हिंडोलों बैठिए, देखिए बड़ी खुसाली ए ॥४१॥

जैसे हिंडोले अर्स के, ऐसे ही हिंडोले बन ।
रूहें बारे हजार बैठत, ए समया अति रोसन ॥४२॥

इन बन में जो हिंडोले, छप्पर-खटों की जिनस ।
सांकरें जंजीरां झनझनें, जानों सबथें एह सरस ॥४३॥

इत घाट नारंगी पोहोंचिया, दोऊ तरफों इत ।
बट घाट निकुन्ज ले, इन हद से आगूं चलत ॥४४॥

तरफ बांईं सोभा ताल की, बीच चांदनी चारों घाट ।
जल बन मोहोल पाल की, अति सोभित ए ठाट ॥४५॥

कई मोहोल मानिक बन पहाड़ के, कई नेहेरें मोहोल बन ।
मोहोल पहाड़ कई सागरों, फेर आए दूब बन अंन ॥४६॥

अतंत सोभा इन बन की, ए जो आए मिल्या फूलबाग ।
फूलबाग हिंडोले ए बन, तूं देख खूबी कछू जाग ॥४७॥

चौकी हांस पचास लो, फूलबाग हद जित ।
और पचास हांस फूलबाग, बड़े चेहेबच्चे पोहोंचत ॥४८॥

ए बड़ा चेहेबच्चा बाहेर, एक हांस को लगत ।
बड़ी कारंज पानी पूरन, कई नेहेरें चलत ॥४९॥

ए फूलबाग चौड़ा चबूतरा, निपट बड़ा निहायत ।
फूलबाग बगीचे चेहेबच्चे, विस्तार बड़ो है इत ॥५०॥

मोहोल झरोखे अर्स के, फूलबाग के ऊपर ।
जोत झरोखे अर्स के, ए नूर कहूं क्यों कर ॥५१॥

जहां लग हद फूलबाग की, ए जिमी जोत अपार ।
ए जोत रोसनी जुबां तो कहे, जो आवे माहें सुमार ॥५२॥

इत दिवाल तले दस खिड़कियां, जित रूहें आवें जांए ।
ए खूबी आवे तो नजरों, जो विचार कीजे रूह माहें ॥५३॥

इन आगूं लाल चबूतरा, ले चल्या अर्स दिवाल ।
खूबी देख बन छाया, ए बैठक बड़ी विसाल ॥५४॥

ए जो भोम चबूतरा, बन आगूं बिराजत ।
इत केतेक जिमी में जानवर, रूहें हक हादी खेलावत ॥५५॥

ऊपर लाल चबूतरे, सब दरवाजे मेहेराब ।
एही झरोखे इन भोम के, खूबी आवे न माहें हिसाब ॥५६॥

बड़ी बैठक इन चबूतरे, अति खूबी तिन पर ।
इत खूबी खुसाली होत है, जब खेलें बड़े जानवर ॥५७॥

एही झरोखे एही चबूतरा, दोऊ तरफ चेहेबच्चे दोए ।
एक पीछल जो छोड़िया, आगूं दूजी भोम का सोए ॥५८॥

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन ।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों तिन ॥५९॥

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए ।
इन चेहेबच्चे की सिफत, या मुख कही न जाए ॥६०॥

कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियल ।
और नाम केते लेऊं, बट पीपल सर ऊमर ॥६१॥

इत केतेक बन में हिंडोले, ए जो रूहें लेत इत सुख ।
लिबोई घाट इत आए मिल्या, सो सोभा क्यों कहूं या मुख ॥६२॥

हिंडोले इन बन के, ए बन बड़ा विस्तार ।
इन आगूं घाट केल का, और बड़ा बन तिन पार ॥६३॥

अब जो बन है केल का, सो आगूं पोहोंच्या जाए ।
तिन परे बन पहाड़ का, सब दोरी बंध सोभाए ॥६४॥

बन बड़ा पुखराज का, कई मोहोल बड़े अतंत ।
तिन परे बड़े बन की, जुबां कहा करसी सिफत ॥६५॥

जाए मिल्या बन नूर के, नूर परे कहूं क्यों कर ।
जित ए न्यामत देखिए, सो सब सुमार बिगर ॥६६॥

अब कहूं आगूं अर्स के, और जोए किनार ।
बन मोहोल नूर मकान, सोहे जोए के पार ॥६७॥

दोए पुल जोए ऊपर, ए अति खूबी मोहोलात ।
पांच पांच भोमें मोहोल की, ऊपर छठी चांदनी छात ॥६८॥

ए जोत धरत हैं झरोखे, करें साम सामी जंग ।
जोत कही न जाए एक तिनका, ए तो मोहोल अर्स के नंग ॥६९॥

तले चलता पानी जोए का, दस घड़नाले जल ।
नेहेरें चली जात दोरी बंध, ए जल अति उज्जल ॥७०॥

चार चौकी बन माफक, छात पांचमी ऊपर किनार ।
ए जुगत बनी जोए मोहोल की, सोभित अति अपार ॥७१॥

जोए ऊपर बन झरोखे, सो निपट सोभा है ए ।
फल फूल पात जल ऊपर, ए बने तोरन नंग जे ॥७२॥

साम सामी दोऊ किनारे, तरफ दोऊ बराबर ।
दो बन की दो जवेर की, मोहोल चारों अति सुन्दर ॥७३॥

इन पुल दोऊ के बीच में, बीच बने सातों घाट ।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच बनी चांदनी पाट ॥७४॥

ए तुम सुनियो बेवरा, सात घाटों का इत ।
ए नेक नेक केहेत हों, सोभा अति अर्स सिफत ॥७५॥

बन के मोहोल से चलिया, जानों तले ऊपर एक छात ।
छात दूजी घर पंखियों, बन ऊपर बन मोहोलात ॥७६॥

ए जो पसु पंखी नजीकी, हक हादी खेलौने अतंत ।
बोल खेल सोभा सुंदर, सो इन मोहोलों बसत ॥७७॥

रात दिन गूंजे अर्स में, हक की करें जिकर ।
क्यों कहूं इनों चित्रामन, सोभा अति सुन्दर ॥७८॥

बानी सुनें तें सुख उपजे, और देखें सुख अपार ।
या पसु या जानवर, सोभा न आवे माहें सुमार ॥७९॥

तीन घाट आगूं अर्स के, जांबू अमृत अनार ।
सो अनार पोहोंच्या अर्स को, दो दोऊ भर किनार ॥८०॥

घाट तीन हांस पचास लों, बीच बड़े दरबार ।
दो घाट लगे दोऊ हिंडोलों, दो घाट हिंडोलों पार ॥८१॥

ए जो पाट घाट अमृत का, सो आया आगूं चबूतर ।
चौक चौड़ा हिस्से तीसरे, इत दीदार होत जानवर ॥८२॥

ता बीच चौड़े दो चबूतरे, ऊपर हरा लाल दरखत ।
छाया बराबर चबूतरे, ए निपट सोभा है इत ॥८३॥

लंबा चौड़ा चारों हांसों, बराबर दोरी बंध ।
अनेक रंग बन इतका, सोभित अनेक सनंध ॥८४॥

बन गिरदवाए अर्स के, देख आए आगूं द्वार ।
केहे ना सकों हिस्सा कोटमा, अर्स बन कह्या अपार ॥८५॥

बन में फिर के देखिया, अर्स अजीम के गिरदवाए ।
एकल छाया बन की, तले जिमी जोत कही न जाए ॥८६॥

बन छाया दीवाल लग, झूमत झरोखों पर ।
ठाढ़े होए के देखिए, आवत चांदनी लो नजर ॥८७॥

फिरती गिरदवाए चांदनी, नवों भोम झरोखे ।
गिरदवाए विचारी गिनती, छे हजार हर हार के ॥८८॥

एही आतम को पूछ के, नवों भोम करो विचार ।
ले भोम से लग चांदनी, ए भी हारें छे हजार ॥८९॥

हर हार चढ़ती नव नव, छे हजार फिरती हर हार ।
जमा भए नव भोम के, अर्ध लाख चार हजार ॥९०॥

झरोखे कई विध के, गिनती होए क्यों कर ।
कहूं जुदे जुदे कहूं सामिल, ए लीजो दिल धर ॥९१॥

ए जो एक एक लीजे दिल में, तो हर हांसे तीस तीस ।
कहूं एक झरोखा तीस का, कहूं दस कहूं बीस ॥९२॥

गिरदवाए कठेड़ा चांदनी, क्यों कहूं खूबी जुबांन ।
अर्स एकै जवेर का, एकै बिध रंग रस जान ॥९३॥

कई विध की इत बैठकें, जुदे जुदे कई ठौर ।
चारों तरफों अर्स के, देखी एक पे एक और ॥९४॥

हर खांचों साठ गुमटियां, सोभित फिरती हार ।
ए झरोखे कंगूरे, बैठक बारे हजार ॥९५॥

दो सौ खांचों ऊपर, सोभें नगीने सौ दोए ।
बुजरक बीच गुमटियां, खूबी केहे न सके कोए ॥९६॥

ए जो दो सै एक नगीने, कलस बने इन पर ।
इन विध की ए रोसनी, ए जुबां कहे क्यों कर ॥९७॥

और कलस ऊपर गुमटियों, ए जो कहे कंगूरे बारे हजार ।
ए जोत जुबां ना केहे सके, झलकारों झलकार ॥९८॥

कलसों पर जो बेरखे[1], सो क्यों कहूं रोसन नूर ।
ए जो बनी बराबर गिरदवाए, हुओ बीच आसमान जहूर ॥९९॥

केहे केहे मुख जेता कहे, सो सब हिसाब के माहें ।
और हक हुकम यों केहेत है, ए सिफत पोहोंचत नाहें ॥१००॥

१. ध्वजा, पताका ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए छोड़िए नहीं एक दम ।
अब कहूं अंदर अर्स की, जो दिए निसान खसम ॥१०१॥

॥प्रकरण॥३०॥चौपाई॥१५३८॥

दसों भोम बरनन भोम पेहेली

बड़ा चौक सोभा लेत हैं, बड़े दरवाजे अंदर ।
बड़ी बैठक इत गिरोह की, आगूं रसोई के मन्दिर ॥१॥

दस स्याम सेत के लगते, दस मंदिर सामी हार ।
इन चौक की रोसनी, मावत नहीं झलकार ॥२॥

कई नकस कई कटाव, इन भोम में देखत ।
दिन पंद्रा खेलें बन में, पंद्रा आरोगें इत ॥३॥

इन चौक में साथजी, बोहोत बेर बैठत ।
आवत जात बनथें, बैठत इत अलबत[1] ॥४॥

लाड़बाई के जुत्थ की, इत बोहोत खेल करत ।
बाहेर अंदर चौक में, बन मोहोलों सुख लेवत ॥५॥

बन मोहोल विलास को, सुख गिनती में आवत नाहें ।
ए न कछू जूबां केहे सके, चुभ रहत चित माहें ॥६॥

राज स्यामाजी बैठत, बनथें फिरती बखत ।
इन ठौर आरोग के, चौथी भोम निरत ॥७॥

जैसा चौक तले का, तैसा ही ऊपर ।
आगूं झरोखे दूजी भोम के, इत चौक बीस मंदिर ॥८॥

इसी भांत भोम तीसरी, ऊपर चढ़ती चढ़ती जे ।
खूबी लेत अति अधिक, चौक ऊपर चौक ए ॥९॥

नवों भोम इन विध की, आगूं उपरा ऊपर बड़े द्वार ।
आगे चौक सबन के, सबों फिरते थंभ हार ॥१०॥

१. जरूर, अवश्य।

और विध केती कहूं, भोम भोम ठौर अनेक ।
ए कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक ॥११॥

भोम दूसरी

स्याम सेत के बीच में, सीढ़ियां सुन्दर सोभित ।
बोहोत साथ इत आए के, चढ़ उतर करत ॥१२॥

इतथें चले खेलन को, आगूं मंदिर जहां भुलवन ।
जब जात चेहेबच्चे झीलने, तब खेलें ठौर इन ॥१३॥

खेल करें इत भुलवनी, मंदिर एक सौ दस की हार ।
सो हर तरफों गिनिए, एही गिनती तरफ चार ॥१४॥

ए भुलवनी ऐसी भई, देखी चारों किनार ।
द्वार सबों बराबर, भए मंदिर बारे हजार ॥१५॥

मंदिर जुदे कर गिनिए, हर मंदिर दरवाजे चार ।
यों गिनती बारे हजार की, भए अड़तालीस सहस्त्र द्वार ॥१६॥

सो ए भई इत भुलवनी, भए द्वार चौबीस हजार ।
एक दूजे में गिनात है, खेलें हँसें रूहें अपार ॥१७॥

रूहें द्वार एक दौड़ के, चौथे जाए निकसत ।
प्रतिबिंब उठें कई तरफों, कोई काहूं ना पकरत ॥१८॥

भागत एक मंदिर से, प्रतिबिंब उठें अपार ।
पकड़न कोई न पावहीं, निकस जाएं कई द्वार ॥१९॥

इन ठौर खेल रूह के, बोहोत भई भुलवन ।
होत हाँसी इत खेलते, रंग रस बढ़त रूहन ॥२०॥

इनहूं बीच चबूतरा, हक हादी मध बैठत आए ।
ए सोभा इन बखत की, इन मुख कही न जाए ॥२१॥

दूजी भोम का चेहेबच्चा, धनी बैठत इत अन्हाए ।
सिनगार समें रूहन के, इन जुबां कह्यो न जाए ॥२२॥

इत खेल के आए चेहेबच्चे, अन्हाए के कियो सिनगार ।
पीछे चरनों लागें जुगल के, माहें माए ना मंदिरों झलकार ॥२३॥

ए नेक कही इन ठौर की, इत हिसाब बिना बैठक ।
सुख देत इत कायम, जैसा बुजरक हक ॥२४॥

ए दूजी भोम जो अर्स की, इत बोहोत बड़ो विस्तार ।
ए नेक नेक केहेत हों, जुबां कहा केहे सिफत सुमार ॥२५॥

भोम तीसरी

बैठे हक हादी भोम तीसरी, जित आवत नूरजलाल ।
इत दोए पोहोर की बैठक, और सेज्या सुख हाल ॥२६॥

बीच बन्या दरवाजा दो हांस का, बीच दस झरोखे ।
पांच बने बांईं हांस के, पांच दाहिनी से ॥२७॥

बड़े झरोखे तिन पर, तिन पर बड़े देहेलान ।
इत आए फजर पसु पंखियों, दीदार देत सुभान ॥२८॥

देहेलान दस मंदिर का, झरोखे दस सामिल ।
माहें चौक दस मंदिर का, हुए तीनों मिल कामिल[1] ॥२९॥

तीसरा हिस्सा एक हांस का, ए जो दस झरोखे ।
द्वार थंभ आगूं इन, ना दिवाल बीच इनके ॥३०॥

और सुख इन भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार ।
सो मुख बानी क्यों कहूं, जिनको नहीं सुमार ॥३१॥

मंदिर दस का बेवरा, दस का एकै देहेलान ।
माहें बाहेर बराबर, जानें मोमिन अर्स बयान ॥३२॥

१. संपूर्ण ।

और जो झरोखे गिरदवाए के, तिनही के सरभर ।
एता ऊंचा जिमी से, देखें हुकमें रूहें नजर ॥३३॥

छे मंदिर आगूं सीढ़ियां, दोऊ तरफ चढ़ाए ।
चौक छोटे आगूं देहरी[1], सोभा इन मुख कही न जाए ॥३४॥

और चौक बड़ा जो बीच का, सीढ़ी सनमुख आगूं द्वार ।
सोए बराबर द्वार के, सोभा कहूं जो होए सुमार ॥३५॥

दोऊ तरफों खिड़कियां, तिन आगूं बढ़ती पड़साल ।
ए रूहें नजरों नीके देखहीं, तो तेहेकीक बदलें हाल ॥३६॥

और आरोगें भी इतहीं, इत बैठें नूरजमाल ।
दौड़त रूहें निहायत[2], ए क्यों कहूं खुसाली ख्याल ॥३७॥

बड़ी बैठक पड़साल की, इत मेवा मिठाई आरोगत ।
कर सिनगार चरनों लगें, सबे इत बैठत ॥३८॥

सिनगार करें देहेलान में, आरोगें और मंदिर ।
इतहीं दीदार नूर को, दिन पौढ़े पलंग अंदर ॥३९॥

दो हांस बीच तीसरा हिस्सा, तिनके झरोखे दस ।
एक हांस तिनकी बढ़ी, ए भी सोभा एक रस ॥४०॥

बड़ा दरवाजा इनमें, बीच दोए हांस इन ।
भोम तले लग चांदनी, ए खूबी अति रोसन ॥४१॥

अंदर चौड़ाई चौक की, और भी हैं कई ठौर ।
जुदे जुदे सुख लेत हैं, रंग रस कई और और ॥४२॥

भोम चौथी

निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल ।
चौक मध्य अति सुन्दर, क्यों कहूं मंदिर द्वार ॥४३॥

१. दरवाजे की चौखट । २. बोहोत, अत्यन्त ।

तीनों तरफों मंदिर, आगूं दो दो थंभों की हार ।
बड़ा मोहोल अति सोभित, सुन्दर अति सुखकार ॥४४॥

थंभ द्वार अति सोभित, तरफ तीनों साठ मंदिर ।
बीस बीस हर तरफों, चौक बैठक अति अंदर ॥४५॥

द्वार सोभित कमाड़ियों, साठों करें झलकार ।
और जोत थंभन की, सुख कहूं जो होए सुमार ॥४६॥

पीठ पीछे जो मंदिर, कई रंग सेत दिवाल ।
दाहिनी तरफ लाखी मंदिर, क्यों कहूं नकस मिसाल ॥४७॥

बांईं तरफ दिवाल जो, मंदिर लिबोई रंग ।
बेल नकस कटाव कई, सो केते कहूं तरंग ॥४८॥

हरी दिवाल जो मंदिर, सो सामी है नेक दूर ।
चारों तरफों अर्स जवेर, करें जंग नूर सों नूर ॥४९॥

एह ठौर है निरत की, सो केता कहूं मजकूर ।
चारों तरफों ऊपर तले, कहूं मावत नहीं जहूर ॥५०॥

राज स्यामाजी बीच में, बैठक सिंघासन ।
रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन ॥५१॥

कई विध के बाजे बजें, नवरंग बाई नाचत ।
हाथ पांउ अंग बालत, कही न जाए सिफत ॥५२॥

ले बाजे रूहें खड़ी, मृदंग जंत्र ताल ।
रंग रबाब चंग तंबूरा, बोलत बेन रसाल ॥५३॥

पांउं झांझर घूंघर बोलहीं, कांबी कड़लो[1] बाजत ।
याही तरह अनवट बिछुआ, संग लिए गाजत ॥५४॥

हाथ कंकन नंग नवघरी, स्वर एकै रस पूरत ।
और भूखन सबों अंगों, सोभित सब सूरत ॥५५॥

१. कडला ।

जिन विध पाऊं चलावहीं, सोई भूखन बोलत ।
जो बजावें झांझरी, तो घूंघरी कोई ना चलत ॥५६॥

जो बोलावत घूंघरी, तो नहीं झांझरी बान ।
जो सबे बोलावत, तो बोलें सब समान ॥५७॥

प्रेम रसायन गावत, अति प्यारी मीठी बान ।
याही विध हस्त देखावहीं, फेर फेर देत हैं तान ॥५८॥

कई जुदे जुदे बोलें भूखन, सब बाजे मिलावत संग ।
एक रस सब गावत, नवरंग-बाई के रंग ॥५९॥

हाथ धरत मृदंग पर, जब अव्वल स्वर करत ।
निरत करें कई विधसों, कई गुन कला ठेकत ॥६०॥

कई गत भांत रंग ल्यावत, ए तो कामिल निरत कमाल ।
इन छेक बालन की क्यों कहूं, जो देखत नूर जमाल ॥६१॥

कई विध कहूं बाजंत्र की, कई विध नट नाचत ।
कई विध की फेरी कहूं, कई रंग रस गावत ॥६२॥

नामै जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर ।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए नए दिल धर ॥६३॥

मुरली बजावत मोरबाई, बेनबाई बाजंत्र ।
तानबाई तान मिलावत, निरत जामत इन पर ॥६४॥

कंठ केलबाई अलापत, स्वर पूरत बाईसेंन ।
सब मिल गावें एक रस, मुख बानी मीठी बैन ॥६५॥

झरमरबाई बजावत, माहें झरमरी अमृती ।
कई बाजे कई रंग रस, ए रंग अलेखे कहूं केती ॥६६॥

खड़ियां रूहें निरत में, इत उछरंग होत ।
तरफ चारों जवेरन में, निरत देखे अधिक जोत ॥६७॥

निरत कला सब नाच के, फेर फेर देत पड़ताल ।
यों स्वर मीठे मोहोलन के, चलत आगूं मिसाल ॥६८॥

ऐसे ही प्रतिबिंब इनके, मोहोल बोलें कई और ।
बानी बाजे निरत अवाजे, होत निरत कई ठौर ॥६९॥

साम सामी पसु पंखी नंग के, जंग करें जवेरों दोए ।
एक ठौर निरत नाचत, ठौर ठौर सामी होए ॥७०॥

यों सब ठौर जंग अर्स में, कहूं केती विध किन ।
अपार अखाड़े सब दिसों, होत सब में रोसन ॥७१॥

ए रूह की आंखों देखिए, असल बका के तन ।
तो देखो चित्रामन धाम की, करत निरत सबन ॥७२॥

एह खेल एक पोहोर लग, होत हमेसां इत ।
पंद्रा दिन जब घर रहें, तब देखें दुलहा निरत ॥७३॥

मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत ।
और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत ॥७४॥

थंभ दिवालें सिंघासन, सब में होत निरत ।
इन समें पसु पंखी चित्रामन के, सब ठौरों केलि करत ॥७५॥

बोहोत बातें बीच अर्स के, किन विध कहूं इन मुख ।
जो बैठीं इन मेले मिने, सोई जानें ए सुख ॥७६॥

ऐसी चारों तरफों कई बैठकें, अंदर या गिरदवाए ।
ए सुख अखंड अर्स के, क्यों कर कहे जांए ॥७७॥

भोम पांचमी पौढ़न की

सुख बड़ो भोम पांचमी, मध्य मंदिर बारे हजार ।
बीच मोहोल स्यामाजीय को, इन चारों तरफों द्वार ॥७८॥

चौखूंनी बाखर बनी, तिन विस्तार है बुजरक ।
चारों तरफों बराबर, कहूं बेवरा बुध माफक ॥७९॥

बराबर मोहोल के गिरद, बीच बीच पौरी द्वार ।
पौरी के तरफ सामनी, मोहोल दरवाजे चार ॥८०॥

मोहोल के चारों खूंने, सोले सोले हवेली ।
जमे जो चौसठ कही, तिन द्वार द्वार एक गली ॥८१॥

ओगन-पचास चौपुड़े, ताके कहूं मंदिर ।
हर एक के एक सौ चौबीस, जमे छे हजार छेहत्तर ॥८२॥

चौक अठाईस त्रिपुड़े, हर एक के एक सौ दोए ।
अठाईस सै छप्पन, जमें मंदिरन को सोए ॥८३॥

चौक चार खूंने के दोपुड़े, हर एक के ओनासी मंदर ।
तीन सै सोले एह जमें, लगते दिवाल अंदर ॥८४॥

चौसठ दरम्यान हवेलियां, सो हिसाब कहूं मंदिरन ।
हर एक के तैंतालीस, जमे सताईस सै बावन ॥८५॥

जमे कियो मंदिरन को, सब बारे हजार भए ।
दरवाजे थंभ गलियां, अब कहूं जो बाकी रहे ॥८६॥

ओगन-पचास चौपुड़े, ताके जमे कियो थंभन ।
एक सौ चवालीस हर एकों, जमे सात हजार छप्पन ॥८७॥

हर एक के एक सौ पंद्रा, ए जो त्रिपुड़े अठाईस ।
थंभ जमे बत्तीस सै, और ऊपर भए जो बीस ॥८८॥

चार खूंने चार दोपुड़े, पचासी हर एक के ।
जमे तीन सै चालीस, एते थंभ भए ॥८९॥

ए जो चौसठ हवेलियां, तिन हर एक के थंभ चालीस ।
तिनके सब जमा कहे, साठ अगले सौ पचीस ॥९०॥

जमे सब थंभन को, एक सौ तेरे हजार ।
छेहत्तर तिनके ऊपर, एते भए सुमार ॥९१॥

ओगन-पचास चौपुड़े, तिन गली गिनों यों कर ।
हर एक की चौबीस कही, जमे अग्यारे सै छेहत्तर ॥९२॥

चौक त्रिपुड़े अठाईस, गली हर एक की अठार ।
तिनकी ए जमे भई, पांच सै ऊपर चार ॥९३॥

चौक चार खूंने के दोपुड़े, गली बारे हर एक ।
अड़तालीस ए जमे, ए जो गली दिवालों देख ॥९४॥

और जो चौसठ हवेलियां, एक एक गली गिरदवाए ।
एक एक द्वार दो दो पौरी, इन बिध ए सोभाए ॥९५॥

जमे सब गलियन को, सत्रह सै बानबे ।
आठों जाम देखिए, ज्यों रूह याही में रहे ॥९६॥

बड़े दरवाजे चौक के, एक सौ चवालीस ।
तैंतीस सै बारे जमे, हर द्वार पौरी तेईस ॥९७॥

यामें बत्तीस द्वार बाहेर के, एक सौ बारे अंदर ।
तैंतीस सै बारे जमे, यामें आओ साथ सुंदर ॥९८॥

चौखूंनी चौसठ बाखरे, इनों बीच बीच दरम्यान ।
दो दो पौरी तिनकी, याको रूहें जानें बयान ॥९९॥

मंदिरों माहें खिड़कियां, बाहेर दिवालों के ।
चारों खूंने गुरज से, तित दो दो झरोखे ॥१००॥

भोम पांचमी मध की, इत पौढ़त हैं रात ।
स्याम स्यामाजी साथ सब, जोलों होए प्रभात ॥१०१॥

ए तो मन्दिर कहे मध के, गिरद मन्दिरों हार ।
नेक नेक कही अंदर की, और कई विध मोहोल किनार ॥१०२॥

भोम छठी सुखपाल

घरों आए पीछे सबन के, छठी भोम सुखपाल ।
बने बिराजे मोहोल में, अति बड़ी पड़साल ॥१०३॥

भोम छठी बड़ी जाएगा, है बैठक इत विस्तार ।
बीच सिंघासन कई विध के, और झरोखे किनार ॥१०४॥

जुदी जुदी जुगतों जाएगा, बहु विध सिंघासन ।
छोटे बड़े कई माफक, कई छत्र मनी रतन ॥१०५॥

सुख अलेखे देत हैं, चारों तरफों झरोखे ।
ए कायम[१] सुख कैसे कहूं, देत दायम[२] हक जे ॥१०६॥

सुख देवें जब अंदर, तब ए बातें मीठी बयान ।
रंग रस करें रूहन सों, कोई ना सुख इन समान ॥१०७॥

कई चौक कई गलियां, कई हवेलियां अनेक ।
देख देख के देखिए, जानों एही विध विसेक ॥१०८॥

बीच तरफ या गिरदवाए, किन विध कहूं मोहोलन ।
एह अर्स की रोसनी, क्यों कहे जुबां इन ॥१०९॥

अनेक विध हैं अर्स में, केती विध कहूं जुबान ।
कह्या न जाए एक नकस, मुख कहा करे बयान ॥११०॥

झरोखे इन भोम के, बने बराबर हर हार ।
खूबी नूर रोसनी, क्यों कहूं सोभा अपार ॥१११॥

तेज तेज सों लरत हैं, जहूर जहूर सों जंग ।
केते कहूं रंग रंग सों, तरंग संग तरंग ॥११२॥

भोम सातमी हिंडोले

कहा कहूं भोम सातमी, मध्य मोहोल अनेक ।
कई विध गलियां हवेलियां, एक दूजी पे नेक ॥११३॥

१. अखंड । २. हमेशा ।

कई मोहोल कई मालिए, सोई झरोखे सुन्दर ।
द्वार बार सीढ़ी खिड़कियां, अति सोभा लेत मन्दिर ॥११४॥

कई सुख सातमी भोम के, कई हिंडोले हजार ।
रूहें आप मन चाहते, अर्स आराम नहीं पार ॥११५॥

भोम सातमी किनार में, मन्दिर झरोखे जित ।
दोनों हारों हिंडोले, छप्पर-खटों के इत ॥११६॥

साम सामी बैठी रूहें, हेत में सब हींचत ।
कड़े हिंडोले कई स्वर, बहु विध बोलत ॥११७॥

गिरदवाए सब हिंडोले, जुदी जुदी जिनसों अनेक ।
बारे हजार बोलत, स्वर एक दूजे पे विसेक ॥११८॥

हाँसी होत है इन समें, सुन सुन स्वर खुसाल ।
हँस हँस के हँसत, सब संग हींचें नूरजमाल ॥११९॥

ए सुख आनन्द अति बड़ो, रंग रस बढ़त अति जोर ।
भूखन हाँसी कड़े हिंडोले, ए क्यों कहूं अर्स सुख सोर ॥१२०॥

अतंत सुख इन बखत को, जो कदी आवे रूह माहें ।
तो नींद निज अंग असल की, उड़ जावे कहूं काहें ॥१२१॥

भोम आठमी हिंडोले

इसी भांत भोम आठमी, चार चार खटछप्पर ।
चारों तरफों हींचत, ए सोभा कहूं क्यों कर ॥१२२॥

चारों तरफों बातें करें, मुख मुख जुदी बान ।
रंग रस हाँस विनोद की, पिउ सों प्रेम रसान ॥१२३॥

चार हिंडोले जुदे जुदे, झूला लेवें सब एक ।
एकै बेर सब फिरत हैं, फेर खेल होत विसेक ॥१२४॥

और विध बीच हवेलियों, जुदी जुदी कई जिनस ।
देख देख के देखिए, एक पे और सरस ॥१२५॥

मंदिर जुदे द्वार जुदे, कई चौक चबूतर ।
ए सनंध इन मंदिरन की, जुबां सके न बरनन कर ॥१२६॥

कोटान कोट ले जुबां, जानों बरनन करूं एक द्वार ।
ए बरनन तो होवहीं, जो आवे माहें सुमार ॥१२७॥

इन ठौर विलास बोहोत है, सो इन जुबां कह्यो न जाए ।
ए लीला अर्स खावंद की, केहे केहे रूह पछताए ॥१२८॥

बल तो जुबां को है नहीं, ना कछू बुध को बल ।
ए जोगवाई झूठे अंग की, क्यों कहे सुख नेहेचल ॥१२९॥

जो कछू हिरदे में आवत, सो आवे नहीं जुबान ।
चुप किए भी ना बने, चाहें साथ सुजान ॥१३०॥

कहे रूह सुख पावत, और सुख विचारे अतंत ।
पर दुख पाऊं इन विध का, कछू पोहोंच न सके सिफत ॥१३१॥

चारों तरफों हिंडोले, अर्स के गिरदवाए ।
सब हिंडोलों हक संग, ए सुख अंग न समाए ॥१३२॥

भोम नौमी गोख[1] (छज्जे) की बैठक

छज्जे बड़े नौमी भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार ।
बैठक धनी साथ की, बाहेर की किनार ॥१३३॥

नजरों सब आवत है, इन ऊपर की बैठक ।
देख दूर की बातें करें, रंग रस उपजावें हक ॥१३४॥

जब बैठें जिन तरफ, तब तितहीं की जुगत ।
बातें करें बनाए के, नूर अपने अपनायत ॥१३५॥

१. झरूखो, छज्जा ।

जब बैठें तरफ नूर की, तब तितहीं का विस्तार ।
जित सिफत जिन चीज की, तिन सुख नहीं सुमार ॥१३६॥

जब बैठें तरफ पहाड़ की, तब बरनन करें अति दूर ।
तिन भोम के सुख को, सुमार नहीं जहूर ॥१३७॥

जब बैठें तरफ दरियाव की, घृत दूध दधी असल ।
कायम सुख कायम भोम के, आवें न माहें अकल ॥१३८॥

जब बैठें तरफ बड़े बन की, तब सोई सुख बरनन ।
पसु पंखियों के इस्क की, कई विध करें रोसन ॥१३९॥

और पहाड़ जोए जित के, कई विध की मोहोलात ।
ताल कुण्ड कई चादरें[1], इन जुबां कही न जात ॥१४०॥

या हौज[2] या जोए[3] के, कई विध देवें सुख ।
जब हक आराम देवहीं, तब सोई करें रूहें रूख[4] ॥१४१॥

मोहोल मन्दिर जो मध्य के, सो हैं अति रोसन ।
थंभों बेल फूल पांखड़ी, एक पात ना होए बरनन ॥१४२॥

तो मोहोल मन्दिर की क्यों कहूं, और क्यों कर कहूं दिवाल ।
कई लाख खिड़की हवेलियां, कई लाखों पौरी पड़साल ॥१४३॥

बैठ बीच नासूत[5] के, अंग नासूती जुबान ।
अर्स का बरनन कीजिए, सो क्यों कर होए बयान ॥१४४॥

दसमी भोम चांदनी

दसमी भोमें चांदनी, ए सोभा है अतंत ।
कई कदेले कुरसियां, बीच सोभा लेत तखत ॥१४५॥

कई बैठक मोहोल चांदनी, हक हादी इत आवत ।
साथ सब रूहन को, सुख मन चाहे देवत ॥१४६॥

१. धारें । २. हौज कौसर ताल । ३. जमुना जी । ४. इच्छा । ५. मृत्यु लोक ।

क्यों कहूं इन सुपेती की, उज्जल जोत अपार ।
दो सै हांसों चांदनी, नाहीं रोसन नूर सुमार ॥१४७॥

ए जो गुमटियां गिरदवाए की, नगीने एक अगले सौ दोए ।
बारे हजार गुमटियां, सोभा लेत अति सोए ॥१४८॥

चारों तरफों चेहेबच्चे, ए सोभा अति सुंदर ।
जल गिरत फुहारे मोतियों, चारों चांदनी अंदर ॥१४९॥

गिरदवाए फूल चेहेबच्चे, ए सोभा जुदी जुगत ।
अन्तर आंखें खोल के, ए सुख देखो अतंत ॥१५०॥

सोभा जल फूलन की, गिरद चारों किनार ।
ए सोभा अतंत देखिए, जो कछू रूह करे विचार ॥१५१॥

बोहोत बड़ी इत बैठक, विध विध बेसुमार ।
रात उज्जल अर्स चांदनी, ए सोभा अर्स अपार ॥१५२॥

जब हक हादी बीच बैठत, ले रूहें बारे हजार ।
नंग जवेर इन जिमी के, गिरद बैठत साज सिनगार ॥१५३॥

राज स्यामाजी बीच में, बैठें सिंघासन ऊपर ।
ए तखत हक अर्स का, ए सिफत करूं क्यों कर ॥१५४॥

कबूं रूहें निकट, बैठें मिलावा कर ।
हाँसी रमूज सनमुख, पिएं प्याले भर भर ॥१५५॥

कई विध की इत बैठक, जुदी जुदी जिनस ।
चारों तरफों अर्स के, देखी और पे और सरस ॥१५६॥

बड़ा मोहोल चौक चांदनी, चांद पूरन रह्या छिटक ।
रात बीच सिर आवत, जब कबूं बैठे इत हक ॥१५७॥

अर्स आए लग्या आकासें, उठ्या जोत अपनी ले ।
चांद सितारे अंबर, आए मुकाबिल अर्स के ॥१५८॥

चारों तरफों देखिए, रूहें बारे हजार ।
जिमी अंबर[1] में रोसनी, उठें किरनें नूर अंबार[2] ॥१५९॥

ऊपर चांदनी बैठक, देखिए नूर द्वार ।
जोत नूर दोऊ सनमुख, अम्बर न माए झलकार ॥१६०॥

देखों तरफ पुखराज की, या देखों तरफ ताल ।
या जोत मानिक देखिए, होए रही अम्बर जिमी सब लाल ॥१६१॥

क्यों कहूं रोसनी चांद की, क्यों कहूं रोसनी हक ।
क्यों कहूं रोसनी समूह की, जुबां रही इत थक ॥१६२॥

केहे केहे जुबां इत क्या कहे, तेज जोत रोसन नूर ।
सो तो इन जिमी जरे की, आकास न माए जहूर ॥१६३॥

ताथें महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहे जुबां इन देह ।
रूहअल्ला खोले अन्तर, लीजो लज्जत सब एह ॥१६४॥

।।प्रकरण।।३१।।चौपाई।।१७०२।।

बाब अर्स अजीम का मता जाहेर किया याने एक जवेर का अर्स

गैब[3] बातें बका अर्स की, कहूं सुनी न एते दिन ।
हम आए अर्स अजीम से, करें जाहेर हक वतन ।।१।।

दुनियां चौदे तबक की, सब दौड़ी बुध माफक ।
सुरिया को उलंध के, किन पाया न बका हक ।।२।।

पढ़ पढ़ वेद कतेब को, नाम धरे आलम ।
एती खबर किन ना परी, कहां साहेब कौन हम ।।३।।

ऊपर तले माहें बाहेर, ए जो कादर की कुदरत ।
सो कादर[4] काहू न पाइया, जिनके हुकमें ए होवत ।।४।।

१. आकाश । २. बेशुमार । ३. छिपी हुई । ४. सामर्थ्य ।

ए गुझ भेद जो गैब का, पाया न चौदे तबक ।
कथ कथ सब खाली गए, पर छूटी न काहू सक ।।५।।

ए तले ला मकान के, चार चीजें जिमी आसमान ।
ज्यों कबूतर खेल के, आखिर फना निदान ।।६।।

मोहे मेहेर करी रूहअल्ला ने, कुन्जी अर्स की ल्याए ।
अर्स बका[1] पट खोल के, इलम दिया समझाए ।।७।।

गिरो उतरी लैलतकदर[2] में, कह्या तिनमें का है तूं ।
खोल दे पट अर्स का, ज्यों आए मिले तुझको ।।८।।

जो अरवाहें अर्स की, सो आए मिलेंगी तुझ ।
तुझ अन्दर मैं आइया, ए केहे फुरमाया मुझ ।।९।।

किन कायम अर्स न पाइया, ए गुझ रही थी बात ।
अब तू उमत जगाए अर्स की, बीच बका हक जात ॥१०॥

और करी मेहेर महंमदें, अन्दर बैठे आए ।
कई विध करी बका रोसनी, सो इन जुबां कही न जाए ॥११॥

चौदे तबक कर कायम, भिस्त द्वार दीजो खोल ।
मैं साहेब के हुकम से, अव्वल किया है कौल ॥१२॥

सो ढूंढ़ों प्यारी उमत, मेरे हक जात निसबत ।
जो रूहें भूली वतन, ताए देऊँ हक बका न्यामत ॥१३॥

निमूना इन जिमी का, हक को दिया न जाए ।
पर कछुक तो कहे बिना, गैब की क्यों समझाए ॥१४॥

ज्यों जड़ाव एक मोहोल है, जवेर जड़े कई संग ।
कुंदन माहें सोभित, नए नए अनेक रंग ॥१५॥

ए सब एक जवेर का अर्स है, तामें कई तरंग उठत ।
जुदे जुदे रंगों झरोखे, अनेक भांत झलकत ॥१६॥

१. अखंड । २. माया (मोह की रात) ।

अनेक रंग थंभन में, अनेक सीढ़ियां पड़साल ।
कई रंग भोम चबूतरे, कई रंग द्वार दिवाल ॥१७॥

इन विध समझो अर्स को, एक जवेर कई रंग ।
द्वार दिवालें पड़सालें, और थंभों उठत तरंग ॥१८॥

जित जैसा रंग चाहिए, तहां तैसा ही देखत ।
ना समारे नए किन, ना पुराने पेखत ॥१९॥

जवेर जुदे जुदे सोभित, अनेक रंग अपार ।
एक जवेर को अर्स हैं, ज्यों रंग रस बन विचार ॥२०॥

बन सबे एक रस हैं, कई रंग बिरिख अनेक ।
रंग रस स्वाद जुदे जुदे, कहां लो कहूं विवेक ॥२१॥

हर जातें कई बिरिख हैं, रंग रस निरमल नेक ।
स्वाद अलेखे अपार हैं, पर असल बन रस एक ॥२२॥

गिरद अर्स के देखिया, जहां लो नजर पोहोंचत ।
एकल छत्री बन की, छेदर[1] ना गेहेरा कित ॥२३॥

ज्यों जड़ाव एक चंद्रवा, जवेर जड़े कई बिध ।
बन बेली कटाव कई, सोभित सोने की सनंध ॥२४॥

अनेक रंगों के जवेर, जो जिन संग सोभित ।
तिन ठौर बने तिन मिसलें, कई हुए कटाव जुगत ॥२५॥

एक जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं अकास ।
तिन जिमी के जवेर को, क्यों कर कहूं प्रकास ॥२६॥

एह चंद्रवा बन का, नूर रोसन गिरदवाए ।
तले जिमी अति रोसनी, ऊपर बन सोभाए ॥२७॥

जरे जरा सब नूर में, छज्जे दिवाल सब नूर ।
जिमी बन बीच आकास में, मावत नहीं जहूर ॥२८॥

१. छिद्रवाला ।

सोभा जानवर अर्स के, ताके एक बाल की रोसन ।
मावत नहीं आकास में, जुबां क्या करे सिफत इन ॥२९॥

सिफत न होए एक बाल की, तो क्यों होए सिफत वजूद ।
ए केहेनी में न आवत, तो क्यों कहे जुबां नाबूद ॥३०॥

एक बाल ना गिरे पसुअन का, ना खिरे पंखी का पर ।
पात पुराना ना होवहीं, अर्स जंगल या जानवर ॥३१॥

इन जिमी के जानवर, ताए देखत हक नजर ।
ए दिल में तो आवहीं, जो रूह देखे विचार कर ॥३२॥

पार ना खूबी खुसबोए को, पार ना पसु पंखियन ।
मीठी बानी अति बोलत, अंग सोभित चित्रामन ॥३३॥

सोभा क्यों होए रंग सुरंग की, नैन श्रवन चोंच बान ।
सुख देवें कई भांत सों, कई बोलें मीठी जुबान ॥३४॥

एक हक को हंसावें खेलके, कई हंसावें मुख बोल ।
कोई नाहीं निमूना इनका, जो दीजे इनकी तौल ॥३५॥

सोभा लेत जिमी जंगल, माहें टोले[1] कई खेलत ।
ए खूब खेलौने हक के, ए बुजरक इन निसबत ॥३६॥

कई पिउ पिउ कर पुकारहीं, कई करें खसम खसम ।
कई धनी धनी मुख बोलहीं, कई कहें भी तुम भी तुम ॥३७॥

इन विध मैं केते कहूं, बोलें जुबां अनेक ।
पर सबों एही जिकर, कहें मुख वाहेदत एक ॥३८॥

घास करत है सिजदा, करें सिजदा दरखत ।
तो क्यों न करें चेतन, यों फुरमान फुरमावत ॥३९॥

१. टोलियो में (छोटे छोटे गिरोह में) ।

घास पसु सब नूर के, जिमी जंगल सब नूर ।
आसमान सितारे नूर के, क्यों कहूं नूर चांद सूर ॥४०॥

आगूं जरे घास अर्स के, ख्वाब हैवान इन्सान ।
क्यों दीजे निमूना झूठ का, कायम जिमी जरा रेहेमान ॥४१॥

इत जरा छोटा बड़ा नूर का, या हौज जोए मोहोलात ।
अर्स जरे की इन जुबां, सिफत न कही जात ॥४२॥

आगूं द्वार अर्स के, चौक बन्या चबूतर ।
कबूं हक तखत बैठहीं, आगे खेलें जानवर ॥४३॥

कई कदेलें कुरसियां, ऊपर रूहें बैठत ।
सुमार नहीं पसु पंखियों, कई विध खेल करत ॥४४॥

इन दरगाह की रूहन सों, दोस्ती हक की हमेसगी ।
इन जुबां सों सिफत, क्यों होवे इनकी ॥४५॥

जो नजीकी निस दिन, हक हादी हमेस ।
क्यों कहूं अर्स अरवाहों को, ए जो कायम खुदाई खेस[1] ॥४६॥

सोभा जाए न कही रूहन की, जो बड़ी रूह के अंग नूर ।
कहा कहे खूबी इन जुबां, जो असल जात अंकूर ॥४७॥

अब देखो अंतर विचार के, कैसा सुन्दर सरूप रूहन ।
किन विध खूबी रूहन की, क्यों वस्तर क्यों भूखन ॥४८॥

देखो कौन सरूप बड़ी रूह का, आपन रूहें जाको अंग ।
हक प्याले पिलावत, बैठाए के अपने संग ॥४९॥

कायम हमेसा बुजरकी, सिरदार इन रूहन ।
ए जुबां झूठे वजूद की, क्यों करे सिफत इन ॥५०॥

१. संबंध ।

ए सिरदार कदीम[1] रूहन के, हक जात का नूर ।
तिन नूर को नूर सबे रूहें, ए वाहेदत एकै जहूर ॥५१॥

अर्स जरे की सिफत को, पोहोंचत नहीं जुबान ।
तो अर्स रूहें सिरदार की, क्यों होवे सिफत बयान ॥५२॥

इन अर्स का खावंद, ताकी सिफत होवे क्यों कर ।
एह जुबां क्यों केहेवहीं, इन अकल की फिकर ॥५३॥

सूरत हक के जात की, सिफत करूं मुख किन ।
जुबां न पोहोंचे जरे लग, तो कैसा सब्द कहूं इन ॥५४॥

सिफत हक सूरत की, क्योंए न आवे जुबांए ।
कछू लज्जत तो पाइए, जो आवे फैल हाल माहें ॥५५॥

कैसा सरूप है हक का, जो इन सबों का खावंद ।
क्यों देऊं निमूना इनका, इन जुबां मत मंद ॥५६॥

सोभा सुन्दरता जात की, एक हक जात सूरत ।
अंतर आंखें खोल तूं, अपनी रूह की इत ॥५७॥

रहे ठाढ़ी इन जिमी पर, देख अपना खसम ।
देख मिलावा अर्स का, और देख अपनी रसम ॥५८॥

देख तले तरफ जिमीय के, उज्जल जोत अपार ।
बन रोसन भरया आसमान लों, किरना नहीं सुमार ॥५९॥

ऊपर देख तरफ बन के, फल फूल बेली रंग रस ।
कहूं जड़ाव ज्यों चंद्रवा, कई कटाव कई नकस ॥६०॥

चारों तरफों चंद्रवा, अर्स के यों कर ।
दौड़ दौड़ के देखिए, आवत यों ही नजर ॥६१॥

१. प्राचीन (सदा से) ।

फेर फेर बन को देखिए, भांत चन्द्रवा जे ।
केहे केहे फेर पछतात हों, ऐसे झूठे निमूना दे ॥६२॥

एक जरा कायम देखिए, उड़े चौदे तबक वजूद ।
सिफत अर्स की क्यों करे, ए जुबां जो नाबूद ॥६३॥

कहे सूरज सोना जवेर, ख्वाब में बुजरक ए ।
क्यों पोहोंचे निमूना झूठ का, अर्स कायम हक के ॥६४॥

ए मैं देख दुख पावत, दिल में विचारत यों ।
जो कदी यों जान बोलों नहीं, तो कहे बिना बने क्यों ॥६५॥

इन कहे होत है रोसनी, रूह पावत है सुख ।
और इस्क अंग उपजे, हक सों होत सनमुख ॥६६॥

उमंग अंग में रोसनी, अलेखे उपजत ।
इन कहे अरवाहें अर्स की, अनेक सुख पावत ॥६७॥

जित जित देखों नजरों, हक जिमी अर्स वतन ।
कहे सेती कई कोट गुना, आवत अन्दर रोसन ॥६८॥

कई कोट गुना बढ़त है, बड़ा नफा रूह जान ।
बढ़त बढ़त हक अर्स की, आवत इस्क पेहेचान ॥६९॥

इन कहे से ऐसा होत है, पीछे आवत फैल हाल ।
तो ख्वाब में कायम अर्स का, सुख लीजे नूरजमाल ॥७०॥

ए मेहेर देखो मेहेबूब की, बड़ी रूह भेजी इत ।
इन जिमी रूहें जगाए के, कर दई ए निसबत ॥७१॥

ए हक का दिया पाइए, कौल फैल या हाल ।
ए साहेब कायम देवहीं, केहेनी अर्स कमाल ॥७२॥

जब केहेनी आई अंग में, तब फैल को नाहीं बेर ।
फैल आए हाल आइया, लेत कायम रोसनी घेर ॥७३॥

तले से ऊपर चढ़त है, जिमी की रोसन ।
और जिमी पर उतरत है, ऊपर का नूर बन ॥७४॥
देखों जहां जहां दौड़ के, इसी भांत बन छांहें ।
जिमी बन नूर देख के, सुख उपजत रूह माहें ॥७५॥
ए बाग गिरद अर्स के, और एही गिरदवाए जोए ।
एही बाग गिरद हौज के, सब नूर पूर खुसबोए ॥७६॥
जिमी भी सब एक रस, तिनमें कई जुगत ।
जित जैसा रंग चाहिए, तित तैसा ही देखत ॥७७॥
रेत किनारे जोए पर, और रेत जिमी पर जेती ।
ताल पाल कई मोहोलों पर, कहूं जल खूबी केती ॥७८॥
पहाड़ जवेर केते कहूं, तले बीच ऊपर ।
कई जवेर कई रंग के, क्यों कहूं सोभा सुन्दर ॥७९॥
एही जिमी नूरजलाल की, जिन जानो बाग और ।
याही जवेर को मन्दिर, ताथें एक रस सब ठौर ॥८०॥
ना समारया अर्स को, ना किए नूर मन्दिर ।
ना किए हौज जोए को, ना पर्वत बन जानवर ॥८१॥
ना समारी जिमी जल को, ना आकास चांद सूर ।
वाओ तेज सब हक के, हैं कायम हमेसा नूर ॥८२॥
है नूर सब नूरजमाल को, फरिस्ते नूर सिफात ।
रूहें नूर बड़ीरूह को, ए सब मिल एक हक जात ॥८३॥
दूसरा इत कोई है नहीं, एकै नूरजमाल ।
ए सब में हक नूर है, याही कौल फैल हाल ॥८४॥
महामत कहे ए मोमिनों, जो अरवा अर्स अजीम[1] ।
इस्क प्याले लीजियो, भर भर नूर हलीम[2] ॥८५॥

॥प्रकरण॥३२॥चौपाई॥१७८७॥

१. बड़ा, महान । २. गंभीर ।

खिलवत में हाँसी फरामोसी दई

अब देखो अन्दर अर्स के, रूहें बैठी बारे हजार ।
उतरी लैलत-कदर[1] में, खेल देखन तीन तकरार[2] ।।१।।

वास्ते हाँसी के मने किए, किया हाँसी को दिल हुकम ।
तो हाँसी को दिल उपज्या, मांग्या हाँसी को खेल खसम ।।२।।

ए देखो भोम तले की, बैठा हक मिलावा जित ।
आप अर्स में अरवाहों को, खेल मेहेर का दिखावत ।।३।।

साहेब बैठे तखत पर, खेलावत कर प्यार ।
ऐसी हाँसी फरामोसीय की, कबूं देखी ना बेसुमार ।।४।।

उठके गिर गिर पड़सी, फरामोसी हाँसी के खेल ।
ए जो तीनों तकरार, हकें देखाए माहें लैल ।।५।।

क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें यों कह्या उतरते ।
जो केहेता हों तुमको, जिन भूलो खेल में ए ।।६।।

क्यों कहूँ सुख रूहन के, हक इन विध हांसी करत ।
आप देत भुलाएके, आपै जगावत ।।७।।

क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें कौल से किए हुसियार ।
दिल नींद दे ऊपर जगावत, करने हाँसी अपार ।।८।।

खेल किया हांसी वास्ते, वास्ते हाँसी किए फरामोस ।
वास्ते हाँसी ऊपर पुकारहीं, वास्ते हाँसी न आवत होस ।।९।।

आप फरामोसी ऐसी दई, जो भूलियां आप हक घर ।
ऊपर कई विध केहे केहे थके, पर जाग न सके क्योंए कर ॥१०॥

ऐसी दारू ल्याए रूहअल्ला, जासों मुरदा जीवता होए ।
पर फरामोसी इन हाँसी की, उठ न सके कोए ॥११॥

१. माया । २. हिस्सा, टुकड़ा ।

इन विध हाँसी न जाए कही, कई कोट विधों जगावत ।
कई दारू उपाय कर कर थके, दिल ठौर क्योंए न आवत ॥१२॥

हाँसी होसी अति बड़ी, ए खेल किया वास्ते इन ।
औलिया लिल्ला दोस्त कहावहीं, पर बल न चल्या इत किन ॥१३॥

हाँसी इसही बात की, फेर फेर होसी ए ।
उठ उठ गिर गिर पड़सी, बखत जागने के ॥१४॥

आपन को फरामोस की, नींद आई निहायत ।
अर्स अजीम में कूदते, कछू चल्या न हकसों इत ॥१५॥

अरवाहें हमेसा अर्स की, कहावें खास उमत ।
पर कछू बल चल्या नहीं, ना तो रखते हक निसबत ॥१६॥

हँसते हँसते उठसी, ऐसी हुई न होसी कब ।
हक हँससी आपन पर, ऐसी हुई जो हाँसी अब ॥१७॥

कई हाँसी खुसाली अर्स में, करी मिनो मिने रूहन ।
पर ए हाँसी ऐसी होएसी, जो हुई नहीं कोई दिन ॥१८॥

ऐते दिन हाँसी खुसाली, करी रूहों दिल चाही जे ।
पर ए हाँसी हक दिल चाही, ताथे बड़ी हाँसी हुई ए ॥१९॥

रूह अपनी इन मेले से, जुदी करो जिन खिन ।
न्यारी निमख न होए सके, जो होए अरवा मोमिन ॥२०॥

इन ठौर ए मिलावा, जिन जुदी जाने आप ।
इतहीं तेरी कयामत, याही ठौर मिलाप ॥२१॥

हक हादी इतहीं, इतहीं असलू तन ।
खोल आंखें इत रूह की, एह तेरा बका वतन ॥२२॥

ए ठौर नजर में लीजिए, लगने न दीजे पल ।
कौल फैल या हाल सों, देख हक हाँसी असल ॥२३॥

इत देख फेर फेर तूं, अपनी रूह की आंखां खोल ।
कर कुरबानी आपको, आए पोहोंच्या कयामत कौल ॥२४॥

ए हाँसी करी हक ने, फरामोसी की दे ।
क्यों न विचारें आपन, ए तरंग इस्क के ॥२५॥

याथें देखो हक इस्क, हेत प्रीत मेहेरबान ।
ए हकें करी ऐसी हांसियां, खोल आंखें दिल आन ॥२६॥

ऐसा हेत देख्या हक का, तो भी लगे न कलेजे घाए ।
ऐसी रब रमूजें सुन के, हाए हाए उड़त नहीं अरवाए ॥२७॥

ए सुख जरा याद न आवहीं, याद न एक एहेसान ।
हक देत याद कई विध सों, हाए हाए ऐसी लगी नींद निदान ॥२८॥

ना तो ऐसी मेहेर इस्क सों, हक करत आपन सों ।
जगाए के पेहेचान सब दई, हाए हाए आवत ना होस मों ॥२९॥

महामत कहे ए मोमिनों, ए देखो हक की मेहेर ।
जो एक एहेसान हक का लीजिए, तो चौदे तबक लगे जेहेर ॥३०॥

॥प्रकरण॥३३॥चौपाई॥१८१७॥

परिकरमा नजीक अर्स के

बेवरा अगली भोम का, मेहेराव और झरोखे ।
खूबी क्यों कहूं दिवाल की, सोभा लेत इत ए ॥१॥

गिरदवाए मेहेराव झरोखे, फेर देखिए तरफ चार ।
इन मुख खूबी तो कहूं, जो होवे कहूं सुमार ॥२॥

बेसुमार जो फेर फेर कहिए, तो आवत नहीं हिरदे ।
तो सब्द में ल्यावत, ज्यों दिल आवे मोमिनों के ॥३॥

पार ना कहूं अर्स का, सो कह्या बीच दिल मोमिन ।
ए विचार कर देखिए बका, सो ल्याए बीच दिल इन ।।४।।

हिसाब बीच ल्याए बिना, हक आवें नहीं दिल माहें ।
हक देत लदुन्नी मेहेर कर, हक अर्स आवे बीच जुबांए ।।५।।

दोऊ तरफ बड़े द्वार के, ए जो हांसें कही पचास ।
सामी चौक चांदनी, क्यों कहूं खूबी खास ।।६।।

देहेलान ऊपर द्वार के, जो ऊपर चबूतरे दोए ।
चार चार मंदिर दोऊ तरफ के, ऊपर लग चांदनी सोए ।।७।।

हांस पचास अगली दिवालें, दोऊ तरफों पचीस पचीस ।
दो मेहेराव बीच झरोखे, हर हांसें मंदिर तीस ।।८।।

हर मंदिर एक झरोखा, याकी सोभा किन मुख होए ।
आए लग्या बन दिवालें, देत मीठी खुसबोए ।।९।।

दोए भोम कही जो बन की, खिड़की मोहोल तिन बन ।
भोम दूजी मोहोल झरोखे, इत बसत पसु पंखियन ॥१०॥

उतर झरोखों से जाइए, दूजी भोम बन माहें ।
बन सोभे पसु पंखियों, कई हक जस गावें जुबांए ॥११॥

चल जाइए सातों घाट लग, खूबी देख होइए खुसाल ।
कई विध हक जिकर करें, पसु पंखी अपने हाल ॥१२॥

इस्क जुबां बानी गावहीं, खूब सोभित अति नैन ।
मगन होत हक सिफत में, मुख मीठी बानी बैन ॥१३॥

किन बिध कहूं पसु पंखियों, परों पर चित्रामन ।
मुख बोलें हक के हाल में, तिन अंबर भरे रोसन ॥१४॥

जैसी सोभा पसु पंखियों, सोभा तैसी भोम बीच बन ।
सो सोभा मीठी हक जिकर, यों हाल खुसाल रात दिन ॥१५॥

सोभा जाए ना कही बन पंखियों, और जिकर करत हैं जे ।
तो हक हादी रूहें मिलावा, कहूं किन बिध सोभा ए ॥१६॥

इतथें चलके जाइए, ऊपर दोऊ पुलन ।
ए खूबी मैं क्यों कहूं, जो नूरजमाल मोहोलन ॥१७॥

सात घाट कहे बीच में, माहें पसु पंखी खेलत ।
तले भोम या ऊपर, बन में केलि करत ॥१८॥

केल लिबोई अनार, बांईं तरफ खूबी देत ।
जांबू नारंगी बट दाहिने, नूर सनमुख सोभा लेत ॥१९॥

दोए पुल सात घाट बीच में, पाट घाट बिराजत ।
बीच दोऊ दरबार के, बन अंबर जोत धरत ॥२०॥

जो घड़नाले पुल तले, दस दस दोऊ के ।
दस नेहेरें चलें दोरी बंध, बड़ी अचरज खूबी ए ॥२१॥

दोऊ पुल देख के आइए, निकुंज मंदिरों पर ।
इत देख देख के देखिए, खूबी जुबां कहे क्यों कर ॥२२॥

आगूं इतथें हिंडोले, जित चौकी बट पीपल ।
चार चौकी बट हिंडोलें, इतथें ना सकिए निकल ॥२३॥

दूजी भोम जो चौकियों, दौड़ जाइए तितथें ।
बीच मेहेरावों कूद के, उतर आइए अर्स में ॥२४॥

पेहेली भोम के झरोखे, सो दूजी भोम लग बन ।
ए झरोखे के बराबर, भोम दूजी हिंडोलन ॥२५॥

पेहेली भोम फूल बाग लों, दिवाल देखिए दिल धर ।
फिरते मेहेराव झरोखे, बन आवे अंदर थे नजर ॥२६॥

फेर देखिए फूल बाग लों, हर मंदिर मेहेराव दोए ।
बीच बीच उचेरा झरोखा, कहूं किन मुख सोभा सोए ॥२७॥

भोम तले बन हिंडोले, अति सोभित इतथें ।
मेहेराव झरोखे सुन्दर, जब बैठ देखिए बन में ॥२८॥

कई जिकर करें जानवर, मीठे स्वर बयान ।
इस्क खूबी अति बड़ी, सिफत बका सुभान ॥२९॥

इत क्यों कहूं खूबी हिंडोले, जित हींचें रूहें हादी हक ।
बयान न होए एक जंजीर, जो उमर जाए मुतलक ॥३०॥

ए भोम तले की दिवाल में, मेहेराव आवे न सिफत मों ।
देख देख के देखिए, फेर चलिए फूल बाग लों ॥३१॥

दूसरी भोम जो अर्स की, सो तीसरी भोम लग बन ।
जाइए झरोखे से हिंडोले, ए सोभा कहूं मुख किन ॥३२॥

चौथी भोम के बन से, जाइए तीसरी भोम अर्स ।
ए भोम झरोखे बराबर, ए बन मोहोल अरस-परस ॥३३॥

पांचमी भोम बन चांदनी, अति खूबी लेत इत ए ।
चल जाइए चौथी भोम अर्स, मोहोल देखो बैठ झरोखे ॥३४॥

बट पीपल की चौकियां, एक घाट लग हद ।
लंबी चांदनी फूल बाग लों, ए सोभा न आवे माहें सब्द ॥३५॥

हर हांस तीस मंदिर, हर मंदिर झरोखा एक ।
दोऊ तरफ दो मेहेराव, मन्दिरों खूबी विसेक ॥३६॥

हर हांस साठ मेहेराव, इनों बीच बीच झरोखा ।
भोम तले अति रोसनी, खूबी क्यों कहूं सोभा बका ॥३७॥

इन विध हांसें फिरतियां, चारों तरफों सौ दोए ।
चारों तरफ का बेवरा, नेक केहेत हुकम सोए ॥३८॥

एक तरफ आगूं द्वारने, तरफ दूजी चौकी हिंडोले ।
फूल बाग तरफ तीसरी, चौथी चबूतरे चेहेबच्चे ॥३९॥

चार चार नेहरें जंजीर ज्यों, मिल मिल फिरें गिरदवाए ।
बीच बीच सोभित बगीचों, अचरज एह देखाए ॥४०॥

बीच झरोखें कारंजे, चारों तरफों चार चलत ।
ए चारों बीच चेहेबच्चे, एकै ठौर पड़त ॥४१॥

कहूं कारंज एक बीच में, एक ठौर उछलत ।
सो चारों फुहारे होए के, चारों खूंटों गिरत ॥४२॥

सो ए फूलबाग की, सोभा इन मुख कही न जाए ।
नूर जोत फूल पातन की, जानो अंबर में न समाए ॥४३॥

चार खूंट चारों हांसों, कई जिनसों फूल देखाए ।
कई जुगतें पात सोभित, सब खुसबोए रही भराए ॥४४॥

फूल कहूं कई रंग के, गिनती न आवे सुमार ।
ना गिनती रंग पात की, खूबी क्यों कहूं इनों किनार ॥४५॥

जानो के गंज नूर को, भराए रह्यो आकास ।
जब नीके नजर दे देखिए, तब कछू पाइए खूबी खास ॥४६॥

विवेक कर जब देखिए, तब पाइए फूल पांखड़ीं पात ।
कई जिनसें जुगतें कांगरी, नूर आगे देखी न जात ॥४७॥

कई जिनस जुगत रंग फूल में, कई जिनस जुगत पात रंग ।
नूर बाग खासी हक हादी रूहें, खूबी क्यों कहूं जुबां इन अंग ॥४८॥

ए बाग चौड़ा लंबा सोहना, माहें जुदी जुदी कई जिनस ।
कई एक रंगों बगीचे, जानों एक से और सरस ॥४९॥

एक एक दरखत में कई रंग, यों कई बगीचे विवेक ।
कई बगीचे चेहेबच्चे, जानों जो देखों सोई विसेक ॥५०॥

नेहेरें चलत कई बीच में, चेहेबच्चे बगीचों ।
कई बैठकें कारंजों, जल उछलत फुहारों ॥५१॥

कई मोहोल मन्दिरों चबूतरे, इत बने हैं बनके ।
इत हक हादी रूहें बैठक, अति ठौर खुसाली ए ॥५२॥

चारों खूटों बड़े चार चेहेबच्चे, तिन हर एक में कई कारंज ।
सब नेहेरें तहां से चलें, वह चेहेबच्चों भरत्या जल गंज ॥५३॥

पांच पांच हांसों बगीचा, भए पचास हांसों बाग दस ।
ए सोभा इन जुगतें, याको क्यों कहूं रूप रंग रस ॥५४॥

ए बड़ा बाग ऊपर चबूतरे, तापर बन की दिवाल ।
ए नूर फूलन का क्यों कहूं, सेत स्याम नीले पीले लाल ॥५५॥

तले तीन तरफ मेहेराव, ए जो कही दिवाल गिरदवाए ।
ऊपर दिवालें बनकी, ए सिफत कही न जाए ॥५६॥

इन सौ बगीचों चेहेबच्चे, जुदी जुदी जिनस जुगत ।
ए बाग नेहेरें देखते, नैना क्योंए ना होंए तृपित ॥५७॥

जो बाग तले चबूतरा, सो छाया बीच दरखत ।
बीच अर्स के उसी जुबां, हक आगूं होए सिफत ॥५८॥

ए बिरिख जो अर्स भोम के, सो अर्सै के हैं नंग ।
ए जोत कहूं क्यों इन जुबां, और किन विध कहूं तरंग ॥५९॥

जिमी तले जो दरखत, एह जिनस कछू और ।
खूबी फल फूल पात की, किन मुख कहूं ए ठौर ॥६०॥

रंग जोत खूबी खुसबोए की, क्यों कर कहूं ए बन ।
फल फूल पात तले जिमी, जानों सूर हुए रोसन ॥६१॥

कई नेहेरें कई चेहेबच्चे, कई कारंजें जल उछलत ।
कई मोहोल माहें बैठकें, हक हादी रूहें खेलत ॥६२॥

तले बाग जो दरखत, बड़ा बन गिरदवाए ।
चारों खूंटों बराबर, खूबी जरे की कही न जाए ॥६३॥

तो क्यों कहूं सारे बाग की, जिन की खूबी कही ए ।
ऐसा जरा कह्या जिनका, तो क्यों कहूं ठौर हक के ॥६४॥

जेता बाग ऊपर, तेता तले विस्तार ।
चारों खूंटों बराबर, ए सिफत न आवे सुमार ॥६५॥

अति खूबी बाग ऊपर, तले तिनसे अधिकाए ।
वह खूबी इन मुख से, मोपे कही न जाए ॥६६॥

बाग पांच पांच हांसके, हैं दस बाग हांस पचास ।
यों मोहोलातें सौ बाग की, कहूं किन विध खूबी खास ॥६७॥

चारों तरफों चलती, नेहेरें बीच बाग के ।
बीच मेहेरावों से देखिए, सोभित बिरिखों तले ॥६८॥

पचास हांस तरफ बाग के, हर हांसें तीस मन्दिर ।
मेहेराव बीच झरोखा, तीन तीन सबों अन्दर ॥६९॥

इन हांस चेहेबच्चे से चलिए, दूसरे पोहोंचिए जाए ।
मोहोल मेहेरावों देखिए, बाग इतथें और सोभाए ॥७०॥

एक एक मन्दिर में आएके, फेर देखिए गिरदवाए ।
इन विध रूहें देखिए, उलट[1] अंग न समाए ॥७१॥

ए बाग मेहेराव देखके, आए बड़े चेहेबच्चे ।
आया आगूं लाल चबूतरा, खूबी किन विध कहूं मैं ए ॥७२॥

चालीस हांसों चबूतरा, बड़े मेहेराव इन पर ।
देख देख के देखिए, खूबी क्यों कहूं इन चबूतर ॥७३॥

तीन हजार छे सै बने, मेहेराव बराबर ।
सोभा हांसों चालीस, इन जुबां कहूं क्यों कर ॥७४॥

ए ठौर सोभा अति बड़ी, और बन विस्तार ।
ए ठौर बैठक बड़ी, पसु पंखी खेलें अपार ॥७५॥

१. खुशी ।

अति खूबी आगूं कठेड़े, हांसो चालीसों सोभित ।
देखत अर्स आंखन सों, खूबी उत जुबां बोलत ॥७६॥

जुदी जुदी जिनसों सोभित, जुदी जुदी जिनसों फल फूल ।
पात रंग जुदी जिनसों, देख देख होइए सनकूल ॥७७॥

हर मन्दिर माहें आए के, चढ़िए हर झरोखे ।
जब आइए हर झरोखे, तब खूबी देखो बाग ए ॥७८॥

बड़े मेहेराव बराबर, एक दूजे को लगता ।
हांस चालीस ऊपर चबूतरे, सोभा न आवे सब्द में बका ॥७९॥

एह भोम एह चबूतरा, लगते पेड़ दरखत ।
ए ठौर बरनन करते, हाए हाए छाती नाहीं फटत ॥८०॥

आगूं भोम चबूतरे, चारों तरफों चौगान ।
गिरदवाए परे पुखराज के, जिमी रोसन खेलें रेहेमान ॥८१॥

जिमी ऊंची नीची कहूं नहीं, बराबर एक थाल ।
पसु पंखी सब में खेल हीं, ए खेलौने नूर जमाल ॥८२॥

बड़ा बन ऊँचे हिंडोले, तले हाथी जात आवत ।
कहूँ केते बड़े जानवर, इन चौगान खेल करत ॥८३॥

बाघ केसरी चीते खेलहीं, और मोर मुरग बांदर ।
हर जातें जातें कई जिनसें, कहूँ कहां लग खेल जानवर ॥८४॥

हर जिनसें कई खेलत, एक एक में खेल अपार ।
खेलें कूदें नाचें उड़ें, गावें कई विध जुबां न सुमार ॥८५॥

इन मुख सोभा क्यों कहूं, और क्यों कहूं सोभा जिकर ।
सोभा पर चित्रामन, ए जुबां फना कहे क्यों कर ॥८६॥

सोभा कही न जाए दरखतों, और कही ना जाए इन भोम ।
जो देखो सोभा पसुअन की, करे रोसन अति एक रोम ॥८७॥

कई नाचत नट बांदर, कई बाजे बजावत ।
ए खेलौने हक हादीय के, केहेनी जुबां क्यों पोहोंचत ॥८८॥

चढ़ ऊँचे लेत गुलाटियां, फेर गुलाटियों उतरत ।
ए नट विद्या बहुविध की, क्यों कर करूं सिफत ॥८९॥

कूदत फांदत नाचत, लेत भमरियां दे पड़ताल ।
नई नई विद्या देख के, हक हादी रूहें होत खुसाल ॥९०॥

चढ़ कूदें कई दरखतों, पेड़ पेड़ से पेड़ ऊपर ।
तले जो अंत्रीख आए के, फिरत चढ़त ऊँचे उतर ॥९१॥

जंत्र बेन बजावहीं, रबाब ताल मृदंग ।
अमृत सारंगी झरमरी, झांझ तंबूरा चंग ॥९२॥

सरनाई भेरी नफेरी, और बाजे कई बजाए ।
तुरही रनसिंघा महुअर, और नगारे करनाए ॥९३॥

लेत तले से गुलाटियां, चढ़त जात आसमान ।
उतरें भी गुलाटियों, फेर फेर गुलाटों दे तान ॥९४॥

अंत्रीख मिने गुलाटियां, देत जात फिरत ।
इन विध लेत भमरियां, यों कई विध केलि करत ॥९५॥

देखो बन्दर खेल अर्स में, बड़ा देख्या अचरज ए ।
ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, हक हादी आगूं होत है जे ॥९६॥

ए नट विद्या कई नाचत, बाजे दिल चाहे बजावत ।
ए खेल अचम्भा देख के, हादी रूहें राचत ॥९७॥

इत आगूं लाल चबूतरे, भोम क्यों कहूं बन विस्तार ।
खेल पसु पंखियन को, जुबां कहे जो होवे कहूं पार ॥९८॥

बाघ केसरी खेलहीं, चीते खेलें सियाहगोस ।
सब विद्या अपनी साधहीं, सब खेलें इस्क के जोस ॥९९॥

हर खांचें जातें जुदी जुदी, आप अपनी विद्या खेलत ।
गाए नाचें जिकर करें, हर भांतें रूहों रिझावत ॥१००॥

हाथी घोड़े बैल बकर[1], साम्हर चीतल हरन ।
मेढ़े पाड़े पस्वड़े, कई खेलें ऊँट अरन ॥१०१॥

चालीस हांसों की ए कही, करें आप अपना खेल ।
छोड़ें न हांस मरजादा, हक आगे करें सब केलि ॥१०२॥

दस हांसें बाकी रही, ताके मंदिर झरोखे ।
तित ढिग दो दो मेहेराव, खूबी लेत बन पर ए ॥१०३॥

एक सौ दस छेल्ली[2] हार के, ए जो मोहोल भुलवनी के ।
एक सौ दस चारों तरफों, ए जो बारे हजार कहे ॥१०४॥

चबूतरे चेहेबच्चे लग, बीच चालीस मंदिर ।
चालीस चेहेबच्चे परे, अस्सी बीच तीस अंदर ॥१०५॥

तीस चेहेबच्चे ऊपर, बने जो झरोखे ।
चार चार द्वार हर मंदिरों, मुख क्यों कहूं सोभा ए ॥१०६॥

इत लगते जो मंदिर, हारें भुलवनी ।
केहे केहे मुख कहा कहे, सोभा अतंत घनी ॥१०७॥

छे हांस ऊपर दस मंदिर, हांसें पोहोंची लग पचास ।
एक झरोखा दो मेहेराव, ए जो फिरती खूबी खास ॥१०८॥

ए मोहोल फिरते बन ऊपर, ए जो सोभा लेत हैं इत ।
बन झरोखे सोभा तो कहूं, जो होए निमूना कहूं कित ॥१०९॥

ए जो घाट अनार का, आए मिल्या दिवाल ।
ए खूबी क्यों कहूं इन जुबां, रूह देखत बदले हाल ॥११०॥

घाट लिबोई हिंडोलों, आए मिल्या इत ए ।
खूबी ताड़ बन की, क्यों कहूं बल जुबां के ॥१११॥

१. गाय । २. आखरी ।

केल बन आगूं चल्या, मधु बन मिल्या आए ।
इत सोभा बड़े बन की, इन अंग मुख कही न जाए ॥११२॥

और हांसें पचास जो, आगूं बड़े दरबार ।
सोभित झरोखे मेहेराव, आगूं चौक सोभे बन हार ॥११३॥

ए जो बड़ी कही पड़साल, ऊपर बड़े द्वार ।
दोऊ तरफों तले दस थंभ, एक एक रंग के चार चार ॥११४॥

सामी दस थंभ दिवाल में, करे जोत जोत सो जंग ।
बीस थंभ रंग रंग मुकाबिल, तिन रंग रंग कई तरंग ॥११५॥

जो थंभ आगूं द्वार ने, अति उज्जल हीरों के ।
दोऊ तरफों जोड़े चार थंभ, ए चारों मानिक रंग लगते ॥११६॥

तिन जोड़े भी चार थंभ, सो पीत रंग पुखराज ।
तिन परे चारों पाच के, दोऊ तरफों रहे बिराज ॥११७॥

चारों खूंटों थंभ नीलवी, सोभा लेत इत ए ।
पांच थंभों के लगते, हुए बीस दस जोड़े ॥११८॥

ए बीस थंभों का बेवरा, इनों क्यों कहूं रोसन नूर ।
कटाव किनारे कांगरियों, क्यों कहूं इन द्वार जहूर ॥११९॥

चार चार मेहेराव दाएं बाएं, आठ हुए तरफ दोए ।
सोभा आगूं बड़े द्वार के, सो इन मुख खूबी क्यों होए ॥१२०॥

दोऊ तरफ दोए चबूतरे, ए जो लगते दिवाल ।
तीनों तरफों कठेड़ा, क्यों देऊं इन मिसाल ॥१२१॥

कठेड़ा रंग कंचन, जानों के मीना माहें ।
सोभा लेत थंभ कठेड़े, ए केहे न सके जुबांए ॥१२२॥

कई रंग जवेर चबूतरों, कई दिवालें रंग नंग ।
ऊपर तले का नूर मिल, करत अंबर में जंग ॥१२३॥

ए अर्स नूरजमाल का, तिन अर्स बड़ा दरबार ।
एह जोत आकास में, मावत नहीं झलकार ॥१२४॥

आठ भोम इन ऊपर, तिन आठों भोम पड़साल ।
जाए पोहोंच्या लग चांदनी, ऊपर गुमटियां लाल ॥१२५॥

ए सोभा अचरज अदभुत, जानें अर्स अरवाए ।
इन भोम रूह सो जान हीं, जिन मोमिन कलेजे घाए ॥१२६॥

आगूं तले चौक चांदनी, उतर जाइए सीढ़ियन ।
आगूं दोए चबूतरे चौक के, उपर हरा लाल दोऊ बन ॥१२७॥

इत सोभा चौक चांदनी, इन मोहोलों मुजरा जानवर ।
इन जुबां खूबी क्यों कहूं, ए जो बन में करें जिकर ॥१२८॥

ए जो रस्ता बन का, जोए जमुना लग किनार ।
सात घाट दोए पुल बीच में, कई चौक बने कई हार ॥१२९॥

द्वार सामी पाट घाट का, सो रस्ता बराबर ।
जोए परे रस्ता नूर लग, आवे साम सामी द्वार नजर ॥१३०॥

ऊपर पाट चौक चांदनी, चारों खूंटों अति सोभाए ।
नंग जंग करें रंग पांच के, बारे थंभ गिरदवाए ॥१३१॥

चारों तरफों थंभ दो दो, जानों बन चार द्वार ।
मानिक हीरे पाच पोखरे, ए चारों द्वार नंग चार ॥१३२॥

नूर दिस थंभ दोए मानिक, बट दिस हीरा थंभ दोए ।
दोए थंभ पाच दिस अर्स के, थंभ पोखरे केल दिस सोए ॥१३३॥

चार थंभ चार खूंट के, नीलवी के झलकत ।
ए बारे थंभों का बेवरा, माहें जल सों जंग करत ॥१३४॥

सोभा लेत अति कठेड़ा, ऊपर ढांप चली किनार ।
सोभा जल में झलकत, जल नंग तरंग करे मार ॥१३५॥

ए दोऊ द्वार के बीच में, भरी जोत जिमी अंबर ।
और उठत जोत बन की, नूर अर्स कहूं क्यों कर ॥१३६॥

नूर और नूरतजल्ला, आकास जिमी सब नूर ।
देत देखाई सब नूरै, नूर जहूर भर पूर ॥१३७॥

सब्द न अब आगे चले, जित पर जले जबराईल ।
इत आवें रूहें अर्स की, जो होए अरवा असील ॥१३८॥

महामत कहे सुनो मोमिनों, ए अर्स नूरजमाल ।
एही अर्स अजीम है, रहें इन दरगाह रूहें कमाल ॥१३९॥

।।प्रकरण।।३४।।चौपाई।।१९५६।।

नूर परिकरमा अंदर दस भोम ।। मंगला चरन ।।

बड़ीरूह रूहें नूर में, लें अर्स नूर आराम ।
नूरजमाल के नूर में, नूर मगन आठों जाम ।।१।।

तिनका जरा सब नूर में, नूर जिमी बिरिख बाग ।
नूर फल फूल पात नूर, रूहें निसदिन नूर सोहाग ।।२।।

नूर किनार नूर जोए के, नूर जल तरंग ।
नूर जल पर मोहोलातें, क्यों कहूं नूर के रंग ।।३।।

नूर जिमी निकुंज बन, नूर जिमी जल ताल ।
नूर टापू मोहोलात नूर, और नूर मोहोल बन पाल ।।४।।

नूर जल किनारे सीढ़ियां, नूर चबूतरा गिरदवाए ।
नूर मोहोल मेहेराव फिरते, नूर झांई जल में बनराए ।।५।।

नूर जरे तिनके का, मैं नूर कह्या दिल धर ।
नूर समूह की क्यों कहूं, रूहें नूर देखें सहूर कर ।।६।।

सुपेत जिमी नूर झलके, नूर आकास लग भरपूर ।
नूर सामी आकास का, क्यों कहूं जोर जंग नूर ।।७।।

नूर बाग हिंडोले रोसन, बिना हिसाबें नूर के ।
हक हादी रूहें नूर में, नूर हींचें अर्स लगते ।।८।।

हक बड़ी रूह हींचें नूर में, और रूहें नूर बारे हजार ।
जोत नूर आकास में, नूर भर्‌यो करे झलकार ।।९।।

खोल आंखें रूह नूर की, क्यों नूर न देखे बेर बेर ।
क्यों न आवे बीच नूर के, ज्यों नूर लेवे तोहे घेर ॥१०॥

ए रोसन करत कौन नूर की, नूर केहेत आगे किन ।
केहेत है नूर किनका, नूर रूह केहे चली मोमिन ॥११॥

देखो मोहोलातें नूर की, अंदर सब पूर नूर ।
कहां लग कहूं माहें नूर की, नूर के नूर जहूर ॥१२॥

सब चीजें इत नूर की, बिना नूर कछुए नाहें ।
नूर माहें अंदर बाहेर, सब नूर नूर के माहें ॥१३॥

नूर नजरों नूर श्रवनों, नूर को नूर विचार ।
नूर सेज्या सुख नूर अंग, नूर रोसन नूर सिनगार ॥१४॥

नूर खाना नूर पीवना, नूर मुख मजकूर ।
इस्क अंग सब नूर के, सब नूर पूर नूर ॥१५॥

गुन अंग सब नूर के, नूर इंद्री नूर पख ।
रीत रसम सब नूर की, प्रीत प्रेम नूर लख ॥१६॥

आसमान जिमी तारे नूर के, नूर चांद और सूर ।
रंग रूत नूर वाए बादल, गाजे बीज नूर भरपूर ॥१७॥

मोहोल मन्दिर सब नूर में, झांखन झरोखे नूर ।
द्वार दिवालें नूर सब, सब नूर हजूर या दूर ॥१८॥

थंभ दिवालें नूर की, नूरै के झरोखे ।
नूर सरूप माहें झांकत, नूर सब नूर देखें ए ॥१९॥

मोहोल मन्दिर सब नूर के, नूर मेहेराव खिड़कियां द्वार ।
नूर सीढ़ियां सोभा नूर की, बीच गिरदवाए नूर झलकार ॥२०॥
कहा कहूं नूर नवे भोम का, नूर क्यों कहूं नूर बिसात[1] ।
नूर वस्तर कहे न जावहीं, तो क्यों कहूं नूर हक जात ॥२१॥
रहें नूर सरूप पानी मिने, तो भीजें ना नूर तन ।
नूर तन रहें जो आग में, तो भी नूर न जलें अगिन ॥२२॥
कहे हक नूर बैठ नासूत में, करें नूर लाहूत के काम ।
नूर रूहें जिमी दुख में, लेवें नूर लाहूती आराम ॥२३॥
दिल मोमिन अर्स नूर में, नूर इस्क आग जलाए ।
एक नूर वाहेदत बिना, और नूर आग काहूं न बचाए ॥२४॥
कई गलियां नूर पौरियां[2], कई नूर चौक चौबट[3] ।
नूर बसे जो इन दिलों, तो नूर खुल जावे पट ॥२५॥
नूर सीढ़ियां नूर चबूतरे, नूरै के थंभ दिवाल ।
बीच खाली सोभा नूर की, ए नूर कहूं किन हाल ॥२६॥
बाजे बासन सब नूर के, पलंग चौकी सब नूर ।
नूर बिना जरा नहीं, नूर नूर में नूर जहूर ॥२७॥
दसों दिसा सब नूर की, नूरै का आकास ।
इन जुबां नूर बिलंद की, क्यों कहूं नूर प्रकास ॥२८॥
बाग जंगल राह नूर के, पसु पंखी नूर पूर ।
ख्वाब जिमी में नूर अर्स की, नूर जुबां कहा करे मजकूर ॥२९॥
होत नूर थें दूजा बोलते, दूजा नूर बिना कछू नाहें ।
एक वाहेदत नूर है, सब हक नूर के माहें ॥३०॥
नूर कहे महामत रूहें, देखो नजरों नूर इलम ।
वाहेदत आप नूर होए के, पकड़ो नूरजमाल कदम ॥३१॥

॥प्रकरण॥३५॥चौपाई॥१९८७॥

१. साज सामान । २. मेहेराव । ३. चार रस्ता ।

नूर परिकरमा अन्दर तांई

नूर तरफ पाट घाट नूर का, बारे थंभ नूर के ।
ऊपर चांदनी नूर रोसन, नूर क्यों कहूं किनार बन ए ।।१।।

नूर घाट जांबू बन का, और नूर घाट नारंग ।
बट घाट छत्री बन हिंडोले, पुल सोभे मोहोल नूर रंग ।।२।।

नूर किनारे रेती नूर में, मोहोल चबूतरे नूर किनार ।
ताल हिंडोले बीच नूर बन, नूर सोभा निकुंज अपार ।।३।।

नूर नेहेरें मोहोलों तले, नूर ढांपे चले अनेक ।
नूर चले नूर चक्राव ज्यों, नूर सुख पाइए देख विवेक ।।४।।

मोहोल मानिक पहाड़ नूर के, कई नेहेरें चादरें नूर ताल ।
कई मोहोल हिंडोले नूर के, ए नूर देखे बदले हाल ।।५।।

कहा कहूं हिंडोले नूर के, नूर रूहें झूलें बारे हजार ।
इन बिध नूर हिंडोले, नाहीं न नूर सुमार ।।६।।

बन नूर नेहेरें ढांपी चली, कई नेहेरें बन नूर विस्तार ।
कई नूर नेहेरें मिली सागरों, कई नूर नेहेरें आवें वार ।।७।।

कई मोहोलातें इत नूर की, कई टापू नूर मोहोलात ।
ए निपट बड़े मोहोल नूर के, मोहोल नूर आकास में न समात ।।८।।

नूर परिकरमा दीजिए, फिरते जाइए नूर बन में ।
बाग परे नूर अंन बन, आगूं बन बिना नूर जिमी ए ।।९।।

दूब दुलीचे नूर में, नूर लग्या जाए आसमान ।
दूर लग नूर या विध, नूर खेलें इत चौगान ॥१०॥

आगूं बड़ा बन नूर का, आए नूर मधुबन ।
कई हिंडोले नूर के, हुआ आसमान नूर रोसन ॥११॥

नूर पांच पेड़ पुखराज के, दो नूर सीढ़ी तीसरा ताल ।
ए आठों पहाड़ तले नूर में, ऊपर नूर मोहोल ना मिसाल ॥१२॥

हजार गुरज नूर चांदनी, चांदनी नूर आसमान ।
तापर मोहोल नूर आकासी, ए नूर आकास मोहोल सुभान ॥१३॥

इत बड़े जानवर नूर में, नूर खेलत रूहें खुसाल ।
इत निपट बड़ा खेल नूर का, हँसे रूहें हादी नूरजमाल ॥१४॥

चारों तरफ मोहोल नूर ताल के, नूर जल चादरों गिरत ।
सो परत बीच नूर कुंड के, रूहें देख देख नूर हंसत ॥१५॥

तले बंगले नेहेरें नूर की, चले चक्राव नूर इत ।
चारों तरफ बड़ी नूर पौरी, नूर सोभा न देखी कित ॥१६॥

इत बंगले बगीचे नूर के, नूर कारंजें कई उछलत ।
खूब खुसाली नूर भरी, नूर हँसें खेलें रमत ॥१७॥

नूर बाहेर नेहेर आई कुंड में, आगूं नूर चबूतरे ।
जाए ढांपी चली मोहोल नूर के, नेहेर खुली नूर किनारे ॥१८॥

दोऊ ढांपे किनारे नूर के, जोए फिरी नूर तरफ ताल ।
नूर एक मोहोल एक चबूतरा, ए नूर देख होइए खुसाल ॥१९॥

बड़ा बन मोहोल नूर का, ए नूर अति सोभित ।
जोए नूर आई पुल तले, सो क्यों कही जाए नूर सिफत ॥२०॥

ए मोहोल नूरजमाल के, दोए नूर पुल जोए ऊपर ।
नूर नेहेरें दस घड़नाले, ए खूबी नूर जुबां कहे क्यों कर ॥२१॥

केल घाट नूर कतरे, चौकी सोभित नूर किनार ।
पोहोंची नूर पुल बराबर, आगूं लिबोई नूर अनार ॥२२॥

ए नूर चौकी भोम चार की, नूर पुल से आए तीन घाट ।
अति सोभा आगूं छत्री नूर की, ऊपर जल नूर पाट ॥२३॥

नूर मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर द्वार से आए फेर द्वार ।
चारों खूंटों नूर थंभ नीलवी, नूर पाच रंग बारे सुमार ॥२४॥

नूर नेहेरें तीन तले चलें, नूर पाट एता जल पर ।
ठौर खेलन नूर जमाल के, ए नूर रूहें देखें दिल धर ॥२५॥

दोऊ पुल नूर सात घाट में, रूहें देखें नूर रोसन ।
हक जिकर नूर पंखियों, होत नूर में रात दिन ॥२६॥

नूर भोम दूजी बैठक, पसु पंखियों एह नूर ठौर ।
कई जिनसें नूर जिकर, बिना हक न बोले नूर और ॥२७॥

आगूं द्वार नूर चांदनी, रेती रोसन नूर आसमान ।
नूर जंग होत सबों बीचों, कोई सके न नूर काहूं भान ॥२८॥

आगूं दोए नूर चबूतरे, दोऊ पर नूर दरखत ।
लाल हरे रंग नूर के, ए नूर जानें हक सिफत ॥२९॥

नूर आगूं दरबार के, नूर लग चांदनी झलकार ।
हांस पचासों नूर पूरन, नूर जोत न कहूं सुमार ॥३०॥

नूर सामी नूर द्वार का, होत नूर नूर सों जंग ।
खड़ियां आगूं नूर चांदनी, नूर देखें अर्स नूर अंग ॥३१॥

नूर हीरे मानिक पोखरे, पाच नीलवी नूर थंभ ।
नूर पांच रंग दोऊ तरफों, दस दिवालें नूर अचंभ ॥३२॥

अंदर आओ नूर द्वार के, फेर देख नूर अर्स ।
नूर मंदिर चौक चबूतरे, नूर एक पे और सरस ॥३३॥

नूरै के मोहोल मन्दिर, नूर दिवालें द्वार ।
नूर नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बड़ो विस्तार ॥३४॥

चलो नूर द्वार से नूर ले, दे नूर तवाफ[1] गिरदवाए ।
देख मेहेराव नूर झरोखे, नूर बाग देख फेर आए ॥३५॥

१. परिकरमा ।

नूर चेहेबच्चे नूर चबूतरे, ए नूर फेर फेर देख ।
फेर नूर चौक द्वारने, नूरै नूर विसेख ॥३६॥

दो दो मन्दिर हारें नूर की, बीच दो दो नूर थंभ हार ।
यों नवे भोम नूर मन्दिर, नूर झरोखे किनार ॥३७॥

यों सब भोमें नूर गिरदवाए, थंभ गलियां नूर मन्दिर ।
मेहेराव झरोखे नूर के, देख नूर लगता इनों अन्दर ॥३८॥

इन अन्दर नूर हवेलियां, नूर मोहोल फिरते लग तिन ।
साम सामी मोहोल नूर के, दो दो चौक आगूं नूर इन ॥३९॥

इन अन्दर हवेलियां नूर की, नूर हवेलियों दोए हार ।
नूर चौक बीच तिन हारों, नूर चौक आगूं दोए द्वार ॥४०॥

ए जो फिरती नूर हवेलियां, नूर लग लग बराबर ।
आगूं नूर द्वार चबूतरे, नूर सिफत अति सुन्दर ॥४१॥

आए फिरते नूर द्वार लग, सोभा फिरती नूर लेत ।
नूर द्वार सामी नूर द्वारने, सामी हवेली नूर सोभा देत ॥४२॥

द्वार द्वार नूर मुकाबिल[1], नूर चबूतरों चबूतरे ।
नूर मोहोल मोहोल मुकाबिल, दोऊ तरफों सोभा नूर ए ॥४३॥

दोऊ मोहोलों बीच नूर गली, नूर चबूतरे चौक चार ।
नूर गली आई बीच में, दोऊ साम सामी नूर द्वार ॥४४॥

जेते फिरते नूर द्वार ने, आगूं नूर चबूतरे दोए दोए ।
नूर चौक चारों चबूतरों, दोऊ नूर द्वार बीच सोए ॥४५॥

नूर चौक ऐसे ही गिरदवाए, नूर फिरते आए सब में, ।
बीच फिरती आई नूर गली, नूर गली सोभा पौरी ए ॥४६॥

एक पौरी चौरे नूर से, आइए और चौरे नूर किनार ।
दोऊ चौरे नूर गली पर, नूर बनी पौरी चार ॥४७॥

१. सामने ।

चार थंभ नूर हर चौरे, चार पौरी आगूं नूर द्वार ।
नूर पौरी[1] चार हर चौरे[2], ए नूर सोभा ना किन सुमार ॥४८॥

हर दोऊ द्वार आगूं नूर चौक, नूर चौकों चार चबूतर ।
हर चौकों नूर पौरी चौबीस, यों चौक बने नूर भर ॥४९॥

दो हार नूर थंभन की, नूर गली चली गिरदवाए ।
बीच नूर गली कई पौरियां, ए नूर सोभा क्यों कही जाए ॥५०॥

आड़ी आवत नूर गलियां, नूर चौक होत तिन से ।
नूर गली दोए दाएँ बाएँ, गली चली नूर हवेलियों में ॥५१॥

इन विध नूर गलियां, बीच नूर हवेलियों निकसत ।
ए नूर गली दोऊ तरफों, आखिर नूर मोहोलों पोहोंचत ॥५२॥

याही विध नूर गिरदवाए, चौक हुए नूर गलियों के ।
नूर तवाफ[3] दे देखिए, यों चौक गली सोभे नूर ए ॥५३॥

यों नूर फिरती चार मोहोलातें, ए नूर खूबी अतंत ।
ए हुकम कहावे नूर गंज के, ए नूर ना सुमार सिफत ॥५४॥

इन अंदर मोहोल कई नूर के, कई जुदी जुदी नूर जिनस ।
कई मोहोल मंदिर नूर गलियां, नूर देखों सोई सरस ॥५५॥

इन अंदर नूर कई जुगतें, नूर कई मंदिर मोहोलात ।
नूर जिनसें कई जुगतें, नूर अर्स गंज कह्यो न जात ॥५६॥

फेर देख नूर भोम दस का, होए हिरदे नूर जहूर ।
महामत मोमिन नूर का, नूर देखे अर्स सहूर ॥५७॥

॥प्रकरण॥३६॥चौपाई॥२०४४॥

भोम पेहेली नूर खिलवत

कहे आमर[4] नूर अर्स का, ए जो अर्स नूरजमाल ।
दिल अर्स मोमिन नूर का, नूर सुनके बदले हाल ॥१॥

१. मेहेराव । २. चौक चौपड़ । ३. परिकरमा । ४. हुकम ।

ताथें नेक कहूं नूर बीच का, नूर भोम तले खिलवत ।
हक हादी नूर मोमिन, ए नूर गंज हक वाहेदत ।।२।।

बीच नूर चबूतरा, चौसठ थंभ नूर के ।
फिरता कठेड़ा नूर का, नूर क्यों कहूं नूर बीच ए ।।३।।

ऊपर चंद्रवा नूर का, और नूरै की झालर ।
ऊपर तले सब नूर में, सब नूरै रूह नजर ।।४।।

बिछौने सब नूर में, और तकिए नूर गिरदवाए ।
रूहें बैठी नूर भर पूर, रह्या नूरै नूर समाए ।।५।।

चरनी सीढ़ियां नूर की, चढ़ उतर नूर झलकार ।
थंभ पड़सालें नूर की, नूरै के द्वार चार ।।६।।

नूरै के मोहोल मंदिर, नूर दिवालें द्वार ।
नूरै नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बड़ो विस्तार ।।७।।

मुखारबिंद सब नूर के, नूर वस्तर भूखन ।
सब सिनगार साजे नूर के, नूर कहां लग कहूं रोसन ।।८।।

इत बीच सिंघासन नूर का, नूरै का बिछौना ।
बैठे जुगल किसोर नूर में, कछू नाहीं न नूर बिना ।।९।।

कई बिध नूर सिंघासन, कई बिध बिछौने नूर ।
कछू नजरों न आवे नूर बिना, सब दिसा नूर जहूर ॥१०॥

वस्तर भूखन नूर के, सब नूरै का सिनगार ।
नूरै सागर होए रह्या, नूर वार न पार सुमार ॥११॥

नूर बोलत जुबां नूर की, नूर सुनत नूर श्रवन ।
खुसबोए नूर नासिका, नूर नैन देखे ना नूर बिन ॥१२॥

अंग सारे नूर के, नूरै का नूर आहार ।
कौल फैल हाल नूर का, हाल-चाल नूर वेहेवार ॥१३॥

नूर मंदिर पेहेली भोम के, नूर रसोई चौक ठौर ।
ए अंदर नूर द्वार के, कछू नूर बिना नहीं और ॥१४॥

भोम दूजी नूर भुलवनी

दूजी भोम जो नूर की, नूर चेहेबच्चे जल ।
नूर मन्दिर भुलवन के, नूर एक सौ दस मोहोल ॥१५॥

एक सौ दस हारें नूर की, नूर ऐसे ही गिरदवाए ।
ए बारे हजार मोहोल नूर के, बीच नूर चौक रह्या भराए ॥१६॥

नूर भोम दूजी से तले लग, भरया चेहेबच्चा नूर जल ।
लंबा चौड़ा नूर एक हांस लग, ऊपर आया नूर बन चल ॥१७॥

नूर तीनों तरफों झलूबिया, तरफ चौथी नूर झरोखे ।
नूर बन छाया जल पर, खासी बैठक नूर ठौर ए ॥१८॥

नूर झरोखे बैठक, नूर जल नूर ऊपर ।
नूर झरोखे तीसों मिले, जितथें आवें नूर नजर ॥१९॥

नूर मंदिर तीस इन तले, ताके चार चार नूर द्वार ।
आगूं तीन गली नूर थंभ की, ए जो मंदिर नूर किनार ॥२०॥

नूर मंदिर एक सौ दस, एक अन्दर की नूर हार ।
चारों तरफों मंदिर नूर के, ए नूर गिनती बारें हजार ॥२१॥

नूर मंदिर भोम गिनती का, बीच नूर चबूतरा ।
हक हादी रूहें नूर बैठकें, अति रंग रस नूर भरया ॥२२॥

द्वार जो नूर मंदिर, नूरै के चार चार ।
लगते द्वार जो नूर के, माहें भुलवनी नूर अपार ॥२३॥

हक हादी रूहें नूर भरे, खेलें नूर में कर सिनगार ।
नूर बिना कछू न पाइए, नूर झलकारों झलकार ॥२४॥

वस्तर भूखन नूर के, नूर सरूप साज समार ।
नूर ले खेलें नूर में, नूर झलकारों झलकार ॥२५॥
नूर सरूप देखत दिवालों, नूर सरूप देखत द्वार ।
नूर सरूप देखत नूर बीच, नूर झलकारों झलकार ॥२६॥
नूर सरूप पैठें एक द्वार से, जाए निकसें नूर किनार ।
यों नूर सरूप दौड़ें सब में, नूर झलकारों झलकार ॥२७॥
नूर सरूप सब नूर के, ले नूर दौड़ें बारे हजार ।
बारे हजार नूर मन्दिरों, नूर झलकारों झलकार ॥२८॥
एक नूर मन्दिर से आवत, नूर निकसे परली हार ।
नूर हँसें खेलें गिरें नूर में, नूर झलकारों झलकार ॥२९॥
नूर सरूप पैठें एक तरफ से, नूर निकसे जाए नूर पार ।
नूर फिरत बीच गिरदवाए, नूर झलकारों झलकार ॥३०॥
हार किनार पार नूर में, नूर सागर हुआ द्वार द्वार ।
नूर वार पार या बीच में, नूर झलकारों झलकार ॥३१॥
इन बिध नूर केता कहूं, नूर समें खेलन ।
नूर बिना कछू न देखिए, नूर के नूर रोसन ॥३२॥
दूजी भोम सब नूर में, रूहें फेर देखें नूर ले ।
नूर प्याले हक हादी नूर, रूहों भर भर नूर के दे ॥३३॥

भोम तीसरी नूर झरोखा

तीसरी भोम का नूर जो, नूर इन मुख कह्या न जाए ।
बड़ी बैठक नूर इन भोमें, इत नूर आप दीदारें आए ॥३४॥
नूर द्वार नूर ऊपर, नूर बड़ी बैठक नूर भर ।
कर दीदार नूर-जमाल[1] का, फेर आए नूर-कादर[2] ॥३५॥
ए बैठक कही जो नूर की, सो नूरै नूर गिरदवाए ।
बीच चौक गली सब नूर की, रहे द्वार मन्दिर नूर भराए ॥३६॥

१. श्री राज जी । २. अक्षर ब्रह्म ।

मुख नूर चौक भर पूरन, नूर दस मन्दिर पड़साल ।
इन भोम नूर रूहें देखहीं, तो नूर बदले नूर हाल ॥३७॥

अन्दर नूर पड़साल के, नूर द्वार मन्दिर दोए दोए ।
नूर सीढ़ियां आगूं इन माहें, दोऊ तरफ मेहेराव नूर सोए ॥३८॥

नूर मेहेराव आगूं सीढ़ी नहीं, आगूं बढ़ती नूर पड़साल ।
नूर मेहेराव इन ऊपर, नूर पड़साल माहें चाल ॥३९॥

और नूर मन्दिर छे द्वार ने, नूर दोऊ तरफों के ।
ए दसे भोम नूर मन्दिर, नूर पड़साल बराबर ए ॥४०॥

नूर द्वार दोऊ ओर बराबर, नूर द्वार सीढ़ी दोए तरफ ।
नूर छे चौक आगूं देहरी[1], रूहें नूर देखें तो बोलें ना हरफ ॥४१॥

ए छे नूर द्वार दाएँ बाएँ, नूर दोऊ तरफों तीन तीन ।
ए रूहें देखें नूर विवेक, जो देवे हुकम नूर आकीन ॥४२॥

ए बड़ी बैठक नूर पड़सालें, नूर भोम आरोगें बेर दोए ।
पूर नूर होए रूहें अर्स की, ए नूर बेवरा देखें सोए ॥४३॥

नूर सेज्या-पौढ़ें इतहीं, नूर मोहोल बड़ा ए ।
इत नूर मेला पोहोर तीन लग, नूर हुकम कहावे जे ॥४४॥

भोम चौथी नूर निरत की

भोम चौथी जो नूर की, नूर में नूर विस्तार ।
ए नूर कह्या तो जावहीं, जो होवे नूर सुमार ॥४५॥

नूर गंज मध्य मन्दिर, नूर चौक ठौर निरत ।
नूर रात नूर बरसत, रूहें नूर देखें नूर की सूरत ॥४६॥

नूर तखत नूर चौक में, बैठें नूर में जुगल किसोर ।
नूर सरूप निरत नवरंग, बीच नूर बैठें भर जोर ॥४७॥

१. चौखट ।

नूर खेलत नूर देखत, और नूरै नूर बरसत ।
रूहें आइयां जो इत नूर से, सो नूर नूरै को दरसत ॥४८॥

नूर मन्दिर द्वार नूर, नूर जिमी चौक थंभ दिवाल ।
नूर भरपूर नूर में, सब नूरै की हाल चाल ॥४९॥

नूर नूर को देखहीं, नूर की नूर सुनत ।
नूर नाचत नूर बाजत, नूर कहां लों को गिनत ॥५०॥

नूर बाजे नूर बजावहीं, नूर गावें नूर सरूप ।
नूर देखें फेर फेर नूर को, नूर नाचत नूर अनूप ॥५१॥

ऊपर तले बीच नूर में, जानूं भर्‌या सागर नूर ।
दसों दिसा देखों नूर नजरों, जानों तीखे आवें नूर के पूर ॥५२॥

जानों नूर देखों मासूक का, तो जुगल नूर सब पर ।
सब नूर देखों जित तितहीं, भरी नूरै नूर नजर ॥५३॥

हक नूर बिना जरा नहीं, नूर सब में रह्‌या भराए ।
नूर बिना खाली कहूं नहीं, रह्‌या नूरै नूर जमाए ॥५४॥

फेर नूर दिवालों देखिए, नूर बन झरोखे जित ।
नूर खिड़की नूर द्वारने, देख्या नूर बिना न कित ॥५५॥

रूहें दौड़ें नूर हाल में, नूर देखें सब ठौर ।
फेर आइए नूर द्वार ने, नाहीं नूर बिना कछू और ॥५६॥

भोम पांचमी नूर सेज्या

नूर देखो भोम पांचमी, जित मन्दिर नूर सेज ।
बारे हजार मोहोल नूर के, सब नूरै रेजा रेज ॥५७॥

नूर पौरी नूर द्वारने, नूर गलियां थंभ अर्स ।
नूर प्याले रूहें पीवहीं, ले भर भर नूर सरस ॥५८॥

ए नूर के चौक चबूतरे, माहें नूर के मोहोल मन्दिर ।
नूर सरूप लेहेरें लेवहीं, माहें नूर बाहेर अन्दर ॥५९॥

चौकी संदूकें नूर की, सब सुन्दर नूर सामान ।
नूर भरे मोहोल सोभित, ए क्यों होए नूर बयान ॥६०॥

सब जोगवाई नूर की, नूरै का सब साज ।
कहां लग कहूं मैं नूर की, सब नूरै रह्या बिराज ॥६१॥

सब मोहोल एक नंग नूर के, ज्यों नूर सागर माहें तरंग ।
यों कई बिध मोहोल नूर के, माहें कई नूर रस रंग ॥६२॥

ए नूर भोम फेर देखिए, नूर झरोखे नूर बन ।
नूर द्वार आए फेर, नूर नूरै नूर रोसन ॥६३॥

कई चौक देखिए नूर के, कई सीढ़ियां नूर दिवाल ।
कई थंभ गलियां नूर की, कई मोहोल नूर पड़साल ॥६४॥

नूर ऊपर तले माहें नूर, कई बेल फूल नूर नकस ।
घोड़े कमाड़ी नूर चौकठ, भर्‌या सागर नूर रस ॥६५॥

झरोखे नूर गिरदवाए, नूर सोभा कही न जाए ।
कछू नूर स्वाद तो आवहीं, जो नूर लीजे दिल ल्याए ॥६६॥

नूर मन्दिर फेर देखिए, फेर देखिए नूर झरोखे ।
तब नूर बन आवे नजरों, नूर पसु पंखी खेलें जे ॥६७॥

भोम छठी नूर सुखपाल

भोम छठी नूर झिलमिले, सब ठौरों नूर नाम ।
नूर रूहें खेले नूर में, सब रह्या नूर में जाम ॥६८॥

नूर चौक मन्दिर फिरते, नूर चबूतरों बैठक ।
नूर बरसत कई हवेलियां, नूर बैठक रूहें हादी हक ॥६९॥

नूर बैठत नूर उठत, नूर चलते नूर निदान ।
सब ठौरों नूर पूरन, जानों सब गंज नूर समान ॥७०॥

एक मध्य चौक भर्‌या नूर का, और फिरते मोहोल नूर तिन ।
तिन गिरद नूर हवेलियां, ए नूर गिनती करूं जुबां किन ॥७१॥

तिन परे नूर नूर के परे, नूर मोहोल की गिनती नाहें ।
नूर जिनसें कई जुदी जुदी, ए नूर आवे न हिसाब माहें ॥७२॥

जो मोहोल नूर किनार के, नूर लेखे[1] में आवे क्यों कर ।
ए नूर रूहें देखत, फेर फेर नूर नजर ॥७३॥

मोहोल झरोखे जो नूर के, आवत नूर बयार[2] ।
इन जुबां इन नूर को, ए नूर आवे न माहें सुमार ॥७४॥

कई मोहोलों में नूर थंभ, तिन कई थंभों नूर नकस ।
नेक नकस नूर देखिए, जानों ए नूर सबथें सरस ॥७५॥

कई बन बेली नूर की, कई नूर पसु जानवर ।
कई नूर कटाव तिन बीच में, नूर कहां लग कहूं क्यों कर ॥७६॥

कह्यो न जाए नूर पात को, कई नूर कांगरी पात माहें ।
कई नूर बेली एक पात में, सो कब लग कहूं नूर कांहें ॥७७॥

एक पात कांगरी नूर देखिए, नूर देखत उमर जाए ।
तो सोभा देखत नूर कांगरी, रूहें नूर क्योंए न तृपिताए ॥७८॥

छठी भोम नूर पूरन, जित रेहेत नूर सुखपाल ।
बड़ी बड़ी नूर हवेलियां, बड़े बड़े नूर पड़साल ॥७९॥

फेर देखिए नूर द्वार को, मोहोल नूर चौक झलकत ।
रूहें खेलें खुसाली नूर में, नूर नूरै में मलपत[3] ॥८०॥

१. हिसाब । २. वायु । ३. मुस्कुराहट ।

भोम सातमी नूर हिंडोले

नूर भरी भोम सातमी, नूर मोहोल बिना हिसाब ।
बिना हिसाब चौक नूर के, सो भर्‌यो सागर नूर आब ॥८१॥

हिसाब नहीं नूर दिवालों, हिसाब नहीं नूर गलियां ।
हिसाब नहीं बीच नूर थंभ, नूर आवे नूर बीच से चलियां ॥८२॥

नूर भरे ताक खिड़कियां, बारसाखें[1] नूर द्वार ।
कई मोहोल मन्दिर नूर के, ना गिनती नूर सुमार ॥८३॥

कई छूटक मन्दिर नूर के, कई मन्दिरों नूर मोहोलात ।
कई फिरते मन्दिर नूर के, बीच बैठक नूर बिसात ॥८४॥

नूर झरोखे किनार के, तिन में नूर मन्दिर ।
नूर थंभ दो दो आगूं इन, हर मन्दिर नूर अन्दर ॥८५॥

इन अन्दर मोहोल कई नूर के, कई जुदी जुदी नूर जिनस ।
कई मोहोल मन्दिर नूर गलियां, नूर देखूं सोई सरस ॥८६॥

ए जो मन्दिर नूर किनार के, दो हारें नूर मन्दिर ।
साम सामी नूर हिंडोले, नूर झलकत है अन्दर ॥८७॥

यों फिरते नूर हिंडोले, नूरै के गिरदवाए ।
नूर सरूप रूहें बैठत, झूलें नूर जुगल दिल ल्याए ॥८८॥

दो दो सरूप नूर झूलत, नूर साम सामी मुकाबिल ।
कड़े झनझनें नूर के, नूर खेलें झूलें हिल मिल ॥८९॥

कई नूर चौक चबूतरे, कई नूर के थंभ दिवाल ।
कई बार साखे ताके नूर के, क्यों कहूं नूर बिना मिसाल ॥९०॥

कई रंगों नूर झलकत, कई नूर रंग तले ऊपर ।
सब तरफों नूर जगमगे, ए नूर जोत कहूं क्यों कर ॥९१॥

१. चौखट ।

कई गलियां नूर चरनियां, कई नूर मेहेराव झरोखे ।
कई नूर अर्स की रोसनी, क्यों सिफत कहूं नूर ए ॥९२॥

भोम आठमी नूर हिंडोले

नूर गंज भोम आठमी, नूर चार तरफ झूलन ।
चारों चौक नूर हिंडोले, रूहें झूलत नूर रोसन ॥९३॥

गिरदवाए नूर हिंडोले, झलकत नूर जंजीर ।
क्यों कहूं झूले नूर के, रूहें हँसत मुख नूर नीर ॥९४॥

रूहें झूलें जब नूर में, तब अर्स नूर झलकार ।
बोलें नूर पड़छंदे नूर मन्दिरों, होत हाँसी नूर अपार ॥९५॥

यों गिरदवाए नूर सबन में, झनकत नूर झलकत ।
ए जो हिंडोले नूर के, कही जाए ना नूर सिफत ॥९६॥

हक हादी रूहें नूर में, झूलत नूर खुसाल ।
इन समें नूर बिलंद का, किन विध कहूं नूर हाल ॥९७॥

ए झूले भोम नंग नूर के, गंज जाहेर नूर अम्बार ।
जब नूर मोहोलों इत खेलत, अर्स नूर न आवत पार ॥९८॥

इन अंदर नूर कई बिध का, नूर बैठक मोहोल खेलन ।
जुदी जुदी विध नूर जुगतें, हक सुख देत नूर रूहन ॥९९॥

कई विध नूर चबूतरे, कई विध नूर मंदिर ।
कई विध रोसन नूर किनारे, कई बिध नूर अंदर ॥१००॥

बारे हजार रूहें नूर हिंडोले, हर नूर रूहें हक संग ।
इन समें नूर क्यों कहूं, नूर होत उछरंग ॥१०१॥

चार चार हिंडोले नूर के, अर्स मावे ना नूर झनकार ।
लेत लेहेरें नूर सागर, जानों नूर गंज भरे अंबार ॥१०२॥

नूर हिंडोलों, जंजीरों, कड़े खटकत नूर जुगत ।
ए घाए[1] पड़घाए[2] नूर पड़छंदे[3], नूर हर ठौरों बोलें बिगत ॥१०३॥

भोम नौमी नूर गोख[4] बैठक

भोम नौमी नूर नूरै, गिरदवाए नूर तखत ।
ए नूर विचारे ना उड़े, हाए हाए नूर जीवरा बड़ा सखत ॥१०४॥

इन नूर भोम की सिफत, कही जाए ना नूर मुख इन ।
ए नूर मंदिर नूर झरोखे, कई नूर फिरते सिंघासन ॥१०५॥

ए मंदिर झरोखे नूर एकै, फिरती नूर पड़साल ।
तो कहूं नूर रोसन की, जो होवे नूर इन मिसाल ॥१०६॥

ए मंदिर झरोखे नूर के, भोम नूर बराबर ।
नूर द्वार ज्यों और मंदिर, नूर रूहें आवें सीढ़ियों उतर ॥१०७॥

हर हांसों हक नूर बैठक, हर हांसों नूर तखत ।
हक हादी रूहें नूर मिलावा, हर हांसों नूर न्यामत ॥१०८॥

नूर थंभ गली देखिए, जानों नूर मंदिर द्वार ।
माहें मंदिर झरोखे नूर एकै, हर बैठक नूर विस्तार ॥१०९॥

नूर दूर से देखत, सो नूर बैठक इत ।
दो सै हांसें नूर की, हक मेले नूर बरकत ॥११०॥

सोभा हक नूर सिंघासन, नूर इन भोम बिराजत ।
ए बात केहेते हक नूर की, हाए हाए नूर जीवरा न उड़त ॥१११॥

और नूर मोहोल कई अन्दर, सो नूर बड़ो विस्तार ।
कई नूर भांत बिध जुगतें, नूर अलेखे बेसुमार ॥११२॥

नवे भोम नूर बरनन, नूर क्यों कहूं ख्वाब जुबांए ।
ए नूर हक हुकम कहे, ना तो नूर आवे ना सब्द माहें ॥११३॥

१. एक ओर । २. ध्वनि । ३. प्रतिध्वनि । ४. झरोखा ।

अर्स नूर जरा जुबां कहे, अर्स मता नूर अपार ।
सो नूर बरनन क्यों होवहीं, जिन नूर को न कहूं सुमार ॥११४॥

दसमी भोम नूर चांदनी

नूर रूहें चढ़ चांदनी, नूर नवों भोमों पर ।
खूबी नूर भोम दसमी, ए नूर सोभा ना काहूं सरभर ॥११५॥

ऊपर जल नूर चेहेबच्चे, नूर कारंजे[1] उछलत ।
ऊपर नूर इत बगीचे, नूर क्यों कहूं हक न्यामत ॥११६॥

इत कई नूर सिंघासन, बीच नूर तखत बैठक ।
हादी रूहें नूर मिलाए के, बैठत नूर ले हक ॥११७॥

नूर भर्‌या आकास में, सामी आया आकास नूर ले ।
नूर भर्‌या दरिया नूर का, माहें कई उठें तरंग नूर के ॥११८॥

दो सै एक गुरजें नूर की, नूर गुमटियां बारे हजार ।
बीच नूर रूहें बैठक, थंभ नूर सोभा अपार ॥११९॥

दसमी भोमे नूर चांदनी, नूर गुमटियां देखत ।
ए मोहोल गिरदवाए नूर के, नूर में हक हादी रूहें खेलत ॥१२०॥

नूर गुरज हांसों पर, बीच कांगरी नूर किनार ।
बीच बीच बैरखें[2] नूर की, मौजें आवत नूर झलकार ॥१२१॥

इत सोभित नूर कांगरी, और सोभित नूर कलस ।
ए कलस कांगरी नूर के, सोभित नूर पर सरस ॥१२२॥

दसों दिसा नूर नूर में, नूरै नूर खेलत ।
नूर उठें बैठें नूर में, नूर नूरै में चलत ॥१२३॥

नूर भर्‌या आसमान में, नूर चांदनी नूर चौक ।
नूर बिना कछू न देखिए, नूरै में नूर सौक ॥१२४॥

१. फुवारे । २. ध्वजा, पताका ।

नूर देख्या भोम दस में, नूर सबहीं के सिरे ।
नूर ले नौमी भोम में, नूर नूरै में उतरे ॥१२५॥

ए नूर सुख बैठक देख के, नूर भोम आठमी आए ।
लिए नूर सुख हिंडोले, ए चारों नूर सुखदाए ॥१२६॥

आए नूर भोम सुख सातमी, नूर सुख हिंडोले दोए दोए ।
ए सुख नूर रूहें बिना, नूर सुख लेवे जो होवे कोए ॥१२७॥

नूर लिया छठी भोम में, भोम अर्स विवेक विचार ।
मोहोल लिया सुख नूर का, नूर नूर में नूर न सुमार ॥१२८॥

नूर भरी भोम पांचमी, जित नूर सेज्या सुख ।
रात सुख नूर अति बड़ा, हक सुख नूर सनमुख ॥१२९॥

भोम चौथी नूर में, नट निरत नूर खेलत ।
नूर बिना कछू न पाइए, सुख सनमुख नूर अतन्त ॥१३०॥

तीसरी भोम जो नूर की, जित है नूर पड़साल ।
हक हादी रूहें नूर बैठक, आवें दीदारें नूर-जलाल[1] ॥१३१॥

दूसरी भोम का नूर जो, चेहेबच्चा नूर झीलन ।
हक हादी सुख नूर भुलवनी, देत नूर सुख अपने तन ॥१३२॥

नूर द्वार सुख पेहेली भोमें, सुख अव्वल भोम नूर पूर ।
फिरता सुख सब नूर में, मध्य नूर नूर नूर ॥१३३॥

इत नूर खिलवत हक की, रूहें नूर मोमिनों न्यामत[2] ।
नूर मेला मूल मोमिनों, बीच हक का नूर तखत ॥१३४॥

हक हादी रूहें नूर ठौर, हक जात नूर वाहेदत ।
कहे महामत नूर बिलन्द[3] में, ए अपनी नूर कयामत ॥१३५॥

॥ नूर की परिकरमा तमाम ॥

॥प्रकरण॥३७॥चौपाई॥२१७९॥

१. अक्षर ब्रह्म । २. बहुमूल्य पदार्थ । ३. महान ।

धाम बरनन

बरनन धाम को, कहूं साथ सुनो चित्त दे ।
कई हुए ब्रह्मांड कई होएसी, कोई कहे न हम बिन ए ।।१।।
क्यों कहूं धाम अन्दर की, विस्तार बड़ो अतन्त ।
क्यों कहे जुबां झूठी देह की, अखण्ड पार के पार जो सत ।।२।।
तो भी नेक केहेना साथ कारने, माफक जुबां इन बुध ।
अद्वैत अखण्ड पार की, करूं साथ के हिरदे सुध ।।३।।
थंभ दिवालें गलियां, कई सीढ़ियां पड़साल ।
मन्दिर कमाड़ी द्वार ने, माहें कई नंग रंग रसाल ।।४।।
गली माहें कई गलियां, कई चौक चबूतरे अनेक ।
खिड़की माहें कई खिड़कियां, जित देखूं जानों सोई विसेक ।।५।।
दूजी भोम का चेहेबच्चा, जल पर झरोखे तिन ।
सोभा लेत अति सुन्दर, तीनों तरफों बन ।।६।।
तीनों तरफ बन डारियां, करत छाया जल पर ।
एक तरफ के झरोखे, जल छाए लिया अन्दर ।।७।।
तीनों तरफों कठेड़ा, नेक नेक पड़साल ।
चारों तरफ उतरती सीढ़ियां, पानी बीच विसाल ।।८।।
आगूं मन्दिर चबूतरा, थंभ सोभित तरफ चार ।
इत आवत रूहें नहाए के, बैठ करत सिनगार ।।९।।
इत दाहिनी तरफ जो मन्दिर, गिनती बारे हजार ।
इन मन्दिरों खेलें भुलवनी, हर मन्दिर द्वार चार ॥१०॥
कर सिनगार इत खेलत, ए जो मन्दिर हैं भुलवन ।
दौंड़ें खेलें हँसें रूहें, देख अपनी आभा[१] रोसन ॥११॥

१. प्रतिबिम्ब ।

कई फिरते चबूतरे, फिरते मन्दिर गिरदवाए ।
थंभ तिन आगूं फिरते, बीच फिरता चौक सोभाए ॥१२॥

कई चौखूंने चबूतरे, चारों तरफों मंदिर ।
थंभ फिरते चारों तरफों, ए सोभा अति सुन्दर ॥१३॥

कई चौखूंने चबूतरे, मन्दिर आठों हार ।
चली चार गलियां चौक थें, हार आठ थंभ गली बार ॥१४॥

कही एक ठौर के चौक की, जित बैठत धनी आए ।
चौक चबूतरे इन भोम के, कई जुगत क्यों कही जाए ॥१५॥

ऊपर थंभ झलकत, और तले भोम झलकार ।
सामग्री सब झलकत, और थंभ दिवालों द्वार ॥१६॥

क्यों कहूं हिसाब मन्दिरन को, दिवालां चौक थंभ कई लाख ।
अमोल अतोल अन गिनती, कछू कह्यो न जाए मुख भाख ॥१७॥

ए सुख इन मन्दिरन में, वाही सरूपों सुध ।
विध विध विलास इन धाम को, कहा कहे जुबां इन बुध ॥१८॥

जो वस्त जिन मिसल की, सोई बनी ठौर तित ।
सेज्या संदूक सिंघासन, कहूं केती कई जुगत ॥१९॥

कई जुगतें कई जिनसें, कई सामग्री सनंध ।
क्यों करूं बरनन धाम को, ए झूठी देह मत मंद ॥२०॥

कई बेली एक दिवाल में, कई बेल फूल तिन पात ।
तिन पात पात कई नंग हैं, एक नंग रंग कह्यो न जात ॥२१॥

पात पात को देख के, हँसत बेलि संग बेलि ।
सैंन करें पंखी पंखी सों, जानों दौड़ करसी अब केलि[1] ॥२२॥

फूल फूल कई पांखड़ी, तिन हर पांखड़ी कई नंग ।
नंग देख नंग हँसत, फूल फूल के संग ॥२३॥

१. क्रीड़ा ।

अपनी अपनी जात ले, ठाड़े हैं सकल ।
करने खुसाल धनीय को, करत हैं अति बल ॥२४॥

त्यों त्यों जोत बढ़त है, ज्यों ज्यों देखें नूरजमाल ।
नाचत हरखत हँसत, देख धनी को खुसाल ॥२५॥

करें खुसाल धनीय को, होंए आप खुसाली हाल ।
ए सोभा इन मुख क्यों कहूं, ए देखे सब मछराल[1] ॥२६॥

कई पसु पंखी जवेरन के, कई रंग बिरंग कई विध ।
जानों के खेल पर सब खड़े, ए क्यों कही जाए सनंध ॥२७॥

होत कछू पड़ताल पांउं से, बोलें सब स्वर अपनी बान ।
पसु पंखी देखे बोलते, सब आप अपनी तान ॥२८॥

कछू थोड़े ही पड़ताल से, धाम सब्द धमकार[2] ।
बोले पसु पंखी बानी नई नई, जुबां जुदी जुदी अनेक अपार ॥२९॥

जिमी चेतन बन चेतन, पसु पंखी सुध बुध ।
थिर चर सबे चेतन, याकी सोभा है कई विध ॥३०॥

तो कह्या थावर चेतन, अपनी अपनी मिसल ।
ए अन्तर आंखें खुले पाइए, परआतम सुख नेहेचल ॥३१॥

एक थंभ कई चित्रामन, हर चित्रामन कई नकस ।
नकस नकस कई पांखड़ी, जो देखों सोई सरस ॥३२॥

तिन हर पांखड़ी कई कांगरी, हर कांगरी कई नंग ।
एक नंग को बरनन ना होवहीं, तो सारे थंभ को क्यों कहूं रंग ॥३३॥

मोर मैना मुरग बांदर, कई जुदी जुदी सब जुबान ।
नेक सब्द उठे भोम का, बोलें आप अपनी बान ॥३४॥

एक सब्द के उठते, उठें सब्द अनेक ।
पसु पंखी जो चित्रामन के, कई विध बोलें विवेक ॥३५॥

१. मस्ती से भरे । २. गूंज, ध्वनि ।

कई जुदे जुदे रंगों पुतली, कई बने चित्रामन ।
कई विध खेल जो खेलहीं, मुख मीठी बान रोसन ॥३६॥

सो भी खेल बोल स्वर उठत, रंग रस होत रमन[१] ।
सोभा सुन्दरता इनकी, केहे न सकों मुख इन ॥३७॥

चित्रामन सारे चेतन, सब लिए खड़े गुमान ।
जोत लरत है जोत सों, कोई सके न काहू भान[२] ॥३८॥

करे जोत लड़ाई जोत सों, तेज तेज के संग ।
किरन किरन सों लड़त हैं, आठों जाम अभंग ॥३९॥

नूर नूर जहूर जहूर सों, करत सफ[३] जंग[४] दोए ।
एक दूजे के सनमुख, ठेल न सके कोए ॥४०॥

जंग करत अंगो अंगें, साथ नंग के नंग ।
रंग सों रंग लरत हैं, तरंग संग तरंग ॥४१॥

एक रंग को नंग कहावहीं, तामें कई रंग उठत ।
ताको एक रंग कह्यो न जावहीं, आगे कहा कहूं विध इत ॥४२॥

जित देखूं तित सूरमें[५], एक दूजे थें अधिक देखाए ।
कई ऊपर तले कई बीच में, याको जुध न समाए ॥४३॥

तेज जोत उद्दोत आकास लों, किरना न काहूं अटकाए ।
देख देख जंग निरने कियो, कोई पीछा ना पाउं फिराए ॥४४॥

चलते हलते धाम में, सबे होत चलवन ।
कई कोट जुबां इत क्या कहे, कई बिध थंभ दिवालन ॥४५॥

एक सरूप के नख की, सोभा बरनी न जाए ।
देख देख के देखिए, तो नेत्र क्योंए न तृपिताए ॥४६॥

तो सारे सरूप की क्यों कहूं, और क्यों कहूं इनों के खेलि ।
बन बेली पसु पंखी, माहें करें रंग रस केलि ॥४७॥

१. खेल । २. खंडित । ३. परोज की कतार । ४. लड़ाई । ५. बहादुर ।

जात न कही एक सरूप की, अति सोभा सुन्दर मुख ।
तेज जोत रंग क्यों कहूं, ए तो साख्यातों के सुख ॥४८॥

सोभा जाए ना कही बिरिख पात की, तो क्यों कहूं फल फूल बास ।
क्यों होए बरनन सारे बिरिख को, ए तो सुख साथ को उलास ॥४९॥

जो एता भी कह्या न जावहीं, तो क्यों कहूं थंभ चित्राम ।
परआतम हमारियां, ए तिनके सुख आराम ॥५०॥

एक थंभ की एह विध कही, ऐसे कई थंभ दिवालें द्वार ।
फेर देखों एक भोम को, तो अतंत बड़ो विस्तार ॥५१॥

पार नहीं थंभन को, नहीं दिवालों पार ।
ना कछू पार सीढ़ियन को, ना पार कमाड़ी द्वार ॥५२॥

नवों भोमका तुम साथ जी, कर देखो आतम विचार ।
क्यों आवे जुबां इन अकलें, ए जो अपारे अपार ॥५३॥

चित्रामन एक थंभ की, क्यों कहूं केते रंग ।
बन बेली फूल पात की, जुदी जुदी जिनसों नंग ॥५४॥

पसु पंखी हाथ पांउं नैन के, कई विध केस परन ।
कई खेल पुतलियन के, कई वस्तर कई भूखन ॥५५॥

कई बिध सोभा भोम की, कई रंग नंग नकस अनेक ।
कई ठौर अलेखे जड़ित में, जो देखो सोई नेक से नेक ॥५६॥

ए कही न जाए एक जिनस, सो जिनस अखंड अलेखे ।
सत सरूप सुख लेत हैं, देख देख के देखें ॥५७॥

अति सोभा सुन्दर ऊपर की, कई नकस बेल फूल ।
कई जिनसें कहा कहूं, होत परआतम सनकूल ॥५८॥

कई जिनस जुगत थंभन में, कई जिनस जुगत दिवाल ।
कई जिनसें द्वार क्यों कहूं, ए जो जिनस जुगत पड़साल ॥५९॥

कई जिनसें जुगत सीढ़ियां, कई जुगतें जिनसें मंदिर ।
कई जिनस झरोखे जालियां, कई जिनस जुगत अंदर ॥६०॥

सामग्री कई सनंधें, कई जिनसें सेज्या सिंघासन ।
कई सनंधें चौकी संदूकें, कई बिध भरे भूखन ॥६१॥

कई जिनसें वस्तर भरे, कई विध विध के विवेक ।
वस्तर भूखन किन विध कहूं, कई विध जुगत अनेक ॥६२॥

कई विध प्याले सीसे सीकियां, कई डब्बे तबके दिवाल ।
सोभित सुन्दर मंदिरन में, कई लटकत रंग रसाल ॥६३॥

कई जुगतें हिंडोलों मंदिरों, कई जंजीरां झलकत ।
माहें डब्बे पुतलियां झनझनें, कई विध झूलत बाजत ॥६४॥

कई मिलावे साथ के, सुन्दर झरोखे झांकत ।
सोभा देखत बन की, मोहोल इन समें सोभित ॥६५॥

दौड़त खेलत सखियां, एक साम सामी आवत ।
हाँसी रमूज एक दूजी सों, अरस-परस ल्यावत ॥६६॥

नवों भोम के मन्दिरों, माहें सखियां खेल करत ।
चारों जाम हाँस विलास में, रंग रस दिन भरत[1] ॥६७॥

झरोखे नवों भोम के, मिल मिल बैठत जाए ।
निस दिन हेत प्रीत चित्त सों, मन वांछित[2] सुख पाए ॥६८॥

विध विध के सुख बन में, सैयां खेलें झरोखों माहें ।
वाउ ठंढा प्रेमल गरमीय में, सुख लेवें सीतल छांहें ॥६९॥

सुख बरसाती और बिध, बीज चमके घटा चौफेर ।
सेहेरां गरजत बूंदें बरसत, घटा टोप लिया बन घेर ॥७०॥

ज्यों ज्यों अम्बर गाजत, मोर कोयल करें टहुंकार ।
भमरा तिमरा गान गूंजत, स्वर मीठे पंखी मलार ॥७१॥

१. व्यतीत करना । २. मन चाहा ।

सीत कालें सुख धूप को, पहेले पोहोंचत झरोखों आए ।
इत आराम घड़ी दोए तीन का, प्रभात समें सुखदाए ॥७२॥
दौड़े कूदें सखियां ठेकत, कई अंग अटपटी चाल ।
मटके चटके पांउं लटके, अंग मरोरत मुख मछराल[1] ॥७३॥
जुदे जुदे जुत्थों प्रेम रस, अलबेलियां[2] अति अंग ।
हँसत आवत धनी के चरनों, रस भरियां अंग उमंग ॥७४॥
कई हाथों फिरावत छड़ियां, कई हाथों फिरावत फूल ।
कई आवत गेंद उछालती, कई आवत हैं इन सूल[3] ॥७५॥
सब आए आए चरनों लगें, एक एक आगूं दूजी के ।
ए बड़ा सुखकारी समया, सोभा लेत इत ए ॥७६॥
बात बड़ी देख देखिए, प्रेम प्रघल भर पूर ।
प्रेम अंग कह्यो न जावहीं, सूरों में सूर सूर ॥७७॥
रंग नंग नकस न जाए कहे, तो क्यों कहे जाएं थंभ दिवालें द्वार ।
तो समूह की जुबां क्या कहे, जाको वार न पार सुमार ॥७८॥
रंग नंग नकस अन-गिनती, कह्यो न जाए सुमार ।
ज्यों बट बीज माहें खड़ा, कर देखो आतम विचार ॥७९॥
कई दिवालें कई चौक थम्भ, कई मन्दिर कमाड़ी द्वार ।
एक भोम को बरनन ना केहे सकों, एतो नवों भोम विस्तार ॥८०॥
दसमी भोमें चांदनी, ऊपर कांगरी जोत ।
तेज पुन्ज इन नूर को, जानों आकास सब उद्दोत ॥८१॥
हेम जवेर रंग रेसम, केहे केहे कहूं मुख जेता ।
नूर तेज जोत झलकत, अकल आवे जुबां में एता ॥८२॥
महामत कहे सुनो साथजी, बुध जुबां करे बरनन ।
ले सको सो लीजियो, ए नेक[4] कह्या तुम कारन ॥८३॥

॥प्रकरण॥३८॥चौपाई॥२२६२॥

१. मस्ती से भरे । २. अनूठी, मनमौजी । ३. तरह । ४. थोडा सा (तनिक) ।

प्रेम को अंग बरनन

प्रेम देखाऊं तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन ।
प्रेम धनी को अंग है, कहूं पाइए ना या बिन ।।१।।
प्रेम नाम दुनियां मिने, ब्रह्मसृष्टि ल्याई इत ।
ए प्रेम इनों जाहेर किया, ना तो प्रेम दुनी में कित ।।२।।
ए दुनियां पूजे त्रिगुन को, करके परमेस्वर ।
सास्त्र अर्थ ऐसा लेत है, कहे कोई नहीं इन ऊपर ।।३।।
सुक व्यास कहें भागवत में, प्रेम ना त्रिगुन पास ।
प्रेम बसत ब्रह्मसृष्ट में, जो खेले सरूप बृज रास ।।४।।
तो नवधा से न्यारा कह्या, चौदे भवन में नाहें ।
सो प्रेम कहां से पाइए, जो रेहेत गोपिका माहें ।।५।।
नाम खुदाए का कुरान में, लिख्या है आसिक ।
पढ़े इस्क औरों में तो कहे, जो हुए नहीं बेसक ।।६।।
आसिक नाम अल्लाह का, तो लिख्या इप्तदाए[1] ।
इस्क न पाइए और कहूं, बिना एक खुदाए ।।७।।
पढ़े तब पावें इस्क को, जब खुलें माएने मगज ।
इस्क बिना करें बंदगी, कहें हम टालत हैं करज ।।८।।
मगज न पाया माएना, दुनी पढ़े कतेब वेद ।
प्रेम दुनी में तो कहें, जो पावत नाहीं भेद ।।९।।
प्रेम ब्रह्म दोऊ एक हैं, सो दोऊ दुनी में नाहें ।
पढ़े दोऊ बतावें दुनी में, जो समझत ना सास्त्रों माहें ।।१०।।
तो न्यारा कह्या सब्द थें, प्रेम ना मिनें त्रिगुन ।
कई कोट ब्रह्मांडों न पाइए, प्रेम धाम धनी बिन ।।११।।
प्रेम सब्दातीत तो कह्या, जो हुआ ब्रह्म के घर ।
सो तो निराकार के पार के पार, सो इत दुनी पावे क्यों कर ।।१२।।

१. शुरु से ।

प्रेम बताऊं ब्रह्मसृष्ट का, पेहेले देखो धाम बरनन ।
पीछे प्रेम बताऊं ब्रह्मसृष्ट का, जो धाम धनी के तन ॥१३॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जिन सिर नूरजमाल ।
कई कोट ब्रह्मांडों न पाइए, इनका औरे हाल ॥१४॥

क्यों न होए प्रेम इनको, धनी अछरातीत जिन सिर ।
ब्रह्मसृष्ट बिना न पाइए, देखो कोट ब्रह्मांडों फेर फेर ॥१५॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी राखत रूख ।
धाम मंदिर मोहोलन में, धनी देत सेज्या पर सुख ॥१६॥

क्यों न होए प्रेम इनको, सोहागनियां बड़ भाग ।
क्यों कहूं इन रूहन की, जाए देत धनी सोहाग ॥१७॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके घर एह धाम ।
स्याम स्यामाजी साथ में, जाको इत विश्राम ॥१८॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इनहीं में रहे हिल मिल ।
सकल अंग सुख देत हैं, धाम धनी के दिल ॥१९॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो रहे इन मोहोल मंदिर ।
दिल दे विहार[1] करत हैं, ले दिल धनी अंदर ॥२०॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए वस्तर भूखन ।
साजत हैं सबों अंगों, धाम धनी कारन ॥२१॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए सोभा सिनगार ।
सबों अंगों सुख धनी को, निस दिन लेत समार ॥२२॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन धनी सों विहार ।
निस दिन केलि करत हैं, सब अंगों सुखकार ॥२३॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखत धाम धनी ।
रात दिन सुख लेत हैं, सब अंगों आप अपनी ॥२४॥

१. क्रीड़ा ।

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी की सेंना[1] लेत ।
नैनों नैन मिलाए के, सामी इसारत देत ॥२५॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी अरधंग ।
अह निस अनुभव होत है, इन पिउ की सेज सुरंग ॥२६॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मेले में बैठत ।
अरस-परस रंग अहनिस, नए नए खेल करत ॥२७॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको ए धनी सरूप ।
रात दिन सुख लेत हैं, जाके सब अंग अनूप ॥२८॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको निस दिन एही रमन[2] ।
सब अंगों आनंद होत है, मिलावे धनी इन ॥२९॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन धनी की गलतान ।
निस दिन धनी खेलावत, विध विध की देत मान ॥३०॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत धनी को सुख ।
आठों जाम सेवा मिने, सदा खड़े सनमुख ॥३१॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन साथ में रस रंग ।
निस दिन विहार करत हैं, धाम धनी के संग ॥३२॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो रहें इन साथ के माहें ।
निस दिन आराम पिउ का, न्यारे निमख न होवें क्याहें ॥३३॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को लेवें माहें नैन ।
न्यारे निमख न करें, निस-दिन एही सुख चैन ॥३४॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखें धनी के अंग ।
पलक ना पीछी फेरत, आठों-जाम उछरंग ॥३५॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको याही साथ में खेल ।
मन्दिर या मोहोलन में, पिउ सो रमन रंग रेल ॥३६॥

१. सैंन, इसारत । २. खेलना ।

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको मिलाप इन घर ।
विहार करत अंग उछरंग, धनी सों बिध बिध कर ॥३७॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो बैठत पिउ के पास ।
निस-दिन रामत रमूज में, होत न वृथा एक स्वांस ॥३८॥

क्यों न होए प्रेम इनको, हाँस विनोद में दिन जाए ।
सेज्या संग इन धनी के, रस रंग रैन विहाए[1] ॥३९॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी के तन ।
इन मोहोलों में इन पिउ संग, हींचत हिंडोलन ॥४०॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो झांकत झरोखे इन ।
झूलत हैं इन पिउ संग, बीच इन हिंडोलन ॥४१॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो करें इन हिंडोलों विहार ।
झूलत बोलें झनझनें, यों मन्दिर होत झनकार ॥४२॥

क्यों न होए प्रेम इनको, ऊपर झूलत हैं यों कर ।
अरस-परस इन धनी सों, दोऊ बैठत बांध नजर ॥४३॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें इन हिंडोलों सुख ।
झलकत भूखन झूलते, बैठत हैं सनमुख ॥४४॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें झूलतें रंग रस ।
उछरंग अंग न मावहीं, अंक भर अरस-परस[2] ॥४५॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो झूलते होंए मगन ।
फेर फेर प्रेम पूरन, उमंग अंग सबन ॥४६॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों झूलत ।
इन समें सोभा मन्दिरों, कड़े हिंडोले खटकत ॥४७॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पौढ़त इन पिउ संग ।
अरस-परस दोऊ हींचत, अंग लगाए के अंग ॥४८॥

१. व्यतीत करना । २. आपस में ।

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत इतकी खुसबोए ।
सिनगार कर सेज्या पर, केलि करें संग दोए ॥४९॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोलों में नेहेचल ।
दोऊ हिंडोलों हींचत, करें दिल चाह्या मिल ॥५०॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेवें इन हिंडोलों सुख ।
अखंड इन मोहोलन में, लेवें सदा सनमुख ॥५१॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों पौंढ़त ।
मन चाहे इन मन्दिरों, अखण्ड केलि करत ॥५२॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो खेलत इन मोहोलन ।
हिंडोलों या पलंगे, सुख लेवें चाहे मन ॥५३॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोलों या पलंग ।
चित्त चाहे सुख अनुभवी, इन धनी के संग ॥५४॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको देखें धनी नजर ।
प्रेम प्याले पीवत, धनी देत भर भर ॥५५॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो सेज समारें हेत कर ।
चारों जाम इन धनी को, राखत हैं उर पर ॥५६॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो फूलन सेज बिछाए ।
चारों पोहोर रंग रेहेस में, केलै[1] करते जाए ॥५७॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी निरखत नैंन भर ।
आठों जाम अंग उनके, उलसत उमंग कर ॥५८॥

क्यों न होए प्रेम इनको, रंग रची सेज समार ।
चारों जाम पिउ सब अंगों, देत सुख अपार ॥५९॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउसों पीवें प्रेम रस ।
कर कर साज सबों अंगों, पिउसों अरस-परस ॥६०॥

१. क्रीड़ाये ।

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ के सुने बंके बैन ।
याके आठों जाम हिरदे मिने, चुभ रेहेत पिउ के चैन ॥६१॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी भूखन ।
याही नजर अंगना अंग में, चुभ रेहेत निस-दिन ॥६२॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको पिउ एती दिलासा देत ।
सामियों तो अंग इस्क के, कोट गुना कर लेत ॥६३॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी वस्तर ।
सो रूहें अपना अंग हैं, लेत खैंच नजर ॥६४॥

क्यों न होए प्रेम इनको, धनी बरसत निज नजर ।
ताके अंग रोम रोम में, प्रेम आवत भर भर ॥६५॥

क्यों न होए प्रेम इनको, धनीसों नैनों नैन मिलाए ।
ताको इन सरूप बिना, पल पट दई न जाए ॥६६॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके धनी निरखें नैन ।
आठों-जाम याके अंग में, चुभ रेहेत बंके बैन ॥६७॥

क्यों न हो प्रेम इनको, जो पिउ की निरखें बंकी पाग ।
निस-दिन नजर न छूटहीं, पिउसों करें रंग राग ॥६८॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत पिया को दिल ।
ए निस-दिन पिएं सुधा[1] रस, पिउसों प्याले मिल ॥६९॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए मोहोल ए सेज ।
लें सोहाग सबों अंगों, जिन पर धनी को हेज ॥७०॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को रिझावत ।
आठों पोहोर सबों अंगों, अरस-परस रंग रमत ॥७१॥

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी सों अन्तर नाहें ।
अरस-परस एक भए, झीलें प्रेम रस माहें ॥७२॥

१. अमृत प्यार ।

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ सों करें एकांत ।
आठों-जाम इन सरूप सों, सुख लेत भांत भांत ॥७३॥
क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ को निरखें नीके कर ।
आठों-पोहोर इनों पर, धनी की अमी[1] नजर ॥७४॥
क्यों न होए प्रेम इनको, जिनका एह चलन ।
आठों पोहोर इन धनी सों, रस भर रंग रमन ॥७५॥
क्यों न होए प्रेम इनको, प्रेम वासा[2] इन ठौर ।
एही कहे प्रेम के पात्र, प्रेम नहीं कहूं और ॥७६॥
क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें बिलास ।
निस-दिन इन धनीय सों, करत विनोद कई हाँस ॥७७॥
क्यों न होए प्रेम इनको, जो बसत धाम बन माहें ।
जो बन हमेसा कायम, एक पात गिरे कबूं नाहें ॥७८॥
क्यों न होए प्रेम इनको, जो सदा खेलत इन बन ।
एक पात की जोत देखिए, करें जिमी अम्बर रोसन ॥७९॥
क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें विलास ।
सोहागिन अंग धनी धाम की, प्रेम पुंज नूर प्रकास ॥८०॥
क्यों न होए प्रेम इनको, करें धाम धनी सो केलि ।
इन बन इन धनीय सों, रमन अह निस खेलि ॥८१॥
क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन बन में है हाँस ।
कमी कबूं न होवहीं, सदा फल फूल बास ॥८२॥
क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन को रस लेत ।
फल फूल सुगंध बेलियां, वाउ सीतल सुख देत ॥८३॥
महामत कहे मेहेबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए ।
नैना खोल के अंक भर, लीजे कंठ लगाए ॥८४॥

॥प्रकरण॥३९॥चौपाई॥२३४६॥

१. अमृत । २. बसना ।

धाम की रामतें-चरचरी

एक चित्रामन दिवालें बन, चढ़िए तिन पर धाए ।
एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए ।।१।।

एक गली घर में दे परिकरमें, उमंग अंग न माए ।
एक का कपड़ा धाए के पकड़्या, खैंच चली चित्त चाहे ।।२।।

छज्जे चढ़ एक दूजी देवें ठेक, यों कई ठेकतियां जाए ।
एक दोऊ पांऊं ठेकें खेल विसेकें, जानों लगत न छज्जे पाए ।।३।।

सखियां चढ़ धाए छज्जे न माए, खेल रच्यो इन दाए ।
एक दिवालों घोड़े तित चढ़ दौड़े, नए नए खेल उपाए ।।४।।

एक दूजी को ठेलें तीसरी हड़सेले[१], यों पड़ियां तीनों गिर ।
कई और आए गिरें उपरा ऊपरें, उठ न सकें क्यों ए कर ।।५।।

एक दौड़ियां जाए दई हाँसिएं गिराए, हुओ ढेर उपरा ऊपर ।
एक खेलते हारी जाए पड़ी न्यारी, खेल होत इन पर ।।६।।

होवे इन बिध हाँसी अंग उलासी, सूल[२] आवत पेट भर ।
एक सूल भर पेटे इन विध लेटें, ए देखो खेल खबर ।।७।।

एक लेटतियां जाए सूल उभराए, उठावें कर पकर ।
आई तिन हाँसी मावे न स्वांसी, गिरी पकरे कर ।।८।।

देखो इनको सूल मुख सनकूल, दरद न माए अन्दर ।
सखियां बेसुमार हुओ अंबार[३], ए देखो नीके नजर ।।९।।

स्याम स्यामाजी आए देख्यो खेल बनाए, सब उठियां हँसकर ।
खेलें महामति देखलावें इंद्रावती, खोले पट अन्तर ॥१०॥

।।प्रकरण।।४०।।चौपाई।।२३५६।।

१. धकेलें । २. दरद । ३. ढेर ।

रामत दूसरी

एक अंग अभिलाखी देवें साखी, कहे वचन विसाल ।
एक कर कंठ बांहें मिल लपटाए, खेलतियां करें ख्याल ।।१।।
एक आवें लटकतियां बोलें मीठी बतियां, चलें चमकती चाल ।
एक आवें मलपतियां रंग रस रतियां, रहें आठों जाम खुसाल ।।२।।
एक आवें नाचतियां भमरी फिरतियां, दे भूखन पांउ पड़ताल ।
एक गावती आवें तान मिलावें, कोई स्वर पूरें तिन नाल[१] ।।३।।
एक माहें धाम निरखें चित्राम, देखतियां थंभ दिवाल ।
एक निरखें नंग नूर भूखन जहूर, माहें देखें अपने मिसाल ।।४।।
एक मिल कर दौड़े बांध के होड़ें, लंबी जहां पड़साल ।
एक पिउ को देखें सुख विसेखे, कहें आनन्द कमाल[२] ।।५।।
एक बैन रसालें गावें गुन लालें, सोभित मद मछराल ।
एक बाजे बजावें मिलकर गावें, सुन्दर कंठ रसाल[३] ।।६।।
एक पूरे स्वर सारे हुंनर, छेक बालें तिन ताल ।
एक पिउसों हँस हँस बातें करे रंग रस, करें होए निहाल[४] ।।७।।
एक देखें धनी रूप अदभुत सरूप, कहा कहूं नूर जमाल ।
एक पिउ सों बातें करें अख्यातें, रंग रस भरियां रसाल ।।८।।
एक रस रीत उपजावें प्रीत, देखावें अपनों हाल ।
एक अंग अलबेली आवे अकेली, हाथ में फूल गुलाल ।।९।।
एक अटपटी हालें तिरछी चालें, हाथ में छड़ियां लाल ।
एक नेत्र अनियाले प्रेम रसालें, रंग लिए नूरजमाल ।।१०।।
कहे महामती इन रंग रती, उठी सो हँस दे ताल ।।११।।

।।प्रकरण।।४१।।चौपाई।।२३६७।।

१. साथ में । २. प्रशंसनीय । ३. सुरीला । ४. तृप्त ।

बड़ी रामत

कहियत नेहेचल नाम, सदा सुखदाई धाम ।
साथजी स्यामाजी स्याम, विलसत आठों जाम री ।।१।।

नित इत विश्राम, पूरन हैं प्रेम काम ।
हिरदे न रहे हाम, इस्क आराम री ।।२।।

आराम तो इन विध लेवें, सबे भरी अहंकार ।
पूरन हित पिउसों चित्त, जिनको नहीं सुमार ।।३।।

एक जुत्थ सहेली, मिल बैठी भेली, सुख केहेत न आवे पार ।
कोई छज्जे ऊपर, सखियां मिलकर, कहें पिउ को विहार ।।४।।

एक लम्बे हिंडोलें, मिल बैठी झूलें, लेवें सीतल सुगंध बयार ।
एक झरोखे माहें, मिल बैठत जाहें, करें रती रेहेस विचार ।।५।।

एक पिउ मद मतियां, आवें ठेकतियां, कंठ खलकते हार ।
एक जुदी जुदी आवें, स्वांत देखलावें, करें नूर रोसन झलकार ।।६।।

एक बांहें सों बांहें, संग मिलाए, आवें लिए अहंकार ।
एक दूजी के साथें, लिए कण्ठ बाथें, भूखन उद्दोतकार ।।७।।

एक कण्ठ हाथ छोड़ें, आगूं दौड़ें, कहे आइयो मुझ लार ।
एक चढ़ें गोखें, झांकत झरोखें, देखत बन विस्तार ।।८।।

एक बैठत पलंगें, पिउजीके संगें, खेलत प्रेम खुमार[1] ।
आप अपने अंगें, करत हैं जंगें, कोई न देवे हार ।।९।।

एक अंग अनंगे, भांत पतंगे, क्यों कहूं ए मनुहार[2] ।
अति उछरंगें, होत न भंगें, सत सुख संग भरतार ॥१०॥

एक प्रेम तरंगें, मद मछरंगें, बांहोंड़ी कण्ठ आधार ।
एक अंग मकरंदें[3], काढ़त निकंदें[4], आवत नाहीं पार ॥११॥

१. नशा । २. प्रसन्नता । ३. पुष्प, पराग । ४. मसलकर ।

बादलियां आवें, रंग देखलावें, करें मोर कोयल टहुंकार ।
अति घन गाजें, अम्बर बिराजे, सोभित रूत मलार ॥१२॥

रूचिया मेह, बढ़त सनेह, ए समया अति सार ।
एक केहे सखी सीढ़ियां, दौड़ के चढ़ियां, होत सकल भोम झनकार ॥१३॥

एक साम सामी आवें, अंग न मिलावें, कहा कहूं चंचल आकार ।
एक दौड़ के धसियां, बन में निकसियां, मस्त हुइयां देख मलार ॥१४॥

एक आइयां सघन में, धाए चढ़ी बन में, खेल करें अपार ।
एक झूलें डारी चढ़ के, और पकड़ के, क्यों कहूं खेल सुमार ॥१५॥

एक भांत बांदर की, ठेक दे चढ़ती, करती रंग रसाल ।
एक दौड़ें पातों पर, करें चढ़ उतर, खेलत माहें खुसाल ॥१६॥

एक ठेक देती, बनसें रेती, कहा कहूं इनको हाल ।
एक आइयां दौड़ रेती, इतथें जेती, खेलें एक दूजीके नाल ॥१७॥

एक जाए गड़ें रेती, निकस न सकती, देवें एक दूजी को ताल ।
एक काढ़े घसीटें, और ऊपर लेटें, कहा कहूं इनकी चाल ॥१८॥

खेलते दिन जाए, हाँसी न समाए, प्रेम पिएं संग लाल ।
एक ठेक देतियां, रेती में गड़तियां, खेल होत कमाल ॥१९॥

केटलीक सखी संग, निकसी रमती रंग, रूप देखावें झुन्झार ।
एक दौड़ के जावें, हौज में झंपावें, एक ले दूजी लार ॥२०॥

एक आवें दौड़ कर, गिरें उपरा ऊपर, किन विध कहूं ए रंग ।
एक लरें पानी सें, जुत्थ जुत्थ सें, देखो इनको जंग ॥२१॥

पानी ऐसा उड़ावें, जानो अम्बर बरसावें, खेल करें न बीच में भंग ।
क्योंए न थकें, ऐसे अंग अर्स के, आगूं सोहें पुतलियां नंग ॥२२॥

एक खेल छोड़ें, दूजे पर दौड़ें, अंग न माए उछरंग ।
एक खिन में अर्स परे, खेल जाए करें, इन विध अंग उमंग ॥२३॥

परिकरमा कर आवें, पल में फिर आवें, आए कदमों लगें सब संग ।
कहे महामती, सब रंग रती, क्यों कहूं प्रेम तरंग ॥२४॥

॥प्रकरण॥४२॥चौपाई॥२३९१॥

सागरों रांग मोहोलात मानिक पहाड़

नूर कुन्जी अगिन मुसाफकी, कले[1] कुलफ खोलत हकीकत ।
सुध पाइए सागर नूर पार की, हक मारफत रूहों खिलवत ॥१॥

नूर दखिन सुख सागर, नूर वाहेदत मुख नीर ।
पाइए मारफत मुसाफ की, अर्स अंग असल सरीर ॥२॥

नूर नैरित अंग उजले, सोभा सुन्दर सागर खीर ।
हक इलम देखावे उरफान[2], पिएं इस्क प्याले सूरधीर ॥३॥

नूर दधि सागर सीतल, नूर पछिम अंग पूरन ।
ए सुख अतंत हमेसा, नूर वाहेदत पूर रोसन ॥४॥

नूर वाइव[3] बल पूरन, नूर जहूर समन[4] सागर ।
परख पूरन सुख सुन्दर, सब बिध नूर नजर ॥५॥

नूर मीठा मधु[5] उत्तर, सुख अतंत अंगों अंग ।
ए विध जाने रस रसना, उपजत इनके संग ॥६॥

नूर अमृत सागर ईसान, सुख सीतल सुन्दर ।
नूर नजर भर देखिए, सुख सब बाहेर अन्दर ॥७॥

नूर पूर सुख सागर, अतंत पूरव सुखदाए ।
ए सबरस सब विध सब सुख, नूर सब अंगों उपजाए ॥८॥

ए तरफ आठों नूर सागर, अंग आवत नूर मुतलक ।
ए देखतहीं सुख सागर, ए सहूर इलम नूर हक ॥९॥

आठ तरफ जुदी जुदी जिमी, नूर एक से दूजी सरस ।
नूर बीच जिमी बीच सागर, जिमी सिफत न पार अरस ॥१०॥

१. हिकमत । २. पहेचान, ब्रह्मज्ञान । ३. वायव्य कोण (पश्चिम - उत्तर दिशा के बीच का कोना) । ४. धृतसागर (इस्क सागर) । ५. शहद (इलम का सागर) ।

पार जिमी ना पार सागर, नूर पाइए न काहू इंतहाए[1] ।
नूर जिमी देखो नूर सागर, नूर अपार अर्स गिरदवाए ॥११॥

नूर पसु पंखी नूर में, जिमी जुदी जुदी नई सिफत ।
नई कहूं हिसाब इतके, ए नूर खूबी हमेसा अतंत ॥१२॥

पार न जिमी अर्स को, पार ना पसु जानवर ।
पार नहीं बिरिख बाग को, पार ना पहाड़ सागर ॥१३॥

सब सुख एक एक चीज में, सबकी सिफत नहीं पार ।
अर्स पहाड़ या तिनका, सब देखेही पाइए बेसुमार ॥१४॥

ए पाल आड़े जिमी सागर, नूर लगी रांग आसमान ।
इंतहाए नहीं गिरद फिरवली, नूर सिफत कहा कहे जुबान ॥१५॥

नूर रांग तरफ जो देखिए, इंतहाए न कहूं आवत ।
पार आवे जिन चीज को, तिनकी होए सिफत ॥१६॥

इंतहाए नहीं जिन चीज को, ताकी सिफत न होए जुबांए ।
सहूर इत सो क्या करे, जो सिफत न सब्द माहें ॥१७॥

हक ल्याए हिसाब में, जो कहावे अर्स अपार ।
सो अर्स दिल मोमिन का, ए किन बिध कहूं सुमार ॥१८॥

ऐसे ही सागरों रांग के, बारे हजार द्वार ।
और खूबी खुसाली ज्यों खिड़कियां, कहूं गिनती न आवे पार ॥१९॥

यों अर्स जिमी अपार के, सोभित गिरदवाए द्वार ।
रूह के दिल से देख फेर, ज्यों तूं सुख पावे बेसुमार ॥२०॥

आठ तरफ नूर जिमी के, तरफ आठ नूर सागर ।
ए गिन देख द्वार दिल अर्स में, पार न आवे क्यों ए कर ॥२१॥

नूर पार जिमी और रांग की, जो फेर देख रूह दिल ।
कई पहाड़ मोहोल बाग नेहेरें, जिमी बराबर टेढ़ी न तिल ॥२२॥

१. अंत ।

ज्यों फिरती थाल अर्स उज्जल, यों ही साफ सिफत बराबर ।
अर्स जिमी कही नूर की, कहूं गढ़ा न ऊंची टेकर ॥२३॥

पार नहीं बीच थाल के, गिरदवाए ना चौड़ी तूल ।
मोहोल पहाड़ नेहेरें सरभर, मुख सिफत कहा कहे बोल ॥२४॥

तो नूर रांग पार की क्यों कहूं, जाको सुमार नहीं वार पार ।
वह मोमिन देखें दिल अर्स में, जो दिल अर्स परवरदिगार ॥२५॥

कई जातें नूर पंखियन की, कई जातें नूर जानवर ।
जैसा रंग नूर जिमी का, पसु पंखी रंग सरभर ॥२६॥

नए नए रंगों नूर बाग बन, इंतहाए नहीं बिरिख नूर ।
ना इंतहाए नूर पसु पंखी, क्यों कहूं इन अंग जहूर ॥२७॥

नूर जिमी या तूल चौड़ी, इंतहाए न तरफ आवत ।
कहूं जुबां अर्स गिनती, अंग अर्स के जानें सिफत ॥२८॥

एक जिमी सिफत जो देखिए, तो जाए निकस नूर उमर ।
अपार जिमी इंतहाए सिफत, ए आवत नहीं क्योंए कर ॥२९॥

नूर जिमी बराबर अर्स की, कहूं चढ़ती नहीं उतार ।
दूजी सोभा नूर रोसन, जिमी भरी अम्बर झलकार ॥३०॥

कई रंग जिमी केती कहूं, और कई रंग नूर दरखत ।
सोई जिमी रंग पसु पंखियों, कर तुहीं तुहीं जिकर करत ॥३१॥

ना गिनती नाम जो हक के, सो हर नामें करें जिकर ।
मुख चोंच सुन्दर सोहनें, बोलें बानी मीठी सकर[1] ॥३२॥

नूर वाउ चलत बहु विध की, सुगंध सोहत सीतल ।
सब चीजें खुसबोए नूर पूर, जिमी मोहोल बन जल ॥३३॥

फल फूल बन पसु पंखी बेहेकत[2], कोई चीज न बिना खुसबोए ।
सदा सुगन्ध सबे सुख दायक, याकी सिफत किन बिध होए ॥३४॥

१. मिश्री । २. सुगंधित ।

नूर चीज सब चेतन आसिक, बाए बादल बीज अम्बर ।
सब बिध स्वाद पूर पूरन, सुख जाए ना कह्यो क्योंए कर ॥३५॥

पार सोभा ना पार सागर, ना पार टापू ना इमारत ।
पार टापू ना मोहोल किनारें मोहोल, सोभा आसमान नूर झलकत ॥३६॥

अर्स सूर कई एक मोहोल में, तैसे मोहोल टापू अपार किनार ।
एक मोहोल अम्बर कई बीच में, जुबां क्यों कहे गिनती सुमार ॥३७॥

जो कोई होसी अंग अर्स की, और जागी होए हक इलम ।
तो कछू बोए आवे इन सहूर की, जो करे मदत हक हुकम ॥३८॥

पर जो स्वाद हक उरफान[1] में, सो केहे ना सके जुबां इन अंग ।
जो हक मेहेर कर देवहीं, तो प्याले पीजे हक हादी संग ॥३९॥

हक मेहेर बड़ी न्यामत, रूह जिन छोड़े एह उमेद ।
ए फल सब बंदगीय का, जो कहे मुतलक अर्स भेद ॥४०॥

जिन दिल हुआ अर्स हक का, सोई लीजो इन अर्स सहूर ।
कहे हक हुकम ए मोमिनों, नूर पर नूर सिर नूर ॥४१॥

इन नूर रांग की रोसनी, क्यों कहूं जुबां इन मुख ।
द्वार द्वारी कलस कंगूरे, ए लें हक हुकमें मोमिन सुख ॥४२॥

दोए दोए गुरज बीच द्वार के, दो दो छोटी द्वारी के ।
ए छोटे बड़े मेहेराब जो, सोभा क्यों कहूं सिफत ए ॥४३॥

सोभा देत देखाई आसमान में, ऊँची सीढ़ियों नहीं सुमार ।
चार चार आगूं द्वार चबूतरे, दो दो बन के रंग नहीं पार ॥४४॥

दोए मुनारों लगते, कई छातें चबूतरों पर ।
दोए बीच सीढ़ियां आगूं द्वार के, जुबां सिफत पोहोंचे क्यों कर ॥४५॥

बिरिख बाग आगूं सब चबूतरों, कई जुदे जुदे बागों रंग बन ।
आगूं देत खूबी इन द्वारने, बन आसमान कियो रोसन ॥४६॥

१. ब्रह्म ज्ञान ।

सब बागों सोभित रस्ते, कहूं घट बढ़ नाहीं हार ।
कई चौक मोहोल मन्दिरन के, कई गली चली बांध किनार ॥४७॥

लाल जिमी नूर लाल बन, सोभित पसु नूर लाल ।
लाल जानवर लाल पर, रंग फल फूल सब गुलाल ॥४८॥

नूर जरद जिमी जानवर, नूर पीले पसु जरद जोत ।
फल फूल पीले बिरिख बेलियां, नूर पीला आकास उद्दोत ॥४९॥

नीली जिमी नूर पाच की, नूर नीले पसु जानवर ।
नूर नीला आसमान जिमी, ए नूर खूबी कहूं क्यों कर ॥५०॥

सेत जिमी सेत पसु पंखी, नूर आकास उज्जल ।
उज्जल नंग नूर सबे, बिरिख बेल सेत फूल फल ॥५१॥

नूर स्याम जिमी आसमान लग, नूर स्याम पसु पंखी नूर ।
फल फूल स्याम नूर बिरिख बेली, नूर पसु पंखी सब जहूर ॥५२॥

नूर जिमी आसमानी आसमान नूर, रंग पसु पंखी नूर आसमान ।
फल फूल बिरिख बेली सोई रंग, नूर सोभा जंग सके न भान ॥५३॥

दस दस रंग बिरिख बेल में, फल फूल रंग दस दस ।
रंग दस दस जिमी आकासें, नूर पसु पंखी याही रंग रस ॥५४॥

कई रंगों जिमी कई आकासें, पसु पंखी बन कई रंग ।
सब चीजों सोभा सब आसमान, सोभा नूर सबों में जंग ॥५५॥

अगिन ईसान लाल नूर, पीत नीर रंग दखिन ।
नैरित खीर नीला रंग, दधि सेत पछिम रोसन ॥५६॥

घृत वाइव बल स्याम रंग, रंग आसमानी मधु उत्तर ।
दस रंग अमृत ईसान, रस पूरव रंग सरभर ॥५७॥

ए-साफ अगिन पूर उज्जल, दखिन नीर रंग लाल ।
नैरित खीर पीत रंग, दधि पछिम नीला कमाल ॥५८॥

रंग जिमी दिस सागर, एक एक दोए बीच जान ।
ले इस्क गिन अगिन से, ज्यों सब होए अर्स पेहेचान ॥५९॥

नूर नीर खीर दधि सागर, घृत मधु एक ठौर ।
रस सब रस सागर, बिना मोमिन न पावे कोई और ॥६०॥

दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक ।
यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक ॥६१॥

दरियाव जिमी परे रांग के, फिरते न आवे पार ।
देख जिमी या सागर, कहूं गिनती न पाइए सुमार ॥६२॥

और कही जो बिध रांग की, कलस कंगूरे बीच आसमान ।
द्वार द्वारी कही गिनती, ए क्यों होए सिफत बयान ॥६३॥

॥प्रकरण॥४३॥चौपाई॥२४५४॥

मोहोल मानिक पहाड़

साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार ।
सोभा सुन्दरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार ॥१॥

एक देख्या मोहोल मानिक का, ताए बड़े द्वार बारे हजार ।
हिसाब न छोटे द्वारों का, सोभा सिफत न आवे पार ॥२॥

ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूं नाहें ।
सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहें ॥३॥

कई नेहेरें कई चादरें, कई फल फूल बन सोभित ।
ऊपर झरोखे सब बिध तालों, कहूं गिनती न सोभा सिफत ॥४॥

मानिक मोहोल रतन मय, झलकत जोत आकास ।
नूर पूरन पूर भर्‌या, रूह खोल देख नैन प्रकास ॥५॥

मोहोल मध्य मानिक का, नूर पहाड़ मोहोल गिरदवाए ।
बड़े बड़े जोड़े छोटे छोटे, बराबर जुगत सोभाए ॥६॥

चारों तरफों मोहोल बीच ताल, चारों तरफों हिंडोले।
एक हिंडोले माहें झूलें, हक हादी रूहें भेले।।७।।

चारों तरफों ऐसे ही झूलें, हक हादी रूहें खेलत।
अर्स अजीम के बीच में, मोहोल अम्बर जोत धरत।।८।।

बड़े बड़े पहाड़ मोहोल फिरते, बड़े बड़े के संग।
छोटे छोटा जोत सों, करे नूर जोत सों जंग।।९।।

कई हजारों लाखों दिवालें, जंग करत आसमान।
कई सागर मोहोलों माहें, गिनती नाहीं मान ॥१०॥

ऊपर मोहोल तले मोहोल, बीच बीच मोहोल गिरदवाए।
इन बिध मोहोल भर्‌यो अम्बर, फेर बिध कही न जाए ॥११॥

पहाड़ थंभ जो पहाड़ थुनी, पहाड़ै मोहोल मंडान।
कई मोहोल मोहोलों मिले, कहूं जिमी न देखिए आसमान ॥१२॥

चौड़े देखें चारों तरफों, ऊंचे लग आसमान।
ऐसे और मोहोल तो कहूं, जो कोई होवे इन समान ॥१३॥

अन्दर बाहेर किनार सब, देख सब ठौरों खूबी देत।
ए सोभा सांच सोई देखेगा, जाको हक नजर में लेत ॥१४॥

पेहेली फिरती दिवाल फेर देखिए, तिन बीच मोहोल अनेक।
जो जो खूबी देखिए, जानों एही नेक सों नेक ॥१५॥

एक हवेली चौरस, दूजा मोहोल गिरदवाए।
ए खूबी मोमिन देखसी, नजरों आवसी ताए ॥१६॥

अर्स हौज दोऊ बीच में, मोहोल मानिक पुखराज।
जेता नजीक हौज के, तासों मोहोल मानिक रहे बिराज ॥१७॥

ए चारों हुए दोरी बन्ध, सामी अछर नूर सोभित ।
ए हक हुकम बोलावत, इत और न पोहोंचे सिफत ॥१८॥

ए कह्या कौल थोड़े मिने, रूहें समझेंगी बोहोतात ।
दिल मोमिन से ना निकसे, चुभ रेहेसी दिन रात ॥१९॥

कहे बारे हजार मोहोल फिरते, कही हुकमें तिनकी बात ।
तिन हर मोहोलों बीच बीच में, बारे बारे हजार मोहोलात ॥२०॥

अटक रहे थे इतहीं, बीच आवने मोमिनों दिल ।
इन अर्स रूहों वास्ते एता कह्या, विचार करें सब मिल ॥२१॥

जो मोमिन किए हकें बेसक, सो लेंगे दिल विचार ।
अर्स दिल एही मोमिनों, तो ल्याए बीच सुमार ॥२२॥

आगे आए मिली इत नदियां, चक्राव ज्यों पानी चलत ।
तिन पीछे नदियां मोहोल बन की, जाए सागरों बीच मिलत ॥२३॥

क्यों कर कहूं मैं पौरियां, और क्यों कर कहूं झरोखे ।
देख देख मैं देखिया, न आवे गिनती में ए ॥२४॥

मैं गिरद कही चौरस कही, पर कई हर भांत हवेली ।
जाके आवें ना मोहोल सुमार में, तो क्यों जाए गिनी पौरी ॥२५॥

जब हक याद जो आवहीं, तब रूह देख्या चाहे नजर ।
दिल अर्स मार्‌या इन घाव से, सो ए मुरदा सहे क्यों कर ॥२६॥

देखो महामत मोमिनों जागते, जो हक इलमें दिए जगाएँ ।
करे सो बातें हक अर्स की, तूं पी इस्क तिनों पिलाएँ ॥२७॥

॥प्रकरण॥॥४४॥चौपाई॥२४८१॥

प्रकरण तथा चौपाईयों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण ४२५, चौपाई १३०३७

॥परिकरमा सम्पूर्ण॥